।। श्री हरिः ।।

विनम्र निवेदन

यह सृष्टि ही ब्रह्म का स्वरुप है। सृष्टि के पूर्व प्रलय भी ब्रह्म का ही रुप है। ऐसे ब्रह्म को शिव नाम से सम्बोधित किया गया। सृष्टि के पूर्व सत् (कारण) था न असत् (कार्य), केवल निर्विकार रूप से अकेले शिव ही विद्यमान थे। ये शिव नित्य और अजन्मा हैं। शिव सर्वोपरि परात्पर तत्व है। जिनसे परे कुछ भी नहीं है। भूत भावन भगवान सदाशिव की महिमा का गान करना सभी के सामर्थ्य के बाहर है। हम जैसे तुच्छ मानव के लिए तो अणु अंश शक्ति नहीं हो सकती है। नेति–नेति वेदों के वचन हैं। भगवान शिव के सूर्य चन्द्र नेत्र हैं, स्वर्ग सिर है, आकाश नाभि है, दिशायें कान हैं। इनके समान न कोई दाता है, न तपस्वी है, न ज्ञानी है, न त्यागी है, न वक्ता है, न उपदेष्टा है और न कोई ऐश्वर्यशाली ही है। ये सदा सब वस्तुओं से परिपूर्ण हैं। नाम भी अनेक है। रूप भी अनेक है। आदि अन्त रहित होने से अनन्त ही रहे हैं और रहेंगे।

यद्यपि किसी की महिमा को जाने हुए बिना गुणानुवाद करना तो शास्त्रोक्त नहीं है फिर भी अपना जन्म जन्मान्तर का आत्माराध्य देव मानकर श्रद्धा विवश अन्तर मनोभावों को व्यक्त करने की जिज्ञासा बनी। मैं ग्रामर्षि शिवदास आत्रेय पिताजी का नाम श्री सोमन आत्रेय माताजी का नाम श्रीमती छोटका देवी निवास शिवनाथपुर ग्राम अतरसुमां कला जनपद सुलतानपुर का पुत्र हूं। पत्नी ज्ञानवती देवी के साथ समस्त वंश गण शिव भक्त आराधक होने के कारण अनधिकार चेष्टा को सफल बनाते हुए असमर्थता युक्त होने पर भी अपनी बल बुद्धि अनुसार गुणानुवाद किया। समस्त राष्ट्रीय विज्ञ, वेदज्ञ, तत्वज्ञ एवं सर्वज्ञ ज्ञानदाताओं के समक्ष प्रेषित करके इस आशा अभिलाषा में संग्रहीत होता हूं कि त्रुटियों को दूर कर पठन–पाठन–मनन की सुविधा पाकर आत्मिक बन्धु के समान आशीर्वचन प्रदान करेंगे। आपकी प्रसन्नता ही हमारी प्रसन्नता है। भूल अनबन के लिए क्षमा आशायें तरंगित हैं।

बिनवउं कुलसमेत इहि खानी। शिवम शिवा सगरउ जगमानी।।
भले न हम पर वचन हमारे। जाइ पहुंचि जग मन्दिर द्वारे।।
सुनिय श्रवन बनि जाहु सुमीता। जयति आत्म सुर जग प्रति हीता।।
भूल भले जावइ बनि हमसे। पर आशा न भूल बनु तुमसे।।
पुरवहु सकल मनोरथ मोरे। मानि ठाढ़ सन्मुख करजोरे।।
गृह गण पूत समेत सुसाजे। सब विधि पूरक काज समाजे।।
लिंग महिमा नहि जाइ बखानी। पूजि आज तक जग भल मानी।।

वन्दउँ शिवकुल शारदे, गुरु पद लेखनि पत्र।
रिद्धि सिद्धि बल बुद्धि प्रद, चाह मिलइ सर्वत्र।।

जन्म जन्म वर फलित बनु, संग दीर्घायु देह।
शिव चरनामृत रज कृपा, दास पाउ रख नेह।।

मैं जन गृही विषय मद लोभी। पतन पियार लगै मन को भी।।
अहउं योग तप संयम हीना। भाव विषम सद्ज्ञान विहीना।।
व्यंजन वरण अक्षरे आखर। राखेउं शब्दन अर्थ मिलाकर।।
नाहिय चतुर बिलून स्वभाऊ। कवि न संत हम सकल अभाऊ।।
भगत न बड़ वक्ता कविताई। मनसा गूंथि गूंथि प्रगटाई।।
खग प्रयास जेस सिन्धु सुखावन। ता समान हमरो गुण गावन।।
कपटी कुटिल मूढ़ मन ललचा। करन्ह शिवा शिव महिमा चरचा।।
रांखइ रक्षहिं शिशु जेस जननी। कथा कवच तेस बनु प्रभु अपनी।।
रह संसार मोरउ विपरीता। बूझि सकामी स्वारथ प्रीता।।
बिनु शिव दास उबारन होई। करहु कृपा सब अवगुण खोई।।
तन मन वचन स्वरुप तुम्हारा। बनि हर जीवन रहु संसारा।।
पुरवहु नाथ मनो अभिलाषा। भूलहु नाहिं तुम्हारिन आशा।।
कृपा रूप प्रभु कृपा अमापी। हेतु कृपा हम विनय प्रलापी।।
दैवी कृपा भाव उर उपजा। सुमिरउं साम्ब सदाशिव गिरिजा।।

शिव शक्ती बनु देव त्रय, लोक शक्ति अवतार।
पुनि शक्ती बल देवि सुर, रहत रांचि संसार।।
हस्ताभ्यां कलशद्वयामृतरसैराप्लावयन्तं शिरो,
द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाक्षवलये द्वाभ्यां बहन्तं परम्।
अंकन्यस्तकरद्वयामृतघटं कैलाशकान्तं शिवं,
स्वच्छाम्भोजगतं नवेन्दुमुकुटं देवं त्रिनेत्रं भजे।।

त्र्यम्बक देव अष्टभुज हैं उनके एक हाथ में अक्षमाला और दूसरे में मृग मुद्रा है। दो हाथों से दो कलशों में अमृत रस लेकर उससे अपने मस्तिष्क को आप्लावित कर रहे हैं और दो हाथों से उन्हीं कलशों को थामे हुए हैं। शेष दो हाथ उन्होंने अपने अंक पर रख छोड़े हैं और उनमें दो अमृतपूर्ण घट हैं। वे श्वेत पद्म पर विराजमान हैं, मुकुट पर बाल चन्द्र सुशोभित है। ललाट पर तीन नेत्र शोभायमान हैं। ऐसे देव कैलाशपति श्री शिव शंकर की मैं शरण ग्रहण करता हूं।

— ग्रामर्षि शिवदास आत्रेय

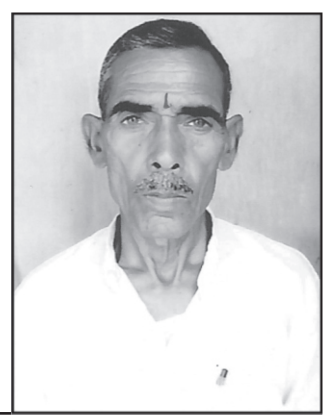

शिवम्

भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्।
ब्रह्म गायत्री मंत्र

पंच वक्त्राय विद्महे, महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।
शिव गायत्री मंत्र

गिरजायै विद्महे, शिव प्रियाये धीमहि तन्नो दुर्गा प्रचोदयात्।
दुर्गा गायत्री मंत्र

एक दंष्ट्राय विद्महे, वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो बु(ि प्रचोदयात्।
गणेश गायत्री मंत्र

भास्कराय विद्महे, दिवाकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।
सूर्य गायत्री मंत्र

नारायणाय विद्महे, विश्वदेवाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।
विष्णु गायत्री मंत्र

देवकी नन्दनाय विद्महे, वासुदेवाय धीमहि तन्नो ड्डष्णः प्रचोदयात्।
ड्डष्ण गायत्री मंत्र

देवकी वृषभानुजायै विद्महे, ड्डष्णप्रियायै धीमहि तन्नो राधा प्रचोदयात्।
राधा गायत्री मंत्र

महालक्ष्मयै विद्महे, विष्णुप्रियायै धीमहि तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।
लक्ष्मी गायत्री मंत्र

उग्र नृसिंहाय विद्महे, वज्रनखाय धीमहि तन्नो नृसिंह प्रचोदयात्।
नृसिंह गायत्री मंत्र

महाज्वालाय विद्महे, अग्निदेवाय धीमहि तन्नो ऽग्निः प्रचोदयात्।
अग्नि गायत्री मंत्र

सहस्त्रनेत्राय विद्महे, वज्रहस्ताय धीमहि तन्न इन्द्रः प्रचोदयात्।
इन्द्र गायत्री मंत्र

सरस्वतयै विद्महे, ब्रह्मपुत्र्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्।
सरस्वती गायत्री मंत्र

अंजनी सुताय विद्महे, वायु पुत्राय धीमहि तन्नो मारुतिः प्रचोदयात्।
हनुमान गायत्री मंत्र

पृथ्वी देव्यै विद्महे, सहस्त्रमूर्त्यै धीमहि तन्नः पृथ्वी प्रचोदयात्।
पृथ्वी गायत्री मंत्र

दाशरथये विद्महे, सीताबल्लभाय धीमहि तन्नो रामः प्रचोदयात्।
राम गायत्री मंत्र

जनक नन्दिन्यै विद्महे, भूमिजायै धीमहि तन्नः सीता प्रचोदयात्।
सीता गायत्री मंत्र

क्षीर पुत्राय विद्महे, अमृत तत्वाय धीमहि तन्नो चन्द्रः प्रचोदयात्।

चन्द्र गायत्री मंत्र

सूर्य पुत्राय विद्महे, महाकालाय धीमहि तन्नो यमः प्रचोदयात्।

यम गायत्री मंत्र

चतुर्मुखाय विद्महे, हंसारूढ़ाय धीमहि तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात्।

ब्रह्मा गायत्री मंत्र

बिम्वाय विद्महे, नील पुरुषाय धीमहि तन्नो वरुणः प्रचोदयात्।

वरुण गायत्री मंत्र

नारायणाय विद्महे, वासुदेवाय धीमहि तन्नो नारायणः प्रचोदयात्।

नारायण गायत्री मंत्र

वाणीश्वराय विद्महे, हयग्रीवाय धीमहि तन्नो हयग्रीवः प्रचोदयात्।

हयग्रीव गायत्री मंत्र

परम हंसाय विद्महे, महाहंसाय धीमहि तन्नो हंसः प्रचोदयात्।

हंस गायत्री मंत्र

तुलस्यै विद्महे, विष्णु प्रियायै धीमहि तन्नो वृन्दा प्रचोदयात्।

तुलसी गायत्री मंत्र

प्रखर प्रज्ञायै विद्महे, महाकालाय धीमहि तन्नः श्रीरामः प्रचोदयात्।

श्रीराम गायत्री मंत्र

सजल श्र(ायै विद्महे, महाशक्त्यै धीमहि तन्नो भगवतीं प्रचोदयात्।

भगवती गायत्री मंत्र

विद्यालयां विद्महे, विद्या श्र(ाय धीमहि तन्नो धीः प्रचोदयात्।

विद्या गायत्री मंत्र

विद्यामूर्तिं विद्महे, कायाकल्पाय धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात्।

गुरु गायत्री मंत्र

शक्ति स्वरूपाय विद्महे, काया कारणाय धीमहि तन्नो माता प्रचोदयात्।

माता गायत्री मंत्र

ब्रह्म स्वरूपाय विद्महे, शिवं धर्माय धीमहि तन्नः पिता प्रचोदयात्।

पिता गायत्री मंत्र

अत्रि वंशाय विद्महे, शिवं श्र(ाय धीमहि तन्न आत्रेयः प्रचोदयात्।

आत्रेय गायत्री मंत्र

ब्रह्म स्वरूपाय विद्महे, विश्व बीजाय धीमहि तन्नः कामः प्रचोदयात्।

काम शमन गायत्री मंत्र

महर्लोकाय विद्महे, कुरोषाय धीमहि तन्नः शान्तः प्रचोदयात्।

दोष शमन गायत्री मंत्र

अयमात्मब्रह्म विद्महे, शरीराय धीमहि तन्नः प्राणः प्रचोदयात्।

आत्म गायत्री मंत्र

नमः शिवाय

ब्रह्म अक्षर महिमा

अकारं चाप्युकारं च मकारं च प्रजापतिः।
वेदत्रयान्निरदुहद् भूर्भुवः स्वरितीति च।।

ब्रह्मा जी ने अकार, उकार, मकार अर्थात को और भूर्भुवः स्वः को तीन वेदों से निकाला था।

एकाक्षरं परं ब्रह्म प्राणायामा परन्तपाः।
सावित्र्यास्तु परन्नास्ति पावनं परमं स्मृतम्।।

एकाक्षर अर्थात् ओउम् पर ब्रह्म है। प्राणायाम परम तप है और गायत्री मंत्र से बढ़कर पवित्र बनाने वाला दूसरा कोई मंत्र नहीं है। अतः का अवलम्बन रखना चाहिए। अवलम्बन रखने से समस्त कर्म जप तप यज्ञादि कर्म सफल हो जाते है। को अविनाशी प्रजापति मानना चाहिए। शिवोपदेश है कि–

स्मरणात् कीर्तनाद्वापि श्रवणाच्च जपादपि।
ब्रह्म तत्प्राप्यते नित्यमोमित्येतत्परायणः।।

के स्मरण कीर्तन श्रवण और जप से मनुष्य परब्रह्म को प्राप्त हो जाता है। अतः में सदैव परायण रहना चाहिए। निरन्तर गिरती तेल धार के समान या घड़ी के शब्द के समान यथार्थता से सदा विचार धारा में जो निमग्न रहता है वही वेद वेत्ता है। को प्रणव भी कहते है। प्रणव का अर्थ है अभीष्ट देव या जिसके द्वारा अभीष्ट देवता की स्तुति की जाय। प्रणव सभी मंत्रों का मूल है, सेतु है, आधार है, अवलम्बन है। यह जीवन श्वांस स्वरुप भी है। मानव शरीर ब्रह्म पुत्र स्वरूप है इसका आकार मय है। शब्दनाद से अपने धुरी केन्द्र पर घूमता रहता है। इसका भ्रमण कम्पन गति और मोड़ के आधार पर शरीर रक्त में स्वास्तिक शक्ति उत्पन्न होती रहती है। यह स्वास्तिक ओंकार का रूप है। ओंकार को अपनाने से ब्रह्म तत्वों की मात्रा अपने भीतर बढ़ती है। फलस्वरुप गुण कर्म और स्वभाव में ब्राह्मी भावों की प्रधानता रहने लगती है। इस अभिवर्धन के फलस्वरुप मनुष्य स्वर्ग, मोक्ष, अमरता, सिद्धि, मंगल, निर्भयता, आत्म दर्शन, ब्रह्मनिर्वाण, मनोजय और शिवत्व की ओर बढ़ता रहता है। ओंकार शब्द सृष्टि के रचनाकाल में ब्रह्माजी के कंठ से स्वतः निकला था।

इसलिए लोकमंगल कारक कहा गया है। ब्रह्मा और विष्णु दोनों शिव अनुरुप हैं। विश्व जाति धर्म प्राणी का शुभम् प्रतीक है। प्रणव ब्रह्म से सम्बन्धित है। कहा गया है कि–

ओंकार बिन्दु संयुंक्त नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ओंकाराय नमो नमः।।

योगी पुरुष अनुस्सार युक्त ओंकार शब्द का सदा ध्यान करते हैं। अतः समस्त कामनाओं का पूरक जीवानन्द स्वरुप को मोक्षदायक मानकर सदैव प्रणाम करते हैं। ओंकार शब्दनाद संसार सागर से रक्षा करता, सर्वकाल में सबके लिए समस्त वस्तुओं का यथार्थ ज्ञाता बनता। सदा संसार चक्र को चलाने वाला बनकर व्यापक होने से समस्त स्थानों पर विद्यमान रहता और सबको स्वतः प्राप्त होता रहता है। विश्व मर्यादा को ज्ञानपूर्वक चलाने के लिए सर्वत्र प्रयत्न का प्रसार करने वाला है। इसे संसार को प्रकाशित करने वाला आनन्द स्वरुप के कारण भक्तों को प्रसन्न करने वाला कहा गया है। शान्त स्वरुप होने के कारण सदैव भक्तों को तृप्त करने वाला, समस्त प्राणियों के विचार को सर्वदा सर्वत्र जानने वाला है। सूक्ष्म होने के कारण आत्म स्वरुप से समस्त प्राणियों में प्रविष्ट हो जाता है। इन्द्रिय का निर्माता होने के कारण सूक्ष्मता स्थूल गुप्त से गुप्त शब्दों का श्रोता भी है। समस्त चराचर जगत् का स्वामी होने के कारण शासन करने वाला भी है। ऐश्वर्यों से युक्त होने के कारण सबकी याचना का स्थान भी रखता है। क्रियात्मक संसार का निर्माण होने से सांसारिक क्रियायों का संचालक भी है। स्वयं इच्छा रहित होने पर भी जीवों की शुभ कामनाओं का प्रकाशक है। ज्ञान स्वरुप होने के कारण विद्या का तेज स्वरुप होने से अंधकार को नष्ट करने वाला है। अणु–अणु तथा अप्रतीति होने वाला एवं इन्द्रियातीत होने के कारण पवित्र अन्तःकरण में प्रदर्शक स्वरुप रहता है। सर्वज्ञ व्याप्त व्यापक के भाव से सबका सम्बन्धी है। सर्वदा वेद कथित मार्ग पर चलने वालों के अज्ञान का हिंसक है और दुर्गुण दुर्भावों का नाश करने वाला है। सृष्टि काल से ही सुखदायक पदार्थों तथा उनको उपयोग में लाने की बुद्धि का देने वाला है। प्रलय के समय स्थूल जगत को अदृश्य अर्थात अपने में लीन करने वाला है। सृष्टि काल में सूक्ष्म प्रकृति को स्थूल पथ पर लाने वाले को ओंकार ही कहा गया है। ओंकार को ब्रह्म, ब्रह्म शक्ति, ब्रह्म विद्या, ब्रह्म सृष्टि एवं ब्रह्मत्व कहा गया है। सभी कथाओं का प्रारम्भिक जन्म से ही वर्णित है।

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय, भस्मांगरागाय महेश्वराय।
नित्याय शु(ाय दिगम्बराय, तस्मै न काराय नमः शिवाय।।
मन्दाकिनी–सलिल चन्दन–चर्चिताय, नन्दीश्वर–प्रमथनाथमहेश्वराय।
मन्दार पुष्पबहुपुष्प–सुपूजिताय, तस्मै म काराय नमः शिवाय।।
शिवाय गौरी वदनाब्ज वृन्द, सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय, तस्मै शि काराय नमः शिवाय।।
वशिष्ठ कुम्भोद्भवगौतमार्य, मुनीन्द्र देवार्चित शेखराय।
चन्द्रार्क वैश्वानर लोचनाय, तस्मै व काराय नमः शिवाय।।
यज्ञ स्वरूपाय जटाधराय, पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय, तस्मै य काराय नमः शिवाय।।

प्राण, प्रलय, प्रेरणायें, परिस्थितियां एवं ज्ञान धारायें किसी न किसी भावनाओं में भगवान का होना वर्णित है। भगवान (शिव) सभी शक्तियों का विधाता और प्रदाता हैं। शक्तियां ही सर्व सिद्ध साधन हैं। मानव शरीर सर्व शक्तियों का केन्द्र है और शिवत्व सर्व सृष्टि का केन्द्र है। अतः मानव शरीर को शिवत्व ब्रह्मत्व एवं विद्यात्व के बिना उद्धार नहीं है। शिवतत्व का मूलाधार सत्य और ओंकार है। शिवत्व का उद्घोष है कि ब्रह्म विद्या गायत्री नामक ब्रह्म मंत्र मानवीय जीवन सम्पदा है।

नमः शिवा शिव
गणेशाय आद्या शक्तिः,
ईशान सद्योजातं तत्पुरुष
वामदेवाय प्रचोदयात्।

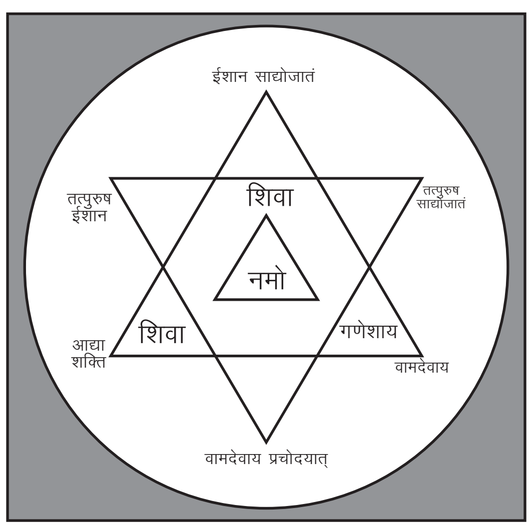

महामंत्र का अर्थ और सन्देश

भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

वर्तमान भाषा शब्द अनुसार उस प्राण स्वरुप, दुःखनाशक, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देव स्वरुप परमात्मा को अन्तरात्मा में धारण करें। वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करें।

इस महामंत्र को शिव मंत्र, ब्रह्मा मंत्र, विष्णु मंत्र, गायत्री मंत्र, गुरु मंत्र आदि विश्व धर्म मंत्र बताते हुए 24 अक्षरों से बना हुआ विद्याओं का भण्डार एवं ज्ञान विज्ञान का विधाता माना गया है। भूर्भुवः स्वः से ऋग्वेद, तत्सवितुर्वरेण्यं से यजुर्वेद, भर्गो देवस्य से सामवेद और धियो योनः प्रचोदयात् से अथर्ववेद की रचना हुई है। इस मंत्र के अक्षरों में अनेकों प्रकार के आग्नेयास्त्र, वरुणास्त्र, ब्रह्मास्त्र आदि हथियार बनाने के लिए विधान मौजूद है। अनेक दिव्य शक्तियों पर अधिकार करने की विधियों के विज्ञान भरे पड़े हैं। ऋद्धि सिद्धियों को प्राप्त करने, लोक लोकान्तरों से प्राणियों से सम्बन्ध स्थापित करने, ग्रहों की गतिविधि तथा प्रभाव को जानने, अतीत तथा भविष्य से परिचित होने, अदृश्य एवं अविज्ञात तत्वों के हस्ताकमलवत देखने के अनेकों प्रकार के विज्ञान मौजूद हैं। जिनकी थोड़ी सी भी जानकारी मनुष्य प्राप्त कर लें तो वह भूलोक में रहते हुए भी देवताओं के समान दिव्य शक्तियों से सुसम्पन्न बन सकता है। इस गायत्री ब्रह्ममंत्र को अर्थ ब्रह्म सानिध्य पाना है। इस मंत्र के प्रथम भाग में ईश्वरीय दिव्य गुणों को प्राप्त करने, दूसरे भाग में ईश्वरीय दृष्टिकोण धारण करने और तीसरे में बुद्धि को सन्मार्ग पर लगाने की प्रेरणा है। गायत्री मंत्र में बीज रुप से भक्ति कर्म उपासना एवं ब्रह्मात्व विष्णुत्व और शिवत्व भरा हुआ है। गायत्री वेद विज्ञान की जननी, मानवता, सद्बुद्धि, सात्विकता का प्रतीक है। सत्य, उदारता, प्रेम, सद्भाव, सहानुभूति, भ्रातृत्व, सेवा, संयम, सच्चरित्रता, उदारता, त्याग, सदाचार, नम्रता, शिष्टता, सद्व्यवहार आदि गुणों की रत्न राशि उपलब्ध होती है।

गायत्री शक्ति आदि शक्ति सृष्टा है। ऋषियों तपस्वियों देवताओं ने इसका भिन्न–भिन्न प्रकार से गुणगान करते हुए कहा है कि– ''गयान् प्राणान् त्रायते सा गायत्री'' अर्थात जो गय (प्राणों की) रक्षा करती है वह गायत्री है, प्राण उसे कहते है चैतन्यता को।

जो भीतर की गति, क्रिया, विचार शक्ति, विवेक एवं जीवन धारण करने वाला तत्व है वही प्राण है ऐसे प्राण को सोऽहम्, शिवोऽम् करने वाला तत्वमसि कहा गया है। यह शरीर के अन्दर आत्मा या साक्षात शिव रुप है। यह आत्मा रुपी शिव उस आदि अनादि सत्य सनातन अजन्मा शिवम स्वरुप का अंश है। जिस प्रकार मानव अपनी शक्ति को उपयोग साधना करके अनेकों रचनायें करता रहता है। इसी प्रकार आदि पुरुष शिवजी ने भी आदि शक्ति की साधना करके सृष्टि की रचना किये हैं। समय–समय पर अपनी बुद्धि अनुसार उसी आदि गायत्री का गुणगान विभिन्न प्रकार से ऋषियों ने गाया है। जिस गायत्री नामक आदि शक्ति की साधना में शिव सदैव निमग्न रहे हैं और कहा गया है–

एकदा तु महादेवं कैलाश गिरि संस्थितम्।
पप्रच्छ पार्वतीं देवी बन्द्या विबुध मण्डलैः।।
कतमं योगमासीनो योगेश त्वमुपासते।
येन हि परमां सि(िं प्राप्नुवान् जगदीश्वर।।

एक बार कैलाश पर्वत पर विराजमान देवताओं के पूज्य सृष्टि स्वामी महादेव जी से वन्दनीया माता पार्वती जी ने पूछा– हे! विश्व पति जगदाधार योगश्वर महादेव ! आप किसकी उपासना करते हैं ? जिससे आप परम सिद्धि को प्राप्त हुए हैं।

श्रुत्वा तु पार्वती वाचं मधुसिक्तां श्रुतिप्रियाम्।
समुवाच महादेवो विश्व कल्याण कारकः।।
महद्वस्य तदगुप्त यत्तु पृष्टं त्वया प्रिये।
तथापि कथयिष्यामि ज्ञानेहात्वामह समम्।।

पार्वती की कर्णप्रिय और मधुर वाणी को सुनकर विश्व का कल्याण करने वाले महादेव जी बोले– हे पार्वती ! तुमने बहुत ही गुप्त और गूढ़ रहस्य के विषय को पूंछा है फिर भी स्नेह के कारण वह सारा रहस्य मैं तुमसे कहूंगा।

गायत्री वेद मातास्ति साद्य शक्तिर्मता भुवि।
जनानां जननी चैव तामुपासेऽहमेव हि।।
अति रहस्यमय्येषा गायत्री तु दश भुजा।
लोकेऽतिराजसे पंच धारयन्ति मुखानि तु।।

गायत्री वेद माता है। पृथ्वी पर वह आद्य शक्ति कहलाती है और वे ही संसार की माता है। उसी की उपासना करता हूं। दश भुजाओं वाली अत्यन्त रहस्यमयी यह गायत्री संसार में पांच मुखों को धारण करती हुई अत्यन्त शोभित होती है।

गायत्रौ तु पराविद्या तत्फलः वाप्त ये गुरुः।
साधकेन विद्या तन्यो गायत्री तत्व पण्डितः।।
गायत्री यो विजानाति सर्वं जानति सोननु।
जानात्येनां न यस्तस्य सर्वाः विद्यास्तु निष्फला।।

गायत्री पराविद्या हैं अतः उसके फल की प्राप्ति के लिए साधक को सद्‌गुरु की शरण में जाना चाहिए जो गायत्री तत्व का ज्ञाता हो। जो गायत्री को जानता हो वह सब कुछ जानता है जो गायत्री की नहीं जानता उसकी सब विद्या निष्फल है।

ह्रीं श्रीं क्लीं चेति रूपेभ्य स्त्रिभिर्वालोक पालिनी।
भासते सततं लोके गायत्री त्रिगुणात्मिका।।
आदि शक्तिस्त्वियं विष्णोस्तामहं प्रणमामिहि।
सर्गः स्थिति विनाशश्च जायन्ते जगतोऽनया।।

ह्रीं, श्रीं, क्लीं इन तीनों रूपों से लोकपालिनी शक्ति धारण कर तीनों गुणों वाली संसार में निरन्तर प्रकाशित रहती है। यह ही परमात्मा की त्रिदेवों की आदि शक्ति है ऐसी ही शक्ति को मैं प्रणाम करता हुआ साधना करता हूं। इसी शक्ति से संसार का निर्माण पालन और विनाश होता हैं।

ओंकार रूपा त्रिपदात्रयी च, त्रिदेववन्द्या त्रिदिवाधि देवी।
त्रिलोककर्त्री त्रितयस्य भर्त्री, त्रैकालिकी संकलनाविधात्री।।
त्रैगुण्यभेदात् त्रिविधस्वरूपा, त्रैविध्युक्तस्यफलस्य दात्री।
तथाऽ पवर्गस्य विधायिनी त्वं, दयार्द्रदृक्कोण विलोकनेन।।

वह देवी आदि शक्ति कार स्वरूप, त्रिपद विभूषित और त्रयी विद्या रूप है। तीन देवों से पूजित तथा देवाधि देवी, त्रिलोककर्त्री, तीनों कालों में एक रस रहने वाली और परमाणुओं का संकलन कर जग को रचने वाली है। त्रिगुण भेद से विविध रुप में रह कर वेदोक्त फल देने वाली बनती है। उसकी दया दृष्टि से अपवर्ग सुख उपलब्ध होता है।

त्वं वाङ्मयीश्विश्ववदान्य मूर्ति, विश्वस्यरूपाऽभि विश्वगर्भा।
तत्वामिका तत्व परात्परा च, दृग्तारिका तारक शंभु लोके।।
भूतं च भव्यं सकलं यदेतत्, त्वत्तः परं कुत्र न किंचिदस्ति।
आद्या मनाद्या मन वद्यवन्ध, पश्यन्ति विज्ञाः प्रवदन्ति च त्वाम्।।

हे देवि ! तुम शास्त्रमयी और विश्व की श्रेष्ठ मूर्ति हो। विश्व स्वरूपा होकर भी विश्वगर्भा हो तुम तत्वों से युक्त होकर भी तत्वों से परे हो। तुम उद्धार कर्ता हो हमारी और लोक की दृकतारिका हो। भूत और भविष्य में भी जो कुछ है तुम से पृथक कुछ भी नहीं है। आदि और अनादि रूप तथा श्रेष्ठ जनों से वन्दनीय तुमको (उसको) विद्वान लोग भली–भांति देखते हैं और उसका वर्णन करते हैं।

विश्वात्मिके विश्वविलास भूते, विश्वाश्रये विश्वविकास धामे।
विभूत्यधिष्ठात्र विभूति दात्रि, पदेत्वदीये प्रगतिर्मदीया।।
त्वं नित्यसर्गस्य विसर्ग भूता, दैनन्दिनस्यापि च प्राड्ढ्तस्य।
विश्वस्य योनिर्हि मता तथापि, समुद्रहैमाद्रिविरंचि जाता।।

हे देवि ! विश्ववात्मिके ! तुम विश्व की मनोरंजन करने वाली हो। वह आदि शक्ति देवी विश्वाश्रय एवं विश्व विकास का कारण है। सम्पत्ति और ऐश्वर्य की अधिष्ठात्री एवं विभूतियों को देने वाली है। उस देवी को मैं नमस्कार करता हूं। वह देवी नित्य सृष्टि की रचना करने वाली है और प्राकृत दिनचर्या की भी निर्माणिका है। यद्यपि वह जग जननी है फिर भी समुद्र हिमालय और ब्रह्मा की पुत्री करके मानी जाती है।

भोगस्य भोक्त्री करणस्यकर्त्री धात्वव्ययप्रत्यय लिंग शून्या।
सेया न वेदैर्न पुराण भेदै र्ध्येया धिया धारणयादि शक्तिः।।
किंचिद्यदेतत्तव मूर्ति रेषा, तथाप्य दृश्या खिलसाधनैश्च।
सान्ता निरन्ता सदसत्स्वरुपा, स्फुटास्फुटस्फोट विकास रूपा।।

वही आदि शक्ति भोग भोक्त्री तथा धन को उत्पन्न करने वाली है। धातु अव्यय, प्रत्यय और लिंग से शून्य होकर विविध पुराण भेद तथा वेदों से भी जानी जाती है। उसे केवल बुद्धि और मन से ध्यान किया जाता है। यद्यपि उसकी कुछ मूर्तियां बनाई गई है फिर भी वह सम्पूर्ण साधनों से अस्फुट तथा स्फुट स्वरुप होकर विकास और प्रलय स्वरुप हैं।

नित्यं सदा सर्वगताप्यलक्ष्या, विष्णोर्विधे शंकरतोप्यभिन्ना।
शक्ति स्वरूपा जगतोऽस्यशक्ति, र्ज्ञातुं न शक्या करणादिभिस्त्वम्।।
त्यक्तस्त्वयात्यन्त निरस्त बु(, र्नरो भवेद् वैभव भाग्यहीनः।
हिमालयादप्यधिकोन्नतोऽपि, जनैस्समस्तैरपि लंघनीयः।।

वह सर्वगत होकर भी अदृश्य है, विष्णु ब्रह्मा और मुझसे भिन्न नहीं है, शक्ति स्वरूप होकर जगत की शक्ति है। किसी विशेष कारण से उसका ज्ञान नहीं हो सकता है। वह देवी जिस मनुष्य का हाथ छोड़ देती है वह निबुर्द्धि वैभवहीन होकर भाग्य से भी हीन हो जाता है। यद्यपि वह हिमालय से भी ऊँचा हो तो भी साधारण जन उसे लांघ सकते हैं अर्थात् कोई भी उसकी निन्दा कर सकता है। उनकी महिमा महान है।

शिवे हरौ ब्रह्मणि भानुचन्द्रयो, श्चराचरे गोचरकेऽप्यगोचरे।
सूक्ष्मातिसूक्ष्मे महतो महत्तमे, कला त्वदीया विमला विराजते।।
सुधामरन्दं तव पादपद्मम्, स्वे मानसे धारणया निधाय।
बु(र्मिलिन्दी भवतान्यदीया, नातः परं देवि ! वरं समीहे।।

उस देवी के (शक्ति के) विमल कला का प्रकाश मुझमें विष्णु ब्रह्मा भानु चन्द्र चर अचर गोचर और अगोचर सूक्ष्माति सूक्ष्म महान से भी महान में सारांशतः हो रहा है। सभी में उसकी ज्योति का प्रकाश है। वह शक्ति सुधा समान रस पूर्ण है जो उसके चरण कमलों को निज मानस में धारण करके मेरा ध्यान करता है मैं उसका सहायक बनता हूं उस शक्ति के अतिरिक्त और किसी के साधना की आवश्यकता मुझमें नहीं है।

इस प्रकार से आदि पुरुष परमपिता विश्व स्वामी शिवजी ने आदि शक्ति की महिमा कह सुनायी। शिवजी स्वयं सर्वशक्तिमान होकर इस प्रकार से शक्ति आराध्य बनें। शक्ति आराधना सभी को अनिवार्य है जो अपने को शिव भक्त मानते हो वे शक्ति उपासना अवश्य करें। हे देवि ! जब मैं सृष्टि रचना करता हूं तो उस आदि शक्ति को धारण करता हूं और संहारन स्थिति आती है तब काल शक्ति धारण कर महाकाल का ताण्डव नृत्य करके अपना प्रयोजन पूर्ण करता हूं। गायत्री शक्ति जन जीवनीय कलि ध्वसंक है। उसकी उपासना करना मेरी ही उपासना है जो वह है वही मैं हूं जो उसे जानता है वही मुझे पाता है जो मुझे पाता हैवही उसे जानता है। वह निराकार है तो मैं साकार हूं वह नाद है तो मैं शब्द हूं वह मुझसे भिन्न नहीं तो वह मेरा स्वरूप है। वह प्रलय है तो मैं सृष्टि हूं वह अनादि है तो मेरा अन्त नहीं। यह संसार उसका रूप है तो मेरा स्वरूप है। जब तक तुम गायत्री शक्ति स्वरूप हो।

नमः शिवाय शिवायै गणेशाय

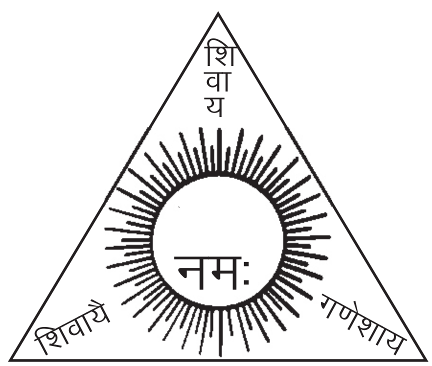

आदित्य हृदय पूजन

आदित्य हृदय साक्षात् भगवान भाष्कर का स्वरूप है। शिव ही सूर्य है, प्रकाशमान स्वरूप है। प्रकाश कभी भी नष्ट न होने वाला तत्व है। शिव का स्वरूप होने के कारण सूर्यार्घ्य विशेष फलप्रद होता है। शिव तत्व द्वारा दृश्यादृश्य रूप से सदैव विष्णु तत्व का सहयोग होता रहता है। त्रिसुर तत्व एवं त्रिधा शक्तियां परस्पर अभिन्न हैं भले ही कार्यभार भिन्न हो। पौराणिक कथन है कि श्री रामचन्द्र जी रावण से युद्ध में थककर चिन्ता करते हुए रण भूमि में खड़े थे। रावण युद्ध के लिए सामने उपस्थित था। स्थिति को देखकर अगस्त मुनि श्रीरामजी के पास जाकर विजय हेतु आदित्य हृदय का उच्चारण किया कराया। इस आदित्य हृदय नामक स्तोत्र का विनियोग इस प्रकार है–

विनियोग–

अस्य आदित्य हृदयस्तोत्रस्यागत्स्य)षिरनुष्टुप्छन्दः,
आदित्यहृदयभूतो भगवान् ब्रह्मादेवतानिरस्ताशेषविघ्नतया
ब्रह्मविद्यासि(ौ सर्वत्र जय सि(ौ च विनियोगः।

–)ष्यादिन्यास– अगस्त)षये नमः शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे।
आदित्यहृदयभूतब्रह्मदेवतायै नमः हृदि। बीजाय नमः गुह्मे। रश्मिमते शक्तये नमः पादयोः। तत्सवितुरित्यादिगायत्रीकीलकाय नमः नाभौ।

– करन्यास– रश्मिमते अंगुष्ठाभ्यां नमः। समुद्यते तर्जनीभ्यां नमः।
देवासुरनमस्ङ्कुताय मध्यमाभ्यां नमः विवस्ते अनामिकाभ्यां नमः।
भास्करायकनिष्ठिकाभ्यां नमः। भुवनेश्वराय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

– हृदयादि अंग न्यास– रश्मिमते हृदयाय नमः। समुद्यते शिर से स्वाहा।
देवासुरनमस्ङ्कुताय शिखायै वषट्। विवस्ते कवचाय हुम्।
भास्कराय नेत्रत्रयाय वौषट्। भुवनेश्वराय अस्त्राय फट्।

न्यास करके गायत्री मंत्र द्वारा सूर्य भगवान का ध्यान करें।

भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

तत्पश्चात् आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

आदित्यहृदयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशकम्।
जयावहं जपं नित्यमक्षयं परमं शिवम्।।1।।
सर्वमंगलमांगल्य सर्वपापप्रणाशनम्।
चिन्ताशोकप्रशमनमायुर्वर्धनमुत्तम्।।2।।
रश्मिमन्तं समुद्यन्तं देवासुरनमस्ङ्कुतम्।
पूजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम्।।3।।
सर्वदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मिभावनः।
एष देवासुरगणॉल्लोकान् पाति गभस्तिभिः।।4।।

एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिवः स्कन्दः प्रजापतिः।
महेन्द्रो धनदः कालो यमः सोमो ह्यपांपतिः।।5।।
पितरो वसवः साध्या अश्विनौ मरुतौ मनुः।
वायुर्वह्निः प्रजाः प्राण)तुकर्त्ता प्रभाकरः।।6।।
आदित्यः सविता सूर्यः खगः पूषा गभस्तिमान्।
सुवर्णसदृशो भानुर्हिरण्यरेता दिवाकरः।।7।।
हरिदश्वः सहस्त्रार्चिः सप्तसप्तिर्मरीचिमान्।
तिमिरोन्मप्पनः शम्भुस्त्वष्टामार्तण्डकोंऽशुमान्।।8।।
हिरण्यगर्भः शिशिरस्तपनोऽहस्करौ रविः।
अग्निगर्भोऽदितेः पुत्रः शंखः शिशिरनाशनः।।9।।
व्योमनाथस्तमोभेदी)ग्यजुः सामपारगः।
घनवृष्टिरपां मित्रो विन्ध्यवीथीप्लवंगमः।।10।।
आतपी मण्डली मृत्युः पिंगलः सर्वतापनः।
कविर्विश्वो महातेजः रक्तः सर्वभवोद्भवः।।11।।
नक्षत्रग्रहताराणामधिपो विश्वभावनः।
तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन् नमोऽस्तुते।।12।।
नमः पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नमः।
ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नमः।।13।।
जयाय जयभद्राय हर्यश्वाय नमो नमः।
नमो नमः सहस्त्रांशो आदित्याय नमो नमः।।14।।
नम उग्र वीराय सारंगाय नमो नमः।
नमः पद्मप्रबोधाय प्रचण्डाय नमोऽस्तुते।।15।।
ब्रह्मेशानाच्युतेशाय सूरायादित्यवर्चसे।
भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः।।16।।
तमोध्नाय हिमध्नाय शत्रुध्नायामितात्मने।
ङ्गुतघंघाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः।।17।।
तप्तचामीकराभाय हरये विश्वकर्मणे।
नमस्तमोऽभिनिंघाय रुचये लोकसाक्षिणे।।18।।
नाशयत्येष वै भूतं तमेव सृजति प्रभुः।
पायत्येषु तपत्येष वर्षत्येष गभस्तिभिः।।19।।
एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठितः।
एव चैवाग्निहोत्रं च फलं चैवाग्निहोतृणाम्।।20।।
देवाश्च क्रतवश्चैव क्रतूनां फलमेव च।
यानि ङ्गुत्यानि लोकेषु सर्वेषु परमप्रभुः।।21।।

एनमापत्सु ङ्कच्छ्रेषु कान्तारेषु भयेषु च।

कीर्तयन् पुरुषः कश्चिन्नावसीदति राघवः।।22।।

पूजयस्वैनमेकाग्रो देव देवं जगत्पतिम्।

एतत् त्रिगुणितं जप्त्वायु(्षुविजयिष्यसि।।23।।

अस्मिन् क्षणे महाबाहो रावणं त्वं जहिष्यसि।

एवमुक्त्वा ततोऽगस्त्यो जगाम स यथागतम्।।24।।

आदित्य हृदय परम पवित्र और शत्रुओं का नाश करने वाला मंत्र है। इसके जप से सदा विजय प्राप्त होती है। यह नित्य अक्षर और परम कल्याण स्तोत्र है। मंगलों का भी मंगल है इससे सब तापों का नाश हो जाता है। यह चिन्ता और शोक को मिटाने तथा आयु को बढ़ाने वाला साधन है।।1–2।।

भगवान सूर्य अपनी अनन्त किरणों से सुशोभित (रश्मिमान) हैं। ये नित्य उदय होने वाले (समुद्यन्) देवता और असुरों से नमस्कृत, विवस्वान् नाम से प्रसिद्ध, प्रभा का विस्तार करने वाले (भास्कर) और संसार स्वामी (भूनेश्वर) हैं। तुम इनका (रश्मिते नमः, समुद्यते नमः, देवासुरनमस्कृताय नमः, विस्वते नमः, भास्कराय नमः, भुवनेश्वराय नमः इन 6 नाम मंत्रों के द्वारा) पूजन करो। सम्पूर्ण देवता इन्हीं के स्वरुप है। ये तेज की राशि तथा अपनी किरणों से जगत को सत्ता एवं स्फूर्ति प्रदान करने वाले हैं। ये ही अपनी रश्मियों का प्रसार करके देवता और असुरों सहित सम्पूर्ण लोकों का पालन करते हैं।।3–4।।

ये ही ब्रह्मा, विष्णु, शिव, स्कन्द, प्रजापति, इन्द्र कुबेर, काल, यम, चन्द्रमा, मनु, वायु, अग्नि, प्रजा, प्राण ऋतुओं को करने वाले तथा प्रभा के पुंज है।।5–6।।

इन्हीं के नाम आदित्य (अदिति पुत्र) सविता (जगत को उत्पन्न करने वाले) सूर्य (सर्वव्यापक) खग (आकाश में विचरने वाले) पूषा (पोषण करने वाले) गभस्मिान (प्रकाशमान) सुवर्ण सदृश, भानु (प्रकाशक) हिरण्यरेता (ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के बीज) दिवाकर (अंधकारनाशक प्रकाश विस्तारक) हरिदश्व (दिशाओं में व्यापक अथवा हरे रंग के घोड़ों वालों) सहस्त्रार्चि (हजारों किरणों सुशोभित) सप्तसप्ति (सात घोड़ों वाले) मरीचमान (किरणों से सुशोभित) तिमिरोन्मथन (अंधकारनाशक) शम्भु (कल्याण के उद्गम स्थान)त्वष्टा (भक्तों का दुःख दूर करने वाले तथा जगत संहारक) मार्तण्डक (ब्रह्माण्ड को जीवन प्रदान करने वाले) अंशुमान (किरण धारण करने वाले) हिरण्यगर्भ (ब्रह्मा) शिशिर (स्वभाव से सुख देने वाले) तपन (गर्मी पैदा करने वाले) अहस्कर

(दिनकर) रवि (सबके स्तुति पात्र) अग्निगर्भ (अग्नि को गर्भ में धारण करने वाले) अदिति पुत्र, शंख (आनन्द रुप एवं व्यापक) शिशिर नाशन (शीत का नाश करने वाले) व्योमनाथ (आकाश के स्वामी) तमोभेदी (अंधकार नाशक) ऋक, यजुः और सामवेद के पारगामी, घनवृष्टि (घनी वृष्टि के कारण) अपांमित्र (जल को उत्पन्न करने वाले) विन्ध्यवीथीव्लवंगम (आकाश में तीव्र वेग से चलने वाले) आमपी (घाम उत्पन्न करने वाले) मण्डली (किरण समूह को धारण करने वाले) मृत्यु (मौत के कारण) पिंगल (भूरे रंग वाले) सर्वतापन (सबको ताप देने वाले) कवि (त्रिकालदर्शी) विश्व (सर्व रुप) महातेजस्वी रक्त (लाल रंग वाले) सर्वभवोद्भव (सबकी उत्पत्ति के कारण, नक्षत्र, ग्रह और तारा के स्वामी) विश्वभावन् (जगत की रक्षा करने वाले) तेजस्वियों में भी अति तेजस्वी तथा द्वादशात्या (बारह स्वरुपों में अभिव्यक्त है) इन सभी नामों से प्रसिद्ध सूर्य देव आपको नमस्कार हैं।।7–12।।

पूर्व गिरि उदयाचल तथा पश्चिम गिरि अस्ताचल के रूप में आपको नमस्कार है। ज्योतिर्गणों (ग्रहों और तारों) के स्वामी तथा दिन के अधिपति आपको प्रणाम है। आपके रथ में हरे रंग के घोड़े जुते रहते है। आपको बारंबार नमस्कार है। सहस्त्रों किरणों से सुशोभित भगवान सूर्य ! आपको बारंबार प्रणाम है। आप अदिति के पुत्र होने के कारण आदित्य नाम से प्रसिद्ध है आपको नमस्कार है।।13–14।।

उग्र (अभक्तों के लिए भयंकर) वीर (शक्ति सम्पन्न) और सारंग (शीघ्रगामी) सूर्यदेव को नमस्कार है। कमलों को विकसित करने वाले प्रचण्ड तेजधारी मार्तण्ड को प्रणाम है। परात्पर रूप में आप ब्रह्मा विष्णु के स्वामी और शिव स्वरूप हैं। सूर आपकी संज्ञा है। यह सूर्यमण्डल आपका ही तेज है। आप प्रकाश से परिपूर्ण है। सबको स्वाहा कर देने वालीअग्नि आपका ही स्वरुप है। आप रौद्र रूप धारण करने वाले है। आपको नमस्कार है।।15–16।।

आप अज्ञान और अंधकार के नाशक, जड़ता एवं शीत के निवारक तथा शत्रु का नाश करने वाले है। आपका स्वरुप आप्रमेय है। आप कृतघ्नों का नाश करने वाले सम्पूर्ण ज्योतिषियों के स्वामी और देव स्वरूप है। आपको नमस्कार है। आपकी प्रभा तपाये हुए सुवर्ण के समान है। आप हरि (अज्ञान का हरण करने वाले) और विश्वकर्मा (संसार की सृष्टि करने वाले) हैं। तम के नाशक प्रकाश स्वरुप और जगत के साक्षी है। आपको बारंबार नमस्कार है।।17–18।।

हे रघुनन्दन ! ये भगवान सूर्य ही सम्पूर्ण भूतों का संहार सृष्टि और पालन करते हैं। ये ही अपनी किरणों से गर्मी पहुंचाते और वर्षा करते हैं। ये सब भूतों में अन्तर्यामी रूप से स्थित होकर उनके सो जाने पर जागते रहते हैं।ये ही अग्नि होत्र तथा अग्निहोत्री पुरुषों को मिलने वाले फल है।।19–20।।

यज्ञ में भाग ग्रहण करने वाले देवता, यज्ञ और यज्ञों के फल भी ये ही हैं। सम्पूर्ण लोकों में जितनी क्रियायें होती है उन सबका फल देने में ये ही पूर्ण समर्थ हैं। हे राघव ! विपत्ति में कष्ट में दुर्गम मार्ग में तथा किसी भय के अवसर पर जो कोई पुरुष इन सूर्यदेव का कीर्तन स्तवन करता है उसे दुःख नहीं भोगना पड़ता है।।21–22।।

इसलिए तुम एकाग्र चित्त होकर इन देवाधिदेव जगदीश्वर की पूजा करो इस आदित्य हृदय का तीन बार जप करके सूर्य ध्यान किया, रावण को मारने में सफल हुए।।23–24।।

ऐसे विनय को सुनकर सूर्यदेव प्रसन्न हो उठे। रामजी को आगे बढ़ने की प्रेरणा मिली। सूर्यदेव देवताओं के मध्य खड़े थे राम को संकेत किया रावण पर बाण मारने की। राम ऐसा करके विजयी बने। राम जैसे किसी भी मनुष्य के लिए आदित्य हृदय विजय प्रदाता है।

शिव शक्ति का संक्षिप्त परिचय

नमः शिवाय। सदा शिव चेतन ज्योति बिन्दु है। ब्रह्म परमात्मा है। निराकार निर्विकार है। इनका अपना कोई स्थूल या सूक्ष्म शरीर नहीं है। इनकी शक्ति का नाम है आदि शक्ति। शिव शक्ति रूप है। सभी के ऊपर सदा मुक्त चैतन्य ज्योति बिन्दु रुप परमात्मा सदाशिव का स्थान हैं यह ब्रह्मा विष्णु अर्थात् सूक्ष्म देवलोक से भी परे है। शिव ही ब्रह्मा विष्णु तथा शंकर के रचयिता है। स्वयं शिव द्वारा इन त्रितत्व त्रिमूर्ति त्रिदेवों को उत्पत्ति रक्षक, संहारक शक्ति प्राप्त हो सकी है। शिव शब्द का अर्थ कल्याणकारी शक्ति है। यह शक्ति परोक्ष रूप से जड़ तत्व ग्रहण कर पिता का कार्य एवं प्रत्यक्ष रूप से चेतन तत्व ग्रहण कर माता का दायित्व निभाती है। इसीलिए शिव की प्रतिमा अण्डाकार अंगुष्ठाकार होती है। जिसे लिंग कहते है ऐस शिवलिंग की उपासना समस्त संसारे के सभी प्राणी करते हैं।

जड़ चेतन परस्पर अभिन्न है वैसे जैसे शरीर और शक्ति। सृष्टा और सृष्टि ज्योति और चक्षु, वाणी और जिहवा आदि। शिव शक्ति का कार्य है कल्याणकारी परिवर्तन करना। पृथ्वी पर दिन व रात का परिवर्तन, ऋतु परिवर्तन बीज का वृक्ष में और वृक्ष का बीज में परिवर्तन आदि सम्पूर्ण परिवर्तन की घटना शिव शक्ति के कारण होती है। किसी भी परिवर्तन की निन्दा करना शिव शक्ति का अपमान है। शरीर तथा ब्रह्माण्ड में होने वाले सम्पूर्ण परिवर्तन की पूजा करना अर्थात् परिवर्तन को परम कल्याणकारी शक्ति मानना शिव पूजा है। लोके में शिव के स्थान पर शिवलिंग की पूजा का सर्वाधिक प्रचलन है। शिवलिंग में एक उभार बनते है। उभार के नीचे भी उतना ही उभार बनाने का विधान है। ऊपर वाला उभार जो आंखों से दिखाई देता है वह दृश्य जगत का प्रतीक है। ऊपर के नीचे एक गोला होता है और गोला के नीचे भी उभार होता है जो बाहर से दिखता नहीं है। अतः नीचे वाला उभार अदृश्य जगत का प्रतीक है। शिवलिंग में उभार के नीचे वृत्त बनता है, वृत्त के हर बिन्दु पर आदि और अन्त एक साथ है अर्थात् आदि और अन्त के बीच में दूरी नहीं है। आदि का अर्थ भूतकाल से है और अन्त का अर्थ भविष्य से है। आदि अन्त के बीच की दूरी शून्य होने पर भूत भविष्य दोनों एक साथ दिखाई देता है। भूत भविष्य का ज्ञान प्राप्त होने पर मनुष्य माया के बन्धन से मुक्त हो जाता है और अमरता की अनुभूति कर लेता है। इस अवस्था की प्राप्ति करना शिवलिंग की वास्तविक पूजा है।

शंकर

शिव रुप शंकर है। यह ब्रह्मा विष्णु की तरह सूक्ष्म और स्थूल शरीर धारी है। यह शंकर महाविनाश का कार्य करते हैं। साकार होने के कारण त्रिशूल, डमरु, सांप, बिच्छू तथा सर्व जीवों को धारण करते हैं। साथ में सती गणेश षडानन तथा नन्दी बैलयुक्त चित्रों में दर्शाया जाता है। शंकरपुरी में प्रवास और कैलाशवासी भी कहते हैं। सूर्य शंकर सावित्री दुर्गा आदि सब शिव शक्तिमय शंकरांश है। सृष्टि का संहार और रचना दोनों शंकर करते हैं क्योंकि पुराणोक्त है कि आकाश लिंग रुप एवं पृथ्वी पीठ रुप से है। पुरुष प्रकृति सृष्टि रचयिता है। दोनों के स्वामी शंकर सती है। शिव का निवास सहस्त्रार में और शंकर का प्रवास भूमध्य में त्रय नेत्र के रुप से पाया जाता है।

शिव शंकर जी के पूर्वज

संसार में माता–पिता सभी के होते हैं बिना माता–पिता कुछ भी होना संभव नहीं। शिव स्वयं चेतन ज्योति बिन्दु हैं। शंकर उन्हीं का स्वरुप है। लोक आत्मबोध के लिए शंकर भगवान आदि शक्ति की साधना करते हैं जो उन्हीं का स्वरुप है। इसी प्रकार शंकर जी ने अपने विवाह के समय पिता के नाम पर ब्रह्मा एवं माता के नाम पर प्रलय स्वरुप को बताया। परन्तु पिता के स्थान पर विष्णु शक्ति और माता के स्थान पर सृष्टि शक्ति को बताया है। यह सब भक्तों की काल्पनिक रेखायें हैं। इसी कल्पना की पूर्ति के लिए ही स्वयं को अर्द्धनारीश्वर रुप में दिखाया है। शिव शक्ति अरुप होने से माता पिता का नाम नहीं लेना चाहिए। देवों देवियों की शक्ति अपार है उनके प्रति ऊँच–नीच छोट–बड़ा का भेदभाव करना सोचना अपनी अज्ञानता का दर्शन करना है। अपनी भक्ति का परिणाम ही देवों की शक्ति है। अपनी आवश्यकतायें पूर्ण होना देवों का रुप है। देव जन्म का रहस्य नहीं अपने जन्म का रहस्य सदैव खोंजे।

शिव और शक्ति

शिव सगुण भी है और निर्गुण भी। वे साकार होकर भी निराकार है। शिव और शक्ति परम तत्व के दो रुप है। शिव कूटस्थ तत्व है और शक्ति परिणामिनी है। विविध वैचित्यपूर्ण संसार के रुप में अभिव्यक्ति, शक्ति का आधार एवं अधिष्ठान शिव है। शिव अव्यक्त अदृश्य सर्वगत एवं अचल आत्मा है। शक्ति दृश्य चल एवं नाम रुप के द्वारा व्यक्त सत्ता है। शक्ति नटी शिव के अनन्त शान्त एवं गंभीर वक्षस्थल पर अनन्त कोटि ब्रह्माण्डों का स्वरूप धारण कर तथा उसके अन्दर सर्ग स्थिति एवं संहार की त्रिविध लीला करती हुई नृत्य करती रहती है। शिव और शक्ति उसी प्रकार से है जैसे सूर्य और उसका प्रकाश।

शक्ति के चरणों में आत्मसमर्पण करना ही शिव के साक्षात्कार का साधन माना गया है। जीवन के स्थूल एवं सूक्ष्म रुपों में जो कुछ भी क्रियायें परिवर्तन एवं चेष्टायें होती है वे सब शक्ति के कार्य है। यह शक्ति वह ईश्वरीय तत्व है जो समस्त चराचर जगत में व्याप्त तथा स्वयं जगत में अभिवयक्त है। शिव से भिन्न शक्ति नहीं और शक्ति से भिन्न शिव नहीं। शिव में इकार की शक्ति है इकार निकल जाने पर शव ही रह जाता है। अतः शक्ति को पाकर ही शिव शब्द का अर्थ कल्याण बना। शिव ही शंकर है। शं का भी अर्थ है कल्याण, कर का अर्थ है करने वाला। शिव अद्वैत कल्याण आनन्द ये सारे शब्द एक ही अर्थ के बोधक है। शिव ही ब्रह्म है ब्रह्म ही शिव है। ब्रह्म जगत के जन्मादि का कारण है। सृष्टि के पूर्व सत असत न होने पर भी शिव ही था। शिव सर्वात्म्क है उनका स्मरण जप तप ध्यान भावना परम मंगलमय है। उन्हीं की कृपा से उपासना का सौभाग्य प्राप्त होता है।

शिवम प्रतीक

शास्त्रोक्त आचार युक्त सद्‌गृहस्थ जीवन होते हुए भी त्रिपुण्ड चन्दन भस्मावलेपन एवं रुद्राक्ष धारण करना चाहिए। मुख में गायत्री और महामृत्युंजय का जप विद्या में वेदज्ञ कर्मों में सत्कर्म पुरुषार्थ सत्प्रवृत्ति पर चलता हुआ परोपकारी बनना शिवम पात्रता पाना है। इन्हीं तथ्यों पर शिव शिवा कथा के प्रति चौपाई दोहे में भी श, व, म अक्षरों में से किसी एक अक्षर का प्रवेश अवश्य रखा गया है। जिससे लोक मंगलकारी गुण युक्त रहें।

शिव, भस्म, त्रिपुण्ड, रुद्राक्ष

जिस प्रकार सूर्य अर्ध्य के बिना देवपूजन योग्य मनुष्य नहीं होता है। वैसे शैव लोगों को तीनों धारण करना अनिवार्य है। आकाश अन्तरिक्ष में नित्य शाश्वत शब्द ब्रह्म विद्यमान है वही शिव है शिव किरणें ही रविचन्द्र है। प्रणव मंत्र विद्या बीज तो शिव सृष्टि बीज है। शिव शक्ति उसका संरक्षक है। जिसका सतों गुण रुप विष्णु, रजो गुण रुप ब्रह्मा एवं तमो गुण रुप पुनः शिवमय होने के लिए उसी में लय हो जाता है। इसी से शिवलिंग पूजनीय है। नर नारी तथा सभी सृष्टि जीवों का परिचय लिंग से होता है। प्रकृति के विकृति को भी लिंग कहते है। देव चिन्ह के अर्थ में लिंग को शिवलिंग ही माना जाता है। भगवान शिव भस्मी भूत भूतनाथ कहे जाते है। भस्म धारण करने का अर्थ है अपने को शिव समान दीन हीन जीवों का कल्याण करने की भावना अपना कर चलना। त्रिपुण्ड्र पुरुष प्रकृति अथवा गौरीशंकर का चिन्ह है कि त्रिपुण्ड्र लगाकर बीच में बिन्दी लगाना अर्थात अपने को गौरीशंकर स्वरुप बनाना। पर शिव के इस तिलक में मतावलम्बियों ने हेर–फेर कर डाला है। जैसे लिंगार्चन में अश्शीलता के भाव की कल्पना परम मूर्खता एवं नास्तिकता अनभिज्ञता प्रगट करना है। लय स्वर से लेकर मृत्यु तक का रूप है और लिंग की उत्पत्ति

लय से है। इसी प्रकार ललाट से लेकर नेत्र पर्यन्त और मस्तक से भृकुटी पर्यन्त तथा मध्य में इस प्रकार तीन रेखायें होती है जिनमें पहली रेखा गार्हपत्य अग्नि, अ कार, रजोगुण, भूलोक, देहात्मा, क्रि शक्ति ऋग्वेद, प्रातःकालीन हवन एवं महेश्वर देवता का प्रतीक है। दूसरी रेखा दक्षिणाग्नि, उकार, सत्वगुण, अन्तरिक्ष अन्तरात्मा, इच्छाशक्ति, यजुर्वेद, मध्यान्ह के हवन एवं सदाशिव देवता का स्वरूप है। तीसरी रेखा आहवनीय अग्नि, मकार, तमोगुण, स्वर्गलोक, परमात्मा, ज्ञानशक्ति, सामवेद तीसरे हवन और महादेव देवता का स्वरुप है। रेखा एवं त्रिपुण्ड्र की महत्ता को लेकर लोग शिर माथा, गर्दन, छाती, पांजर, दोनों भुजा, नाभि, कमर, कण्ठ, हृदय, छाती के ऊपर लगाते है जिसे द्वादश तिलक कहते है। पर ऐसी साधनाओं से लाभ पाने के लिए 18 व्यसनों (शिकार करना, दिन में सोना, व्यर्थ बकना, अभक्ष्य खाना, नारी अधीन होना, मद्यपान धूम्रपान करना, जुआ खेलना, अश्लील गीत गान करना, अनीति पर चलना, बाजा बजाना, व्याभिचार, शत्रुता साधना, ईर्ष्या करना, कठोर बोलना, जीवन विपरीत दिशा पर चलना, पर पीरा देना, अपना अपने राष्ट्र का अहित करना) से बचकर रहना चाहिए।

शैवगण त्रिशूल लेकर चलते, भगवा पहनते और रुद्राक्ष भी धारण करते है। शिव वेष भाव विचार व्यवहार अपनाने का अर्थ है कि हम देवत्व को ऊपर उठावेंगे। असुरत्व को अपने तमोगुण से नष्ट करेंगे। शिवजी ने जब शिव हितार्थ भाव से महाविष का पान किया और अपने योगबल से कण्ठस्थ कर रखा तो उन्हें महातपन हुई तदुपरान्त वह हिम स्थल कैलाश में रहने लगे। गर्मियों में अथवा किसी समय शिवजी को जो विश्व हितार्थ भाव से श्रद्धा युक्त जल चढ़ाता है तो वह शिव को पुष्प से भी ज्यादा प्रिय है। इसी प्रकार रुद्राक्ष भी जो एक से चौदह मुखी तक सभी के सभी शिवजी पहनने वाले को देखकर प्रसन्न होते है। शिवजी विश्वदेव है। संसार जब तक स्वयं लिंगाधीन है तब तक किसी न किसी रुप में शिवार्चना करनी ही होगी।

शिवोपासना उपरान्त शिव नैवेद्य ग्रहण की आवश्यकता होती है जिसमें भी लोगों के अनेक मत है। पर वह शिवनिर्माल्य सभी ग्रहणीय है जिसमें अपनी श्रद्धा प्रखर प्रबल हो। देव स्वरुप भावनायें साधनायें हो क्योंकि जब विश्वेश्वर के स्नान जल को मस्तक में धारण करना कहा गया है और काशी व अन्य के ज्योर्तिलिंगों के नैवेद्य को भक्षण करने में चान्द्रायण व्रत के समान पुण्यजनक माना गया है। अशुचि अवस्था में शिव निर्माल्य नहीं धारण करना चाहिए। नर्वदेश्वर लिंग, धातुमय लिंग, रत्नलिंग तथा स्वयंभू और सिद्ध लिंग पुराण

प्रसिद्ध लिंग पर चण्ड का अधिकार न होने से इनके ऊपर चढ़ाये हुए नैवेद्य तथा निर्माल्य सभी को भक्ष्य तथा ग्राह्य है। जो वस्तुएं शिवलिंग पर चढ़ाई नहीं गई है किन्तु किसी भी लिंग को निवेदित की गई हो वे वस्तुएं शैवी दीक्षा वाले मनुष्यों के लिए ग्राह्य है जिन्हें शैवी दीक्षा नहीं है उनके लिए पार्थिव लिंग के निवेदित को छोड़कर और सभी लिंगों को निवेदित की हुई वस्तुएं तथा शिव प्रतिमा को निवेदित किये गये प्रसाद ग्राह्य है। जिन शिव निर्माल्यों के लिए निषेध है वे भी शालग्राम शिला के स्पर्श से ग्राह्य हो जाते है। शिव प्रसाद सभी को ग्राह्य है। शिव को अर्पित की गई वस्तुएं सभी को नहीं लेना चाहिए।

शिव वास गणना प(ति

भगवान शंकर की सकाम उपासना में इसलिए शिव वास का ज्ञान अति आवश्यक माना गया है कि अनुकूल शिव वास का चयन भक्त का अभीष्ट पूर्ण करता है। देवर्षि नारद द्वारा प्रणीत शिव वास की गणना पद्धति के अनुसार जिस दिन रुद्रार्चन अथवा रुद्राभिषेक करने का हो उस समय की तात्कालिक तिथि की संख्या को दोगुना करके, उसके गुणनफल में 5 जोड़ने के उपरान्त 7 का भाग देने पर शेष बचे अंक से शिव वास का विचार किया जाता है।

- शेषांक 1 होने पर यह ज्ञात होता है कि भगवान भोलेनाथ कैलाश पर्वत पर प्रसन्न मुद्रा में बैठे है। उस समय उनकी आराधना करने से भोग और मोक्ष दोनों प्राप्त होता है अथवा होगा।
- शेषांक 2 होने पर पता चलता है कि भगवान शंकर माता पार्वती के साथ अपने भक्तों के हितार्थ चिन्तन कर रहे हैं ऐसे समय उनकी अर्चना करने से सुख सम्पत्ति का वरदान प्राप्त होता है।
- शेषांक 3 होने से विदित होता है कि शिवजी नन्दी पर आरुढ़ होकर लोक कल्याण हेतु भ्रमण कर रहे हैं इस समय इनकी उपासना करने से मनोकामना पूर्ण होती है।
- शेषांक 4 बचने पर महादेव जी के देवताओं की सभा में होने की सूचना मिलती है। इस समय उनका ध्यान भंग होने पर शोक सन्ताप प्राप्त हो सकता है।
- शेषांक 5 होने का तात्पर्य है कि भगवान नीलकंठ इस समय भक्तों के पापों का भक्षण करते हुए उनका पातक रुपी विष पी रहे हैं। ऐसी स्थिति में अनुष्ठान करने पर पीड़ाजनक सिद्ध हो सकता है।

- शेषांक 6 होने का आशय है कि नटराज ताण्डव नृत्य करते हुए क्रीड़ारत हैं। ऐसी अवस्था में उनके आनन्द में विघ्न उपस्थित करने पर साधक को सपरिवार कष्ट भोगना पड़ सकता है।
- शेषांक शून्य होना भगवान महाकाल के शमसान में साधना रत होने का परिचायक है। ऐसे समय में उनकी साधना को खण्डित करना महाविपत्तिकारक एवं मरणतुल्य कष्टप्रद होगा।

यह ध्यान रखें कि शिव वास की गणना तिथियों के क्रमांक शुक्ल पक्ष से प्रारम्भ होते है। इस प्रकार शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा (1) तिथि से पूर्णिमा (15) तक के क्रमांक क्रमशः 1 से 15 तक होंगे। तदोपरान्त कृष्णपक्ष की तिथियों का क्रम आने के कारण कृष्णपक्ष की प्रतिपदा (1) तिथि से अमावस्या तक के क्रमांक क्रमशः 16 से 30 होंगे।

मान लीजिए हमें शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी 13 तिथि को शिव वास जानना है तो नियमानुसार सबसे पहले तिथि के क्रमांक 13 को दोगुना करके गुणनफल 26 पाया। इसमें पांच जोड़ने पर योगांक 31 में 7 का भाग देने पर शेष 3 बचा जिससे स्पष्ट होता है कि शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी में भगवान भोलेनाथ नन्दी पर सवार होकर भक्तों की सहायता हेतु सम्पूर्ण विश्व का भ्रमण करते है, यह शिव वास शुभ फलदायक है। लेकिन इसी प्रकार कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी का क्रमांक 13 के बजाय 26 मान्य होगा। इसका फल कुछ और होगा।देवर्षि नारद द्वारा निर्दिष्ट पद्धति से गणना करने पर यह विदित होता है कि शुक्ल पक्ष की 2, 5, 6, 9, 12, 13 तिथियां अनुकूल है। कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा (16) चतुर्थी, पंचमी, अष्टमी, एकादशी, द्वादशी एवं अमावस्या शुभ फलदायक माने गये है। सोमवार प्रदोष एवं शिवरात्रि के व्रत में तथा ज्योतिर्लिंग के क्षेत्र में शिव वास का विचार करने की आवश्यकता नहीं है। निष्काम भाव से आराधना करने वाले भक्त के लिए भी शिव वास के नियम का प्रतिबन्ध नहीं है। परन्तु किसी विशिष्ट कार्य के सिद्धि हेतु शिवार्चन करते समय शिव वास अनुकूलता अनुष्ठान की सफलता के लिए आवश्यक भी माना गया है। शुभ साधना में सिद्धि प्रदान होना प्रमुख लक्ष्य भी होता है।

शिव तंत्र

भगवान शिव का नित्य धाम महाकैलाश

कैलाश दो है– एक महाकैलाश और दूसरा भू–कैलाश। वर्तमान में जिसको कैलाश माना जाता है, अनुभवी शिव भक्तगण कहते है कि वह तो असली भू–कैलाश भी नहीं है। भू–कैलाश पर शिव गण और शिव भक्तों के अतिरिक्त अन्य कोई भी नहीं जा सकता। 'काशी–केदार–माहात्म्य' नामक ग्रंथ के चतुर्थ अध्याय में महाकैलाश का वर्णन इस प्रकार से आता है– अनन्तकोटि ब्राह्मणों के आधारभूत 'महोदक' में लाख योजन विस्तीर्ण स्वर्णभूमि है, वहां लाख योजन ऊँचा परमेश्वर का स्थान है। उसी को वेदवित् पुरुष 'महाकैलाश' कहते हैं। उसके चारों ओर पचास हजार योजन विस्तृत और बीस हजार योजन ऊँची राजत (चांदी की) भूमिका का घेरा है। उसके आठों दिशाओं में मणियों के आठ फाटक हैं। पूर्व द्वार के मालिक महात्मा विघ्नेश है, अग्निकोण फाटक के मालिक महागण भृंगिरिटि हैं ओर दक्षिण द्वार के पालक गणों के सरदार महाकाल है, नैऋत्य के द्वारपाल साक्षात भगवान शंकर के अंग

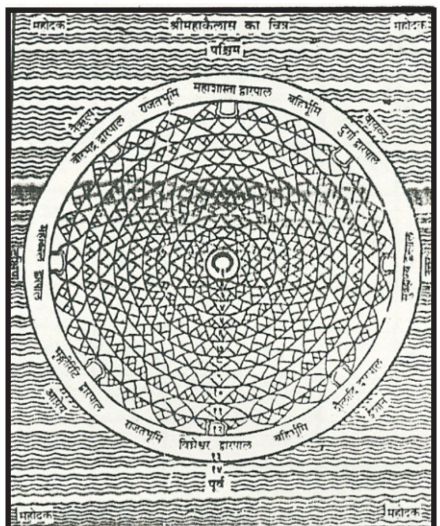

से उत्पन्न वीरभद्र है और पश्चिम द्वार की पालिका शिवदुहिता महाशास्ता हैं, वायव्य कोण की द्वारपालिका संकटमोचनी दुर्गा हैं, उत्तर दिशा के द्वारपाल सुब्रह्मण्य नामक पर–शिव है तथा ईशान कोण के द्वार रक्षक शैलादि गणनायक हैं। इन लोकों के जो अनुचर हैं उनकी तो गिनती ही नहीं है। पचास हजार योजन विस्तार की वह नगरी है। उसमें दस हजार योजन ऊँचे सौ अरब (एक खरब) शिखर (गुंबज) हैं, जो मूंगे के बने हुए और चारों तरफ से घिरे हुए है। उसके भीतर बीस हजार योजन ऊँचे दस अरब शृंग (शिखर) और है जो सबके सब पद्मरागमणि के बने हुए है और चारों ओर घिरे हुए खड़े है। उनके भीतर तीस हजार योजन ऊँचे एक करोड़ एक विशाल वैदूर्यमय शिखर हैं जो चारों ओर से घिरे हुए हैं। फाटक के बाहर की भूमि दस हजार योजन विस्तीर्ण है तथा फाटक के भीतर की भूमि चालीस हजार योजन परिमाण की हैं। इस भूमि में तथा शृंगों पर तारतम्य क्रम से सालोक्य–मुक्तिवाले रहते हैं। उनके मनोऽनुकूल उसमें घर, बाग, बावड़ी, कुंआ, नद और नदियां है। वह भोग

भूमि दिव्य अप्सराओं, दिव्य पान और दिव्य भक्ष्य से पूर्ण है। वहां अगणित शिव के गणऔर सुन्दर प्रभा वाली रुद्र की कन्यायें रहती हैं। कल्पवृक्ष के वहां वन हैं और कामधेनु के पुंज हैं तथा चिन्तामणियों के ढेर लग रहे हैं। वहां पुण्य के तारतम्य से शिवधर्मपरायण, शिव के आराधक एवं शिव भक्तों के पूजने वाले, जो सालोक्य–मुक्ति को प्राप्त कर चुके हैं, वे बसते हैं।

सर्वव्याधि नाश के लिए लघु मृत्युंजय–जप

जूँ सः (नाम जिसके लिये किया जाय) पालय पालय सः जूँ ।

इस मंत्र का 11 लाख जप तथा एक लाख दस हजार दशांश का जप करने से सब प्रकार के रोगों का नाश होता है। इतना न हो तो कम–से–कम सवा लाख जप ओर बारह हजार दशांश जप अवश्य करना चाहिए। इसके साथ लिखा यंत्र भी हाथ में बांध देना चाहिए।

श्रीमहामृत्युंजय–कवच–यन्त्रम्

भोज पत्र पर अष्टगंध से लिखकर गुग्गल का धूप देकर पुरुष के दाहिने और स्त्री के बायें हाथ में बांध देना चाहिए।

गोत्र, पिता का नाम पुत्र या पुत्री (रोगी) का नाम यथास्थान लिख देना चाहिए। यंत्र इस प्रकार है–

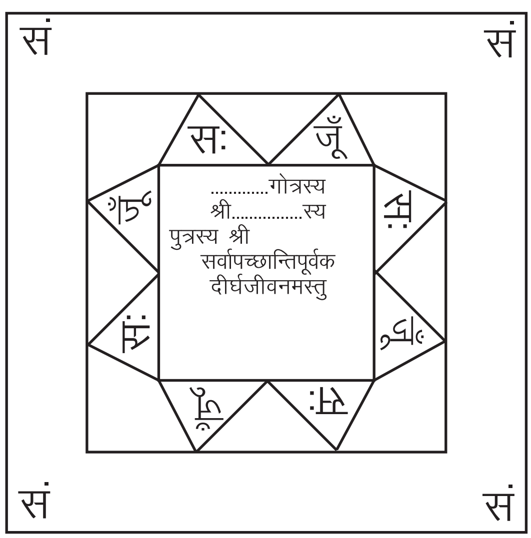

शिव यंत्र

कोष्ठक गंदा होने से बचायें।

											तत्	पं		भा
दाश		दे	अं											
गि	स		ष्ट	स	च		स्क	रथ	व		ज	रि	र	
थ्वी	वि		वक	रा										
ये	क्री		गी	जा	र		दे	तु	त्राय		य	वि	नन्द	
सु	यै		ग	त्यै										
र्व	वि		वि	द	नाय	ताय		वि	त्यै	वि		रे	द	
द	महे	वि		वि										
द	वि		द	ण्यं	महे	महे		सी	द		द	महे	द	
महे	भ		म	दि										
ता	महे	महे		शि	महे	स	गौं		हा	वा		घ	वासु	वायु
व	ब्र		ह											
दे	दे		क	ल्ल		दे	पु	प्रि	ला		स्त्र	व		वा
रा	भा		वा	त्राय										
या	पु		मू	स्य	य		य	य	य	धी		यै	त्र्यै	
त्र्यैं	धी		धी	धी										
धी	धी		म	धी	धी		धी	म	म	म		म	म	हि

शिवम यंत्र के अनुरागी महानुभावों से निवेदन है कि वे अभीष्ट प्रश्नों का उत्तर पाने के लिए श्रद्धा विश्वास पावनता पूर्वक सर्वप्रथम पंचाक्षर मंत्र का जाप करते हुए शिव शक्ति का ध्यान करें। ध्यान एवं शान्त भाव स्थिर चित्त से प्रश्न को धारण करते हुए शिवम यंत्र के किसी कोष्ठक में अपनी मध्यमा अंगुली या शलाका रखें। फिर उस कोष्ठक के अक्षर को लिख लेंवे। वह चाहे दो अक्षर का हो या अध अक्षर हो। पुनः उस कोष्ठक से आगे गणना करते हुए नवां कोष्ठक का अक्षर लिख देंवे। क्रम से चलते–चलते पूरे वर्ग का एक चक्कर पूर्ण होने पर इन वेद मंत्रों का एक मंत्र पूर्ण बन जायेगा। मंत्र अपने गुण अनुसार प्रश्नकर्त्ता के प्रश्नों का उत्तर होगा। फल सहित सभी वेद मंत्र आगे अंकित है। आपको अपने प्रश्नों का उत्तर अवश्य प्राप्त होगा। जीवन के इष्टदेव को प्राप्त करें।

मंत्र तंत्र यंत्र जीवन रक्षक पोत होते हैं। आप अपने को समझें। सोऽहम् आपके लिए प्रयुक्त किया गया है। जीवन खेल और ढकेल नहीं, यह तो ईश्वरीय बेल है। मंत्र तंत्र यंत्र आधारित होकर सशरीर आसमान को सपर्श कर लेना ही संभव है। शिवम् यंत्र अमुक कार्य के प्रश्न की सिद्धि का यंत्र नहीं, यह तो जीवन सिद्धि का यंत्र और आराध्य सत्ता का परिचायक है। प्राप्त मंत्र अनुकूल

देवी या देव को अपने आचरण का आधार मानना होगा। फल आप नहीं आपके श्रद्धा विश्वास समर्पण सद्भाव के आधार पर भविष्य में प्राप्त होगा। शिवम यंत्र के मंत्र वैदिक हैं। तंत्र रुपी आपकी शरीर है। शिवम यंत्र से इष्ट की जानकारी करके अभीष्ट फल प्राप्त करें। यह जीवन प्रवर्तक मंत्रों का यंत्र है। दिव्य ज्ञान की अपेक्षा दिव्य जीवन श्रेष्ठ माना जाता है। यंत्र के मंत्र निम्नवत हैं।

1. भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

मंत्र स्वरुप– ब्रह्म मंत्र ही लौकिक देव सम्पदा है। सर्वात्म प्रबोधक होने के साथ सर्वागीण जीवन विकासक मंत्र है। सभी सांसारिक प्राणियों के लिए उपयुक्त है। ब्रह्मवाणी एवं वैदिक महामंत्रमय ज्योति सुधात्व के साथ साक्षत कल्पतरु गुणों से परिपूर्ण हैं।

मंत्र प्रयोग– सभी के उपयुक्त होने के साथ प्रजातंत्र शासन के सुव्यवस्था का यही एक आधार है। मानवीय जीवन की दिव्यता का प्रेरणा स्रोत है। जीवन देवता की प्रसन्नता का एकमात्र यही साधन है। जो लोग व्यसन, कुसंग कलिकाल प्रभावों से ग्रसित है। वे अवश्य धारण कर जीवन को जीवन्त बनायें। रखी गई अंगुली के प्रथम अक्षर के देव या देवी की उपासना करें।

2. पंचवक्त्राय विद्महे, महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।

मंत्र स्वरुप– विश्व कल्याणकारी मुक्ति प्रदाता शिव स्तुति युक्त वैदिक मंत्र है। जीवन भाग्य विधाता ब्रह्मबल विकासक है।

मंत्र प्रयोग– जिनका जीवन अराजकता, आलस्य, दुर्गण, द्वेष, लोभादिक फन्दों में फंसा हो उनके अज्ञान अभाव अशक्ति को दूर करके सत्य, प्रेम, न्याय पहनाकर जीवन को सन्मार्ग पर लाने में अद्वितीय है।

3. भास्कराय विद्महे, दिवाकराय धीमहि तन्नो सूर्यः प्रचोदयात्।

मंत्र स्वरुप– सृष्टिकर्ता प्राण निर्माण की क्षमता के आदि स्रोत ही नहीं बल्कि जीवन ज्योति देकर अन्तःकरण में सत्प्रवृत्तियों सदिच्छाओं का बीजारोपण कर व्यक्तित्व का दिव्य प्रवाह प्रदान करता है।

मंत्र प्रयोग– रोग शोक पाप ताप संताप अधीरता निराशता में फंसा हुआ व्यक्ति का सर्वाग्रह अनिष्ट शान्त कर जीवनीय प्रतिभा प्रखर करने वाला मंत्र है। ऐसे लोग सविता दर्शन करके जीवन परिवर्तन प्राप्त करें।

4. दाशरथये विद्महे सीताबल्लभाय धीमहि तन्नो रामः प्रचोदयात्।

मंत्र स्वरुप– विश्व ऋषियों से वन्दित अनुशासन मर्यादा संरक्षक एवं जीवन आदर्शों को प्रदान कर मुक्ति प्रवाह स्थिर रखता है।

मंत्र प्रयोग– जिनमें आसुरी वृत्ति प्रबल हो प्रयास करने पर जप तप ध्यान संयमता में बाधायें आती हो जीवन अधीरता से पीड़ित हो अनैतिकता दोषों को दमन–शमन करके सतपथ दर्शाता है।

5. देवकी नन्दनाय विद्महे, वासुदेवाय धीमहि तन्नो कृष्णः प्रचोदयात्।

मंत्र स्वरुप– भव, भय, भ्रमहारक, सहकार, संगठन, सत्साहस कर्ता मानवीय गरिमा का दिव्य स्रोत प्रदाता है। युग्म शक्तियों का विद्या वैभव जीवन्त करता है।

मंत्र प्रयोग– परतंत्री जीवन को मुक्ति प्रदान कराता मानवी दोषों, अवगुणों को क्षार करता हुआ नीतिज्ञता से ओत–प्रोत करता है। असहाय अनाथ को आत्मिक शक्ति पाने के लिए सर्वोत्कृष्ट साधन है।

6. अंजनी सुताय विद्महे, वायुपुत्राय धीमहि तन्नो मारुतिः प्रचोदयात्।

मंत्र स्वरुप– असंभव को संभव करने वाला, भू पर स्वर्ग अवतरण प्रक्रिया को लाकर राष्ट्र परिवार को सुखी समुन्नत बनाता है।

मंत्र प्रयोग– असंयमता अशुचिता से ग्रसित जीवन रोगी को जीवन ज्ञान विज्ञान देकर पारिवारिक कर्म धर्म कर्तव्यपरायणता जागृत करने में सहायक है। पिता–पुत्र सम्बन्ध में प्रगाढ़ता लाने में सिद्धिप्रद है।

7. गिरिजायै विद्महे, शिव प्रियायै धीमहि तन्नो दुर्गा प्रचोदयात्।

मंत्र स्वरुप– अकल्याणकारी वृत्तियों का ध्वंसक, देवत्व का उद्गारक विश्व विदित शक्ति है। विश्व परिवर्तन कला का मूल मंत्र है।

मंत्र प्रयोग– जब जीवन असुरता से रुचि लाये, सुरता से कतराये। लोक परोपकार का समय अंशदान न कर सके स्वार्थपरता संकीर्ण भावों से ग्रसित जीवन गरिमाहीन हो जाय तब यह उद्धार कर देता है।

8. सरस्वत्यै विद्महे, ब्रह्म पुत्र्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्।

मंत्र स्वरुप– अज्ञान नीरसता को हटाने वाली ज्ञान कला की देवी बुद्धि वैभव की अधिष्ठात्री मां सरस्वती का मंत्र है। अन्तरिक्ष में अदृश्य रूप से अन्तरंग में मंगलकारिणी शक्तियों का शिखा द्वारा प्रवेशकारक मंत्र यह है।

मंत्र प्रयोग– किसी भी स्थिति परिस्थिति में कहीं पर रहें सरस्वती वन्दना करके अपने सभी आशाओं अभिलाषा की पूर्ति होने की क्षमता प्राप्त कर सकते हैं।

9. पृथ्वी देव्यै विद्महे, सहस्त्रमूर्त्यै धीमहि तन्नो पृथ्वी प्रचोदयात्।

मंत्र स्वरुप– सभी क्षमताओं गुणों समर्थता से युक्त है। जीवन आधार मंत्र मानकर मातृशक्ति रुप में पूजन वन्दन करें।

मंत्र प्रयोग– यह मंत्र राष्ट्रभक्ति प्रदाता मानव कर्तव्यों से लगाव देता हुआ क्षमा शक्ति प्रदान करता है। ब्रह्म रसधार देता हुआ कठिन प्रकृति वालों तथा राष्ट्र नेताओं की साधना को सार्थक बनाता है।

पार्थिव पूजन विधि

किसी पूजा पाठ में स्थान शरीर मन सामान का पवित्र स्वच्छ शुद्ध सत्य दिव्य और प्रिय होना आवश्यक होता है। पार्थिव पूजन शिव लिंग की रचना करके किया जाता है जिसका समय अधिक मास है जो प्रति तीसरे वर्ष आता है। बड़ा महत्वशाली एवं मानवोद्धारक आनन्द प्रद शिवोपासना है।

पार्थिव पूजन के लिए प्रातःकाल ब्रह्मबेला में उठकर स्नान सन्ध्योपासन से निवृत्त होकर पवित्र वस्त्र धारण कर पूर्व या उत्तर की ओर मुख करके निम्नलिखित श्लोक द्वारा पृथ्वी की पाद वन्दना कर उपयुक्त कार्य के लिए अतीव शुद्ध मृत्तिका को ग्रहण करने के पूर्व पवित्रीकरण आचमन प्राणायाम करके भस्म का त्रिपुण्ड्र लगाकर रुद्राक्ष की माला धारण करें। फिर पृथ्वी वन्दना इस प्रकार से करें—

उद्धृतासि वराहेण ङुष्णेन शतबाहुना।
मृत्तिके त्वां प्रगृह्णामि प्रजया च धनेन च।।

हे पृथ्वी ! बराह कृष्ण शतबाहु आदि अवतरणों के द्वारा तुम उद्धारित की गई हो इसलिए धन पुत्रादि की कामना से मैं तुम्हारे रज को ग्रहण करता हूं। तदुपरान्त रक्षा दीप जलाकर मृदाहरण मंत्र '' ह्रौ ह्रीं जूं सः हराय नमः।'' इस मंत्र को मन में पढ़ते हुए मिट्टी लाकर चारों तरफ छिड़क देवे और अपना आसन उत्तराभिमुख बिछावें।

पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

हे पृथ्वी ! समस्त जीव तुम्हारे द्वारा धारण किये गये है और महाविष्णु ने तुमको कूर्म बराहादि रुपों में धारण किया है। हे देवि ! मेरे आसन की संशुद्धि करो। फिर हाथ में तिल अक्षत जौ कुछ भी लेकर अधोलिखित मंत्र को पढ़ता हुआ अपनी रक्षा के लिए चारों ओर फेंक दें।

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

भगवान शंकर की आज्ञा से पृथ्वी पर रहने वाले सभी अनिष्टकारी जीवों की दुष्वृत्तियां यहां से दूर हट जाय। इसके बाद स्वस्थ चित्त से शान्त पवित्र मन से नीचे लिखे मंत्र से मृत्तिका विचूर्ण करें।

सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।
भवे भवे नातिभवे भवस्य मां भवोऽवाय नमः।
ह्रौ हीं जूं सः महेश्वराय नमः।।

मैं यह जानता हूं कि आप क्षण भर में ही उत्पन्न हो सकते हो। इसलिए सद्योजात हर क्षण पैदा होने वाले आपको नमस्कार है। हे भवोद्भव ! आपको अनेकानेक नमस्कार है। ह्रौं ह्रीं जूं सः महेश्वराय नमः इस मंत्र से मृत्तिका को चूर्ण कर निम्न मंत्र द्वारा भिगोंये।

वामदेवाय नमः ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमः रुद्राय नमः कालाय नमः कल विकरणाय नमः बलविकरणाय नमः बलाय नमः बल प्रमथनाय नमः सर्वभूत दमनाय नमो मनोन्मनाय नमः।।

अखिल विश्व में सबसे बड़े तथा श्रेष्ठ होने के कारण वामदेव तथा ब्रह्माण्ड में रुद्र रुप (भयंकर) आपही का है। आपही काल के भी काल महाकाल तथा सभी प्रकार की कला तथा बल का विकरण करने वाले हैं। इसलिए आपको ही हे रुद्र ! सदा नमस्कार है। जगत का सम्पूर्ण बल आपही में अवस्थित है या संसार की सभी शक्तियों का प्रमथन आपही के द्वारा हुआ करता है एवं समस्त प्राणियों के दमन (नवाने) तथा मनोन्मन (मानसिक विकास) की शक्ति आपही के द्वारा प्राप्त हुआ करती है, अर्थात प्राणी के उत्थान अधःपतन का होना आपकी ही कृपा पर अवलम्बित है इसलिए हे सर्वशक्तिमान शिव आपको सर्वदा नमस्कार है।

अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोर घोर तरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः।।इति संयोजनम्।।
तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।
इति पिण्डी करणम्।

उग्र (भयंकर) उग्रतर तथा उग्रतम आदि विश्व के सभी रूप आपके रुद्र रूप से उत्पन्न हुए हैं। इसलिए सबके आदि कारण आपके रुद्र रूप को मेरा अनेकों बार नमस्कार है। इस मंत्र से मृत्तिका को साने।

उसी एकमात्र पुरुष को सब कुछ जानकर देवों के देव महादेव में अपनी बुद्धि अवस्थित कर केवल भगवान रुद्र को ही मैं प्रेरित करता हूं। इस मंत्र से मृत्तिका को पिण्डीकरण (गोला) करें। फिर नीचे लिखें मंत्र को पढ़कर सुन्दर शिवलिंग का निर्माण करें।

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम्।
ब्रह्माऽधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्।

विश्व के सभी विद्याओं के स्वामी तथा चराचर सभी जीवों के एकमात्र अधीश्वर तथा ब्रह्मादि देवताओं के प्रभु तथा उनके एकमात्र आराध्य दैवत् पूर्णब्रह्म रूप आपही है। इसलिए सदा सर्वदा मेरा शिवजी कल्याण करते रहें। शिवलिंग बनाकर बायें हाथ वेदी (तांबे के बर्तन अथवा बिल्व पत्र) पर ही अक्षत पुष्प युक्त शिवलिंग की स्थापना इस मंत्र से करें। कंकड़ पत्थर रहित 12–12 ग्राम

मिट्टी अवश्य होवें। महेश्वराय नमः करते हुए लिंग का गठन करें। कम से कम 108 अवश्य बनावें। प्रमुख शिवलिंग पर नन्हीं सी गोली बनाकर लिंग के ऊपर रखें, यह व्रज कहलाता है।

ह्रौ हीं जूं सः शूलपाणये नमः। इति स्थापनम्।

लिंग की स्थापना करने के पश्चात अधोलिखित संकल्प करें।

विष्णुर्विष्णुर्विरित्यादि देशकालादिकं स्मृत्वा, अमुक गोत्रोऽमुकशर्माहं शुभपुण्यफलप्राप्तिकामनया पुरुषार्थ चतुष्टय प्राप्त्यर्थं दीर्घायुरारोग्य धनधान्यपुत्रपौत्रदिसमस्तसम्पत्प्रवृ(यर्थं श्रीसाम्ब सदाशिवप्रीत्यर्थं पार्थिव लिंगपूजनमहं करिष्ये।

इसके बाद ह्रौं हीं जूं सः विनाकपाणये नमः इस मंत्र का उच्चारण करते हुए अधोलिखित श्लोकों द्वारा आवाहन (स्थापन) करें।

कैलाशशिखरद्रमयातसमागच्छ मम प्रभो। पूजां जपं गृहीत्वा च यथोक्तफलदो भव। देव देवं महादेवं सर्वलोक हितेरतम्। यथोक्तरूपिणं देवं शम्भुमावाहयाम्यहम्। सदाशिवेह स्थितो भव।।

हे प्रभो ! अति रमणीक कैलाश शिखर से शीघ्र यहां पधार कर मेरे द्वारा किये हुए जप तथा पूजा को स्वीकार करके अभीष्ट फलों की संसिद्धि के लिए वर देने का कष्ट करो। हे देवों के देव महादेव ! सम्पूर्ण जीव मात्र के कल्याण में सदैव तल्लीन रहने वाले भगवान शंकर के तथाकथित का मैं हृदय से आवाहन करता हूं। इसलिए यहां पधार कर यही निवास कीजिए।

आवाहन करने के पश्चात प्राण प्रतिष्ठापन के लिए हाथ में जल लेकर अधोलिखित मंत्र से विनियोग करें।

प्राण प्रतिष्ठा– मन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा)षयः)ग्यजुः सामच्छन्दांसि प्राणाख्यदेवता बीजाय ह्रीं शक्तिः, क्रौं कीलकम् पार्थिवलिंग प्राण प्रतिष्ठापनार्थे जपे विनियोगः।

प्राण प्रतिष्ठा मंत्र के ब्रह्मा विष्णु रुद्र ये तीन ऋषि, ऋग्वेद, यजुर्वेद एवं सामवेद ये तीन ही छन्द है। उसका बीज ह्रीं शक्ति एवं क्रौं कीलक है। ऐसे महामंत्र को पार्थिव लिंग के प्राण प्रतिष्ठापन के लिए विनियोजित करता हूं।

आं हीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः शिवस्य प्राणाः शिवस्य जीवाः शिवस्य सर्वेन्द्रियाणि इहागत्य सुखेन चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा, शिव इहागच्छेह तिष्ठ मम पूजां गृहाण।

अब हाथ में अक्षत लेकर नीचे लिखे हुए मंत्र को कहते हुए पार्थिव लिंग पर छिड़कता रहे। आं हीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः इन ग्यारह बीज मंत्रों की शक्ति से शिव का जीव शिव का प्राण तथा शिव की समस्त ज्ञान इन्द्रियों व कर्मेन्द्रियों का प्रभाव इस पार्थिव लिंग में प्रविष्ट होकर सुखपूर्वक चिरकाल तक आधिवासित रहें। हे शिव ! यहां आकर तथा इस लिंग में निवास कर मेरी पूजा ग्रहण करो। फिर हाथ में पुष्प लेकर इस मंत्र से प्राण संस्थापन करें।

ध्यायेनित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम्।
रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नं।।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याल यज्ञोपवीतं।
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलन्नयहरं पंचवक्त्रंत्रिनेत्रम्।।

चांदी के पहाड़ के कान्ति के सदृश सुन्दर देह धारण करने के साथ ही जिसने मस्तक पर अतिरम्य चन्द्रखण्ड को भी धारण किये हैं एवं जिनका समस्त शरीर रत्नादिकों की कान्ति से प्रज्वलित हो रहा है तथा जिसने फरसामृगवरद व अभय मुद्रा से अपने चारों हाथों को सुशोभित किया है और सुन्दर सर्प का यज्ञोपवीत धारण कर पद्मासीन होकर चतुर्दिक देव वृन्दों द्वारा प्रशंसित हो रहे हैं। ऐसे विश्व के आदि कारण तथा समस्त भयों से दूर करने वाले तीन नेत्र धारी पांच मुख वाले सदाशिव अकाण्ड ब्रह्माण्ड द्वारा अहर्निश वन्द्य हो रहे हैं ऐसे माहेश्वर रूप का शुद्ध हृदय से मैं ध्यान करता हूं। पश्चात् पार्थिव लिंग का पूजन अधोलिखित मंत्रों से करें–

नमः शिवाय, इति पाद्यं समर्पयामि।

इस मंत्र से पादप्रक्षालनार्थ जल समर्पित करता हूं।

महेश्वराय नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

इस मंत्र से अर्घ्य समर्पित करता हूं।

शम्भवे नमः, अर्घ्यान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

इस मंत्र से अर्घ्योपरान्त आचमन के लिए जल समर्पित करता हूं।

अब आगे लिखे मंत्रों के द्वारा पंचामृत स्नान करावें।

पंचामृतं मयानीतं पयोदधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थे प्रतिगृह्यताम्।।

मेरे द्वारा पंचामृत (दूध, दही, घी, मधु, शर्करा) स्नान के निमित्त लाया गया है। हे हर ! इसे आप ग्रहण करें।

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।। इति शु(ोदकस्नानम्।।

इसके अनन्तर गन्ध अक्षत पुष्प द्वारा आठों दिशाओं से पूजन करें।

1. पूर्व दिशा में (पृथ्वी रुप में) शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः।
2. ईशान में (जल रुप में) भवाय जलमूर्तये नमः।
3. उत्तर दिशा में (अग्नि रुप में) रुद्राय अग्निमूर्तये नमः।
4. वायव्य कोण में (वायु रुप में) उग्राय वायुमूर्तये नमः।
5. पश्चिम दिशा में (आकाश रुप में) भीमाय आकाशमूर्तये नमः।
6. नैऋत्य कोण में (यजमान रुप में) पशुपतये यजमानमूर्तये नमः।
7. दक्षिण दिशा में (चन्द्र रुप में) महादेवाय सोममूर्तये नमः।
8. अग्निकोण में (सूर्य रुप में) ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः।

इसके बाद नमः शिवाय मंत्र को एक माला अथवा 10 बार जपें। अमोघ कल्याणकारी शिव मंत्रों से नमस्कार करते हुए षोडसोपचार पूजन करें।

1. जेष्ठाय नमः वस्त्रं समर्पयामि।
2. श्रेष्ठाय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।
3. कपर्दिने नमः पुनराश्चमनीयम्।
4. कालाय नमः गंधं समर्पयामि।
5. कल विकरणाय नमः अक्षतान् समर्पयामि।
6. बल विकरणाय नमः बिल्बपत्र धतूरादिपुष्पाणि समर्पयामि।
7. बलाय नमः धूपमाघ्रापयामि।
8. बल प्रमथनाय नमः दीपं दर्शयामि।
9. नीलकंठाय नमः नैवेद्यं निवेदयामि।
10. भवाय नमः)तुकालो−तफलानि समर्पयामि।
11. मनोन्मनाय नमः आचमनं समर्पयामि।
12. शम्भवे नमः ताम्बूलं समर्पयामि।
13. त्रिलोकेशाय नमः अभिषेकं समर्पयामि।
14. शितिकण्ठाय नमः नीराजनं समर्पयामि।
15. शिवप्रियाय नमः षाडुगुध्यार्थेद्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।
16. शम्भवे नमः अन्ते नमस्करोमि।

पूजन करने के पश्चात पुष्पांजलि समर्पण करें।

हर विश्वाऽखिलाधार निराधारनिराश्रय।
पुष्पांजलिमिमां शम्भो गृहाण वरो भव।।
पार्थिवश्वराय नमः पुष्पांजलिं समर्पयामि।

अखिल विश्व के आधार आप ही है किन्तु स्वयं बिना किसी आधार तथा आश्रय के सर्वत्र व्याप्त हो इसलिए हे हर ! पुष्पांजलि ग्रहण कर वरदान दीजिए। पार्थिवेश्वराय नमः इस मंत्र से पुष्पांजलि पार्थिव लिंग पर चढ़ावें निम्न प्रार्थना करते हुए–

रूपं देहि जयं देहि भाग्यं देहि महेश्वर।
पुत्रान्देहि धनं देहि सर्वान्कामांश्च देहि मे।।

हे महेश्वर ! रूप, विजय, सौभाग्य, पुत्र, पौत्र, धन, धान्यादि सभी इच्छाओं की सफलता प्रदान करते रहो। ऐसी प्रार्थना भगवान शम्भु शिव से हाथ जोड़कर विनय भाव से करने के पश्चात यथाशक्ति अधोलिखित मूल मंत्र का जप करें।

नमः शिवाय

अथवा

ह्रौं ह्रीं जूं सः शिवाय नमः प्रपन्नपारि जाताय
स्वाहा।

नमः ओंकाररूपाय वेदरूपाय ते नमः।
अलिंगलिंग रूपाय विश्वरूपाय ते नमः।।
नमो मोक्ष पदे नित्यं तुभ्यं नादात्मने तथा।
नमः शब्दरूपाय रूपातीताय ते नमः।।
त्वं भ्राता सर्वलोकानां त्वमेव जगतां पिता।
त्वं भ्राता त्वं सुहृन्मित्रं त्वं प्रियः प्रिय रूप धृक।।
त्वं गुरुस्त्वं गतिः साक्षात् त्वं देव च पितामहः।
नमस्ते भगवन रुद्र भास्करामिततेजसे।।
संसार सागरे मग्नं मामु(र शिवाव्यय।
अनेन पूजनेन त्वं वाच्छितार्थप्रदो भव।।
दण्डवत्प्रणतो भूत्वा स्तुत्वा चैव विशेषतः।
एकाग्रः प्रणतो भूत्वा मंत्रमेतदुदीरयेत्।।
अंगहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं महेश्वर।
पूजितोऽसि महादेव तत्क्षमस्वाऽम्बिकापते।।
अप्यथासक्तचित्तेन क्रियाहीनेन वा प्रभो।
मनोवाक्कायदुष्टेन पूजितोऽसि त्रिलोचन।।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव दासे ङ्कत्वा दयां मयि।
शरणागत–दीनति–परित्राण–परायण।।

शिवलिंग का अभिसिंचन मंत्र

देवस्य तवा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।
अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसाभिषिंचामि।

उपरोक्त मंत्र द्वारा शिव लिंग को अभिसिक्त करें। तदुपरान्त तिलक धारण कर अधोलिखित मंत्र से शिवलिंग की परिक्रमा करें।

वृषश्चण्डं वृषश्चैव सोमसूत्रं पुनर्वृषम्।
चण्डश्च सोमसूत्रश्च पुनश्चण्डं पुनर्वृषम्।।
यानि कानि च पापानि जन्मान्तर ङ्कृतानि च।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे।।

इन श्लोकों द्वारा क्षमा याचना करें।

मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं महेश्वर।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे।।
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजनं नैव जानामि तत्क्षमवस्व सदा हर।।

बिना मंत्र बिना क्रिया व बिना भक्ति भाव के हे महेश्वर ! जो कुछ पूजा मैंने आपकी है उसे दया कर हे मेरे देव ! पूर्ण सांगता प्रदान करो। इसके साथ ही आवाहन पूजन विसर्जन आदि मैं कुछ भी नहीं जानता। इसलिए हे हर ! उसे कृपा कर क्षमा करें। इसके उपरान्त हाथ में फूल लेकर शिवलिंग का इन श्लोकों से विसर्जन करें।

उग्रो महेश्वरश्चैव शूलपाणिः पिनाकधृक्।
शिवः पशुपतिश्चैव महादेव विसर्जनम्।।
ईशानः सर्वविद्यानामोंकारो भुवनेश्वर।
कैलाशं गच्छ देवेश पुनरागमनाय च।।
अनेन पार्थिवेश्वर पूजनेन श्री सदाशिवो देवता प्रसन्नाऽस्तु।।

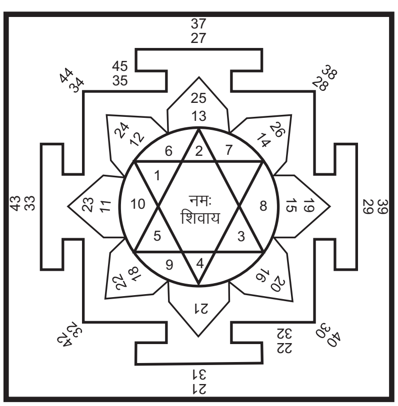

प्रभावशाली तान्त्रिक शिव मंत्र

स्नानादिक क्रिया से निवृत्त हो शुद्ध आसन धारण भोजपत्र पर लिखकर चन्दन अक्षत बेलपत्र पुष्प से पूजन कर–

कर्पूर गौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्र हारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि।।

से मंत्र से स्तुति कर आरती उपरान्त नमः शिवाय का जप एक माला अवश्य करें। सर्व ग्रह शान्ति प्राप्त होगी।

अन्तस्मा बहिःसत्त्वस्त्रिजगत्पालको हरिः।
अन्तः सत्त्वस्तमोबाह्यस्त्रिजगल्लयड्ड(रः।।
अन्तर्वहीरजाश्चैव त्रिजगत्सृष्टिड्ड(र्धिः।
एवं गुणास्त्रिदेवेषु गुणभिन्नः शिवः स्मृतः।।;शिवपुराणद्ध

अर्थात तीनों लोकों के पालन करने वाले भगवान हरि भीतर से तमोगुणी हैं ओर बाहर से सतोगुणी हैं। तीनों लोक का संहार करने वाले भगवान हर भीतर से सतोगुणी है पर बाहर से तमोगुणी है। भगवान ब्रह्मदेव जो तीनों लोक को उत्पन्न करते है भीतर और बाहर उभय रुप में रजोगुणी हैं और भगवान पर ब्रह्मरुप शिव तीनों गुणों से रहित हैं। इसका रहस्य यह है कि सुख का रुप सतोगुण है। दुःख का तमोगुण और क्रिया का रुप रजोगुण है। भगवान विष्णु सृष्टि का पालन करते हैं इस देखने में तो सृष्टि सुख रुप प्रतीति होती है परन्तु भीतर से अर्थात वास्तव में तमोगुणी ही है। इसलिए भगवान विष्णु के वस्त्राभूषण आदि सुन्दर सात्विक होने पर भी स्वरुप श्यामवर्ण है। भगवान शिव सृष्टि का संहार करते हैं वे देखने में तो दुःखद है पर वास्तव में संसार को मिटाकर परमात्मा में एकीभाव कराना सुख स्वरुप है। इसी अभिप्राय से भगवान शंकर का बाहरी श्रृंगार तमोगुणी होने पर भी निज स्वरुप गौर वर्ण है और उनका शीघ्र प्रसन्न होना भी जिसके कारण आशुतोष कहलाते हैं। यह सतोगुण का ही स्वभाव है। भगवान ब्रह्म देव सदा सृष्टि का निर्माण ही किया करते है इसलिए वे रक्तवर्ण है क्योंकि क्रि यात्मक स्वरुप को शास्त्रों ने रक्तवर्ण ही बताया है। इस तर्क न्याय से भगवान विष्णु भी तमोगुणी ही सिद्ध होते हैं। देव परिवार में शिव परिवार ही लोक परिवार के लिए सत्य शुद्ध सिद्ध होता है। इन्हीं से मानवी मनुजता का संरक्षण और दर्शन होता है। मनुष्य में ज्ञान विद्या कर्म होना बाध्यता है। इन बाध्यताओं का निवारण भी शिवजी ने किया है क्योंकि सभी प्राचीन विद्यायें शिवजी से ही प्राप्त है। जिस विद्या को ग्रहण कर मानव काया को`सुरता प्राप्त होती चली आ रही है। शिव शिवा चरित सभी मानव जाति के लिए स्वर्ग सुखदायक है। शिव कोई अवतारी पुरुष न ही, वह तो साक्षात परब्रह्म स्वरुप है।

शिव पूजन विधि

कुछ आवश्यक बातें

पूजा के विविध उपचार है– 1. पंचोपचार– गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य।
दसोपचार में– पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र निवेदन, गंध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य।
षोडसोपचार में– पाद्य, अर्ध्य, आचमन, स्नान वस्त्र, आभूषण, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, आचमनीय, ताम्बूल, स्तवपाठ, तर्पण और नमस्कार।
राजोपचार में– षोडसोपचार के साथ, छत्र, चामर, पादुका, दर्पण।
इसके अलावा अठारह, छत्तीस और चौसठ उपचारों से भी पूजा की जाती है।
आसन समर्पण में आसन के ऊपर पांच पुष्प भी रख लेने चाहिए। छः पुष्पों से स्वागत करना चाहिए। पाद्य में चार पल जल और उसमें श्यामा घास, दूब, कमल और अपराजिता देनी चाहिए। अर्ध्य में चार पल जल ओर गंध पुष्प अक्षत जौ दूब तिल कुशा का अग्र भाग तथा श्वेत सरसों देना चाहिए। आचमनीय में 6 पल जल जायफल लौंग और कंकोल का चूर्ण देना चाहिए। मधुपर्क के बाद वाले आचमन में केवल एक पल विशुद्ध जल ही आवश्यक होता है। स्नान के लिए पचास पल जल का विधान है। वस्त्र बारह अंगुल से ज्यादा नवीन और जोड़ा होना चाहिए। आभरण स्वर्ग निर्मित हो और उसमें मोती आदि जड़े हो। गंध द्रव्य में चन्दन, अगर, कपूर आदि एक में मिला दिये गये हो। एक पल के लगभग उनका परिमाण कहा गया है। पुष्प पचास से अधिक हो। अनेक रंग के हों। धूप गूगल का हो और कास्य पात्र में निवेदन किया जाय। नैवेद्य में एक पुरुष के भोजन योग्य वस्तु होनी चाहिए। चर्व्य चोष्य लेह्य पेय चारों प्रकार की सामग्री हो। दीप कपास की बत्ती से कपूर आदि मिलाकर बनाया जाय। बत्ती की लम्बाई चार अंगुल के लगभग हो दृढ़ हो। दीपक के साथ शिलापिष्ट का भी उपयोग करना चाहिए। इसी को श्री अथवा आक कहते है जो आरती के समय सात बार घुमाया जाता है। दूर्बा और अक्षत की संख्या सौ से अधिक रखनी चाहिए। सभी सामग्री अलग–अलग पात्र मं रखें। पात्र सोने–चांदी–पीतल या मिट्टी के हो। अपनी शक्ति के अनुसार ही करना चाहिए। वस्तु अभाव की चिन्ता नहीं करनी चाहिए। वस्तुओं का प्रयोग में स्नेह और श्रद्धा रखें, आलस्य प्रमाद संकीर्ण भाव न आने पायें।
देवता के स्थान को साफ करना, लीपना, निर्माल्य हटाना अभिगमन कहा जाता है। गंध पुष्प आदि पूजा सामग्री का संग्रह उपादान कहा जाता है। इष्टदेव की आत्मस्वरुप से भावना करना योग कहा जाता है।

मंत्रार्थ का अनुसंधान करते हुए जप करना सूक्त स्तोत्र का पाठ करना गुण नाम लीला आदि का कीर्तन करना वेद शास्त्र पढ़ना स्वाध्याय है। उपचारों के द्वारा अपने आराध्य देव की पूजा इज्या है लेकिन भगवान सदाशिव की पूजा उपासना जल अक्षत पुष्प एवं बम–बम की ध्वनि से अपनी सरलता के कारण पूर्ण मान लेते हैं। कृपा करते हुए सार्ष्टि सामीप्य सालोक्य सायुज्य और सारूप्य मुक्ति प्रदान कर देते हैं।

फूल तोड़ने का मंत्र

प्रातःकालिक स्नानादि कृत्यों के बाद देव पूजा का विधान है। स्नान के बाद ही तुलसी बिल्व पत्र तोड़ने चाहिए। तोड़ने से पहले हाथ पैर धोकर आचमन कर लें ओर पूरब की ओर मुखकर हाथ जोड़कर मंत्र बोले–

मा नु शोकं कुरुष्व त्वं स्थानत्यागं च मा कुरु।
देवतापूजनार्थाय प्रार्थयामि वनस्पते।।

पहला फूल तोड़ते समय वरुणाय नमः दूसरा फूल तोड़ते समय व्योमाय नमः और तीसरा फूल तोड़ते समय पृथिव्यै नमः बोले।

बिल्व पत्र तोड़ने का मंत्र

अमृतोन्व श्री वृक्ष महादेवप्रियः सदा।
गृह्णामि तव पत्राणि शिवपूजार्थमादरात्।।

बिल्व पत्र तोड़ने का निषिद्ध काल– चतुर्थी, अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी और अमावस्या तिथियों को, संक्रान्ति के समय और सोमवार को बिल्व पत्र न तोड़ें। बिल्व पत्र शिवजी को प्रिय होने के कारण, निषिद्ध काल से पहले का रखा हुआ बिल्व पत्र चढ़ाना चाहिए। यदि कहीं पर बड़ी विवशता है तो चढ़ाये हुए बिल्व पत्र को ही धोकर बार–बार चढ़ाता रहे।

बासी जल फूल का निषेध–

जो फूल पत्ते और जल बासी हो गये हो उन्हें देवताओं पर न चढ़ायें किन्तु तुलसी दल और गंगा जल कभी भी बासी नहीं होते हैं। वस्त्र यज्ञोपवीत और आभूषण में भी निर्माल्य का दोष नहीं आता है। माली घर में रखे हुए फूल भी बासी दोष से मुक्त माने गये है। मणि रत्न सुवर्ण वस्त्र आदि से बनाये गये फूल बासी नहीं होते हैं। इन्हें प्रेक्षण कर चढ़ाना चाहिए। मन के द्वारा भावित पुष्प सबसे श्रेष्ठ माने गये हैं। हजारों करोड़ों फूल चढ़ाकर जो फल प्राप्त किया जा सकता है वह केवल एक मानस फूल चढ़ाने से प्राप्त होता है। वाह्य वनस्पति पुष्प तो निर्माल्य होते है, लेकिन मानस पुष्प सर्वदोषहीन होते है। इसलिए पूजाकाल में मानस फूल का अद्भुत आनन्द अवश्य प्राप्त करना चाहिए।

सामान्यतया निषि(फूल

सभी फूल किसी न किसी पर चढ़ाये ही जाते हैं। चढ़ाया गया पुष्प निर्माल्य कहा जाता है। सूंघा गया अंग से लगाया गया फूल भी इसी श्रेणी में आता है। इन्हें न चढ़ायें। भौंरों के सूंघने से फूल दूषित नहीं होता है। अपवित्र बर्तन में रखा गया पुष्प, अपवित्र स्थान से उत्पन्न, आग या धूप से झुलसा, कीड़ों से विद्ध, असुन्दर अथवा जिसकी पंखुड़ियां बिखर गई हो या अधखिला हो, पृथ्वी पर गिरा हो सड़ांध हो, निर्गंध हो, उग्र गंध हो ऐसे पुष्प नहीं चढ़ाये जाते है। बायें हाथ में रखे गये फूल, मलेक्ष्छ मैले कपड़े पहने हो, आक और रेड़ के पत्ते में रखे गये फूल त्याज्य है। कलियों को भी चढ़ाना मना है। फूल को जल में डुबोकर धोना मना है केवल जल से प्रोक्षण कर देना चाहिए। कमल फूल पर कोई निषेध नहीं है।

शिव पूजन के लिए विहित पत्र–पुष्प

भगवान शंकर पर फूल चढ़ाने का बहुत अधिक महत्व है। तपः शील सर्व गुण सम्पन्न वेद में निष्णात किसी ब्राह्मण को सौ सवर्ण दान करने पर जो फल प्राप्त होता है वह भगवान शंकर को सौ फूल चढ़ाने से प्राप्त हो जाता है। कौन पत्र–पुष्प शिव के लिए विहित है कौन–कौन निषिद्ध है नीचे पढ़कर जानकारी प्राप्त करें।

विष्णु भगवान के लिए जो पत्र–पुष्प विहित है वे सब शंकर भगवान पर चढ़ाये जाते हैं। केवल केतकी और केवड़े का पुष्प शिवजी पर निषेध है। शिवजी पर एक आक पुष्प चढ़ाने पर दस सुवर्ण सिक्का के दान का फल प्राप्त हो जाता है। हजार आक के फूलों की अपेक्षा एक कनेर का फेूल, हजार कनेर के फूलों को चढ़ाने की अपेक्षा एक बिल्व पत्र से फल प्राप्त हो जाता है। हजार बिल्व पत्रों की अपेक्षा एक गूमा फूल (द्रोण पुष्प) से प्राप्त हो जाता है। हजार गूमा से बढ़कर एक चिचिडा (अपामार्ग) फूल फल देता है। हजार चिचिडा से बढ़कर एक कुश का फूल, हजार कुश पुष्पों से बढ़कर एक शमी का पत्ता, हजार शमी पत्ता से बढ़कर एक नील कमल हजार नीलकमल से बढ़कर एक धतूरा, हजार धतूरे से बढ़कर एक शमी का फूल होता है लेकिन फूल की जातियों में नीलकमल सबसे सुन्दर एवं बढ़िया होता है। कनेर की कोटि में चमेली, मौलसिरी, पाटला, मदार, श्वेतकमल शमी के फूल और बड़ी भटकैया भी है। धतूरे की कोटि में नागचम्पा ओर पुनांग भी माना गया है। कनेर (करवीर) मौलसिरी (आक) धतूरा पाढर बड़ी कटेरी, कुरैया, कास, मन्दार, अपराजिता, शमी का फूल, कुब्जक शंखपुष्पी, चिचिड़ा, कमल, चमेली,

नागचम्पा, चम्पा, खस, तगर, नागकेसर, किंकिरात (पीले पुष्प वाली कटसरैया), गूमा, शीशम, गूलर, जयन्ती, बेला, पलाश, बेलपत्ता, कुंकुम, केसर, नीलकमल, लालकमल तथा जल थल पर उत्पन्न होने वाले सभी सुगन्धित पुष्प चढ़ाये जाते है।

शिवार्चा में निषि(पत्र–पुष्प

कदम्ब, सारहीन फूल या कठूमर, केवड़ा, गिरीष, तिन्तिणी, बफुल (मौलासिरी) कोष्ठ, कैथ, गाजर, बहेड़ा, कपास, गंभारी, पत्रकंटक, सेमल, अनार, धव, बसन्त ऋतु में खिलने वाला कन्द विशेष, कुन्द, जूही, मदन्ती, सर्ज और दुपहरिया के फूल शंकरजी पर नहीं चढ़ाने चाहिए। कदम्ब बकुल और कुन्द पुष्प नहीं चढ़ाना चाहिए। यदि कदम्ब के पुष्प भादों मास में ही चढ़ाये जायें तो लाभप्रद है। अन्य दिनों में निषेध चाहिए अन्य समय में नहीं। कुन्द फूल केवल माघ मास में चढ़ाना चाहिए अन्य दिनों में नहीं।

पुष्पादि चढ़ाने की विधि

फूल फल और पत्ते जैसे उगते है वैसे ही उन्हें चढ़ाना चाहिए। उत्पन्न होते समय इनका मुख ऊपर की ओर होता है। अतः चढ़ाते समय इनका मुख ऊपर की ओर ही रखना चाहिए। इनका मुख नीचे की ओर न करें। दूर्बा एवं तुलसी दल को अपनी ओर और बिल्व पत्र को नीचे मुख कर चढ़ाना चाहिए। इनसे भिन्न पत्तों को ऊपी मुखकर या नीचे मुख कर दोनों ही प्रकार से चढ़ाया जा सकता है। दाहिने हाथ के करतल को उतान कर मध्यमा, अनामिका ओर अंगूठे की सहायता से फूल चढ़ाना चाहिए।

उतारने की विधि

चढ़े हुए पुष्प को अंगूठे और तर्जनी की सहायता से उतारें। पैरों से कुचलने से बचाकर पवित्र स्थान या पुष्प फेंकने वाले स्थल पर ही फेंके।

पूजा की तैयारी

पूजन करने से पूर्व पूजा की आवश्यक सामग्री तैयार कर रख लेना चाहिए। ताजे जल को कपड़े से छानकर कलश में भरें। उदकुम्भ (कलश) के जल को भी सुवासित करने के लिए कपूर और केशर के साथ चन्दन घिसकर मिला दें। अक्षत को केसर या रोली से हल्का रंग लें।

पूजन सामग्री रखने का प्रकार

पूजन की वस्तु को बायीं ओर सुवासित जल से भरा उदकुंभ (जलपात्र) घंटा, धूपदानी तथा तेल का दीप ओर दायीं ओर घृत का दीप रखें। सामने कुमकुम केसर और कपूर के साथ घिसा हुआ गाढ़ा चन्दन रखें। पुष्प आदि हाथ में तथा चन्दन ताम्र पत्र में रखें। भगवान के आगे चौकोर जल का घेरा डालकर नैवेद्य की वस्तु रखें। सुविधा अनुसार पाठ पोथी हवन आरती आदि वस्तुएं रखना चाहिए। तैयारी सब प्रथम पूर्ण कर लें।

पूजन विधि

भगवान शंकर की पूजा के समय शुद्ध आसन पर बैठकर पहले पवित्री आसन धारण कर शरीर और आसन शुद्ध कर लेना चाहिए। तत्पश्चात पूजन सामग्री को यथास्थान पर रखकररक्षा दीप प्रज्वलित कर स्वस्ति पाठ करें। इसके बाद पूजन का संकल्प कर तदंगभूत भगवान गणेश एवं भगवती गौरी का स्मरण पूर्वक पूजन करना चाहिए। वेद के मंत्र शास्त्र मंत्र या नाम जप मंत्र जिससे सम्भव हो उन्हीं मंत्रों को सदभाव श्रद्धायुक्त हो उन्हीं से करने का अभ्यास बनायें। गायत्री महामंत्र ओर महामृत्यंजय मंत्र का जप अवश्य जुड़ा रहें।

पवित्रीकरण

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षः स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।
पुनातु पुण्डरीकाक्षः पुनातु पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

मंत्रोच्चारण के बाद जल को सिर शरीर पर छिड़क लेवें।

आचमनम्

अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।
अमृतापिधान मसि स्वाहा।
सत्यं यशः श्रीर्मयि, श्रीः श्रयतां स्वाहा।

जल पीकर भाव शुद्धि अपनायें।

प्राणायाम

भूः भूवः स्वः महः जनः तपः सत्यम्।
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।
आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वः ।।

वायु शक्ति द्वारा प्राणशक्ति धारण करें।

न्यासः

वाङ्मे आस्येऽस्तु मुख को। नसोर्मे प्राणोऽस्तु नासिका के छिद्रों को।।
अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु नेत्रों को। कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु दोनों कानों को।
बाह्वोर्मे बलमस्तु दोनों भुजाओं को। ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु दोनों जंघाओं को।
अरिष्टानि मेंऽगानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु समस्त शरीर पर।

पृथ्वी या स्थान पूजन

पृथ्वि ! त्वया धृता लोका देवि ! त्व विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि ! पवित्रं कुरु चासनम्।।

एक चम्मच जल गिराये।

संकल्प

विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य .... श्री साम्ब सदाशिव प्रीत्यर्थं श्री भगवत्साम्ब सदा शिव पूजनमहं करिष्ये।

अभिषेक स्नान ;शिवलिंगद्ध

या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि।।
यामिषुं गिरिशन्तं हस्ते विभर्ष्यस्तवे।
शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिंद्व सीः पुरुषं जगत्।।
शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि।
यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मद्ध सुमना असत्।।
नमोऽस्तु नील ग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुषे।
अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः।।
नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने।।
शु(यत् सलिलं दिव्यं गंगाजलसमं स्मृतम्।
समर्पितं मया भक्त्या शु(स्नानाय गृह्यताम्।।
मन्दाकिन्यास्तु यद् वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

शिवलिंग स्नान के बाद गणेश गौरी नन्दीश्वर वीरभद्र, कार्तिकेय, हनुमान, सूर्य, विष्णु आदि–आदि यथा क्रम से सुविधानुसार स्नान कराकर पूजन प्रक्रिया सम्पन्न करके फिर पुष्प, चन्दन, धूप, दीप, नैवेद्य, प्रसाद वितरण, प्रदक्षिणा मंत्र पुष्पांजलि क्रियाओं को सम्पन्न करना चाहिए।

गणेश

गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफल चारु भक्षणम्।
उमा सुतं शोक विनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपाद पंकजम्।।
विध्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय, लम्बोदराय सकलाय जगर्(ताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय, गौरी सुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।

गणेश स्नान आदि कृत इस मंत्र से सम्पन्न करें।

गौरी

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रङ्कत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्।।
त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या, विश्वस्यबीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्, त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्ति हेतुः।।

नन्दीश्वर

आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन् मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः।।
प्रैतु वाजी कनिक्रदन्नानदद्रासभः पत्वा।
भरन्नाग्निं पुरीष्यं मा पाद्यायुषः पुरा।।

कार्तिकेय

यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्।।

कुबेर

कुविदंग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय।
इहे हैषां ड्डणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम उक्तिं यजन्ति।।

विष्णु

मंगलम् भगवान विष्णुः मंगलं गरुणध्वजः।
मंगलं पुण्डरीकाक्षो मंगलायतनो हरि।।

सूर्य

आ ड्डष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्य च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

हनुमान

मनोजवं मारुततुल्य वेगं जितेन्द्रियं बु(िमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानर यूथ मुख्यं श्रीराम दूतं शिरसा नमामि।।

गायत्री

आयातु वर दे देवि ! त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि।
गायत्रिच्छन्दसां मातः ब्रह्मयोने नमोऽस्तुते।।

सरस्वती

पावकाः नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती यज्ञं वष्टु धियावसुः।
सरस्वतयै नमः।

लक्ष्मी

श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्।
इष्णनिषाणामुम्मऽइदूषाण सर्व लोकं म ऽ इषाण।।

इन्हीं मंत्रों से पूजन प्रार्थना पुष्पादि करते चलें।

दुर्गा शक्ति

जातवेदसे, सुनवाम सोममरातीयतो नि दहाति वेदः।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः।।

इस प्रकार किसी न किसी मंत्रों से देवि देव मंत्रों से अर्चन क्रिया करें।

चन्दन

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुर श्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।
प्रमुंच धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम्।
याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप।।

चन्दन उपलेपित करें।

पुष्पमाला

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि भक्तितः।
मयाहृतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर।।
विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ 2 उत।
अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषंगधिः।।

पुष्प चढ़ावे।

अक्षत

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर।।

अक्षत चढ़ावे।

बिल्व पत्र

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुतम्।
त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।
नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च।
नमः श्रुताय च श्रुत सेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहन न्याय च।।

बिल्व पत्र समर्पित करें।

सुगन्धित द्रव्य

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धानान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

सुगन्धित द्रव्य चढ़ायें।

ऋतुफल

इदं फलं मयादेव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।
याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
वृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुंचन्त्वह्नहसः।।

ऋतुफल चढ़ावें।

धूप

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्व देवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

धूप आघ्रापित करें।

दीप भारती

साज्यं च वर्तिसंयुक्त वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेशं त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।
कर्पूर गौरं करुणावतारं संसारसारं भुतगेन्द्रहारं।
सदावसन्तं ह्रदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि।।
यं ब्रह्मवेदान्त विदो वदन्ति, परं प्रधानं पुरुषं तथान्ये।
विश्वोदगतं कारणमीश्वरं वा, तस्मै नमो विघ्न विनाशनाय।।
यं ब्रह्मावरुणेन्द्र रुद्रमरुतः, स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैः।
वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैः गायन्ति यं सामगाः।।
ध्यानावस्थित तद्गतेन मनसा, पश्यन्ति यं योगिनो।
यस्यान्तं न विदुः सुरासरगणाः देवाय तस्मै नमः।।

दोनों हाथों से आरती लेकर हाथ धो लें।

नैवेद्य

शर्कराखण्ड खाद्यानि दधिक्षीर घृतानि च।
आहारं भक्ष्य भोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।
ध्यायेनिष्ठ महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं,
रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नं।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं,
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिल भय हरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रं।।

नैवेद्य समर्पण में शिव का ध्यान करें।

आचमनीय

आचमनीयम् उत्तरापोऽशनं मुख प्रक्षालनार्थ हस्तप्रक्षालनार्थ च जलं समर्पयामि।

एक–एक चम्मच जल चढ़ायें।

प्रदक्षिणा

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे।।

मंत्र पुष्पांजलि

श्र(या सिक्तया भक्त्या हार्दप्रेम्णा समर्पितः।
मंत्र पुष्पांजलिश्चायं ङ्कपया प्रतिगृह्यताम्।।
नमः सर्वहितार्थाय जगदाधारहेतवे।
साष्टांगोऽयं प्रणामस्ते प्रयत्नेन मया ङ्कतः।।
पापोऽहं पापकर्माऽहं पापात्मा पापसंभवः।
त्राहि मां पार्वतीनाथ सर्वपापहरो भव।।

शिव महिमा अनन्त है। पूजा विधि अपार है। अपनी श्रद्धा रूपी क्रिया अपने सर्व हितकर है। शिवाचरण अपनायें। नमः शिवाय कहते हुए पूजन विधि का समापन करके परमार्थ भाव धारण करें।

मानस पूजा विधि

शिवोपासना के विविध रूप हैं । शिव सगुण साकार रुप में तथा निर्गुण निराकार अमूर्त रुप में भी पूज्य है। शिवोपासना में त्रिपुण्ड धारण भस्मावलेपन रुद्राक्ष धारण का विशेष महत्व दिया गया है। वाह्य पूजा उपचार के अलावा पंचाक्षर मंत्र जप, महामृत्युंजय जप अनुष्ठान भी विभिन्न फलों के प्रदाता हैं। मनः कल्पित एक फूल चढ़ाने पर करोड़ों फूलों का पुण्य मिलता है। इसी प्रकार मानस पूजा भी वाह्य उपचार की अपेक्षा कई गुना अधिक फलप्रद है। इसमें पवित्र मनोभावों की आवश्यकता होती है। मानस पूजा में भक्त अपने इष्ट साम्ब सदाशिव को सुधा सिन्धु से आप्लावित कैलाश शिखर पर कल्पवृक्षों से आवृत्त कदम्ब वृक्षों से युक्त मुक्तामणि मंडित भवन में चिन्तामणि से निर्मित सिंहासन पर विराजमान देखता है। स्वर्गलोक की मंदाकिनी गंगा के जल से अपने आराध्य को स्नान करता है। कामधेनु गौ के दुग्ध से पंचामृत का निर्माण करता है। वस्त्राभूषण भी दिव्य अलौकिक होते है। अपने आराध्य के लिए कुबेर की पुष्पवाटिका से स्वर्णकमल पुष्पों का चयन करता है। वाह्योपचारिक वस्तुओं की तरह मनोवस्तुओं से भी श्रद्धायुक्त अर्पण किया जाता है।

1. लं पृथिव्यात्मकं गन्धं परिकल्पयामि।

   प्रभो ! मैं पृथ्वी रूप गंध (चन्दन) आपको अर्पित करता हूं।
2. हं आकाशात्मक पुष्प परिकल्पयामि।

   प्रभो ! मैं आकाश रुप पुष्प को आपको अर्पित करता हूं।
3. यं वाम्यात्मक धूपं परिकल्पयामि।

   प्रभो ! मैं वायु देवे के रुप में आपको धूप अर्पित करता हूं।

4. वह्न्यात्मक दीपं दर्शयामि।

प्रभो ! मैं आपको अग्नि देव के रुप में दीप प्रदान करता हूं।

5. सौं वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि।

प्रभो ! मैं अमृत के समान नैवेद्य आपको निवेदन करता हूं।

6. सौं सर्वात्मकं सर्वोचारं समर्पयामि।

प्रभो ! मैं सर्वात्मा के रुप में संसार के सभी उपचारों को आपके चरणों में समर्पित करता हूं। इस प्रकार इन भावनाओं से परिपूर्ण सरस एकाग्र बनकर मानस पूजा की जाती है। पाठकों के लाभार्थ मानस पूजा स्तोत्र भी आगे वर्णित है।

रत्नैः कल्पितमासनं हिम जलैः स्नानं च दिव्याम्बरं,
नाना रत्नविभूषितं मृगमदामोदांकितं चन्दनम्।
जाती चम्पक बिल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथा,
दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम्।।

हे दयानिधे ! हे पशुपते ! हे देव ! यह रत्न निर्मित सिंहासन, शीतल जल से स्नान, नानारत्नावलि विभूषित दिव्य वस्त्र, कस्तूरिकागन्ध समन्वित चन्दन जूही, चमपा और बिल्व पत्र से रचित पुष्पांजलि तथा धूप और दीप यह सब मानसिक पूजोपहार ग्रहण कीजिए।

सौवर्णे नवरत्नखण्ड रचिते पात्रे घृतं पायसं,
भक्ष्यं पंचविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकम्।
शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखण्डोज्ज्वलं,
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु।।

मैंने नवीन रत्नखण्डों से रचित सुवर्ण पात्र में घृतयुक्त खीर दूध और दधि सहित पांच प्रकार का व्यंजन कदलीफल शर्बत अनेकों शाक कपूर से सवासित और स्वच्छ किया हुआ मीठा जल तथा ताम्बूल में सब वस्तुएं मन के ही द्वारा बनाकर प्रस्तुत किये हैं। प्रभो ! कृपया इन्हें स्वीकार करें।

छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं,
वीणाभेरिमृदंगकाहलकला गीतं च नृत्यं तथा।
साष्टांगं प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधाह्येतत्समस्तं मया,
संकल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो।।

छत्र, दो चंवर, पंखा, निर्मल, दर्पण, वीणा, भेरी, मृदंग, दुन्दुभी के वाद्य, गान और नृत्य साष्टांग प्रणाम नाना विधि स्तुति में सब मैं संकल्प से ही आपको समर्पण करता हूं। प्रभो ! मेरी यह पूजा ग्रहण कीजिए।

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं,
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः।
संचारः पदयोः प्रदक्षिणाविधिः स्तोत्राणि सर्वागिरो,
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम्।।

हे शम्भो ! मेरी आत्मा आप है। बुद्धि पार्वती जी है। प्राण आपके गण है। शरीर आपका मन्दिर है। सम्पूर्ण विषय भोग की रचना आपकी पूजा है। निद्रा समाधि स्वरुप है। मेरा चलना फिरना आपकी परिक्रमा है तथा सम्पूर्ण शब्द आपके स्तोत्र है। इस प्रकार जो–जो भी कर्म करता हूं वह सब आपकी आराधना ही है। तन–मन–वचन क्रियाओं को स्तुति अनुसार रखकर जीवन पर्यन्त चलना मानसिक पूजा विधि है।

करचरणङ्कृतं वाक्कायजं कर्मजं वा,
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व,
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो।।

हे प्रभो ! मैंने हाथ, पैर, वाणी, शरीर, कर्म नेत्र अथवा मन से जो भी अपराध किये हो वे विहित हो अथवा अविहित उन सबको आप क्षमा करें। श्रीमहादेव ! हे शंकर ! आपकी जय हो।

महाशिवरात्रि व्रत पर्व यज्ञ विधि

व्रतादिक नियमों का पालन करते हुए यज्ञीय अवसर आने पर यज्ञीय कर्मकाण्ड ही अपनावें। चित्र आदि शिव परिवार के हों। यज्ञीय व्यवस्था विधान की तैयारी कर लें।

गुरु वन्दना

ब्रह्मानन्दं परम सुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं,
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्वमस्यादिलक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं,
भावातीतं त्रिगुण रहितं सद् गुरुं तं नमामि।।1।।
अखण्डानन्दबोधाय शिष्य संतापहारिणे।
सच्चिदानन्दरूपाय तस्मै श्री गुरवे नमः।।2।।

कर्मकाण्ड के लिए वाक्देवी सरस्वती वन्दना

लक्ष्मीर्मेधा धरापुष्टिः, गौरी तुष्टिः प्रभा धृतिः।
एताभिः पाहि तनुभिः, अष्टाभिर्मां सरस्वति।।1।।
सरस्वत्यै नमो नित्यं, भद्रकाल्यै नमो नमः।
वेद वेदान्तवेदांग, विद्यास्थानेभ्य एव च।।2।।

मातस्त्वदीयपदपंकज भक्तियुक्ताः,
ये त्वां भजन्ति निखिलानपरान्विहाय।
ते निर्जरत्वमिह यान्ति कलेवरेण,
भू र्वांवायुगगनाम्बुविनिर्मितेन।।3।।

यज्ञीय क्रिया संचालन करने में व्यास वन्दना भी करें।

व्यासाय विष्णु रूपाय, व्यासरूपाय विष्णवे।
नमो वे ब्रह्मनिधये, वासिष्ठाय नमो नमः।।
नमोऽस्तु ते व्यास विशालबु(, फुल्लारविन्दायतपत्रनेत्र।
येन त्वया भारत तैल पूर्णः, प्रज्वालितो ज्ञानमयः प्रदीपः।।

यज्ञीय वस्तुओं के लिए पवित्रीकरणम्– जल छिड़कें।

पुनाति ते परिस्रुत सोम सूर्यस्य दुहिता। वारेण शश्वता तना।।
पुनन्तु मा देवजनाः, पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वा भूतानि, जातवेदः पुनीहि मा।।
यन्ते पवित्रमर्चिषि, अग्ने विततमन्तरा। ब्रह्मतेन पुनातु मा।।
पवमानः सो अद्य नः, पवित्रेण विचर्षणिः। यः पोता स पुनातु मा।।
उमाभ्यां देव सवितः, पवित्रेण सवेन च। मां पुनीहि विश्वतः।।

यज्ञ संचालन में याजकों पर मंगलाचरण मंत्र से अक्षत छिड़के।

भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा, भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवा सस्तनूभिः व्यशेमहि देवं हितं यदायुः।।

भाव दोष दूर करने के लिए पवित्रीकरणम्–

अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं, स बाह्याभ्यन्तरं शुचिः।। पुनातु पुण्डरीकाक्षः पुनातु।।

मन वाणी अन्तस्थल की शुद्धि के लिए आचनम्–

अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।।1।।
अमृतापिधानमसि स्वाहा।।2।।
सत्यं यशः श्रीर्मयि, श्रीः श्रयतां स्वाहा।।3।।

सरस्वती शक्ति आगमन स्थिरता के लिए शिखा वन्दनम्–

चिद्रूपिणि महामाये, दिव्यतेज समन्विते।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये, तेजोवृ(कुरुष्व मे।।

प्राणबल एवं प्राणमय कोष की साधना के लिए प्राणायाम–

भूः भुवः स्वः महः जनः तपः सत्यम्।
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।
आपोज्योती रसोऽमृतं, ब्रह्मभूर्भुव स्वः ।।

अंग सर्वांगों में दैवी शक्ति धारण के लिए न्यासः— यह शिव शक्ति के साकार होने वाला कृत्य है। अगला कृत्य पृथ्वी पूजन शिव शक्ति के सृष्टि का रूप है।

वाङ मे आस्येऽस्तु मुख को जल से स्पर्श करें। नसोर्मे प्राणोऽस्तु नासिका को। अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु दोनों नेत्रों को। कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु दोनों कानों को। बाह्वोर्मे बलमस्तु दोनों भुजाओं को। ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु दोनों जंघाओं को।

अरिष्टानिं मेऽ ानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु समस्त शरीर पर जल छिड़कें।

पृथ्वी पूजनम्

पृथ्वि ! त्वया धृता लोका, देवि ! त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि ! पवित्रं कुरु चासनम्।।

सत्कार्यों को पूर्ण कराने वाला अंग संकल्प—

विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो शिवरात्रिव्रतस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य, अघ श्री ब्रह्मणो द्वितीय परार्धे श्री श्वेतबाराह कल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे, भूर्लोके जम्बूदीपे, भारतवर्षे भरत खण्डे आर्यावर्त्तैकदेशान्तर्गते .... क्षेत्रे, मासानां मासोत्तमेमासे .... मासे .... पक्षे .... तिथौ .... वासरे .... गोत्रोत्पन्नः .... नामाऽहं सतप्रवृत्ति सम्वर्धनाय दुष्प्रवृत्ति उन्मूलाय, लोक कल्याणाय आत्मकल्याणाय वातावरणपरिष्काराय, उज्ज्वल भविष्य कामनापूर्तये च प्रबल पुरुषार्थ करिष्ये। अस्मै प्रयोजनाय च कलशादिः आवाहित देवतापूजन पूर्वकम् शिव यज्ञ कर्म सम्पादनार्थ संकल्पं अहं करिष्ये।

यज्ञोपवीत धारणम्

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं, प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्रयं प्रतिमुंच शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

जीर्णोपवीत विसर्जनम्

एतावनिपर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात्ते परित्यागो, गच्छ सूत्र यथा सुखम्।।

सद्भावना पाने के लिए त्रिपुण्ड्र या चन्दन धारणम्

चन्दनस्य महत्पुण्यं, पवित्रं पाप नाशकम्।
आपदां हरते नित्यं, लक्ष्मीस्तिष्ठति सर्वदा।।

रक्षा सूत्रम हाथों को बन्धित रखना

व्रतेन दीक्षामाप्नोति, दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्र(ामाप्नोति, श्र(या सत्यमाप्यते।।

पूजा पीठ का मुख्य पूजन वस्तु कलश पूजन

कलश स्थापन एवं पूजन

तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानः, तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशं, **समानऽआयुः प्रमोषीः।।**
मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य, वृहस्पतिर्याज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं, यज्ञं समिमं दधातु। विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामोउम्प्रतिष्ठ।।

वरुणाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

तत्पश्चात् जल, गंध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से कलश पूजन करें।

गन्धाक्षतं, पुष्पाणि, धूपं, दीपं, नैवेद्यं समर्पयामि।

कलशस्थ देवताभ्यो नमः।।

निम्न मंत्र से कलश प्रतिष्ठित देवों की कलश प्रार्थना करें।

कलशस्य मुखे विष्णुः, कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा, मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।1।।
कु क्षौ तु सागराः सर्वे, सप्त दीपा वसुन्धरा।
)ग्वेदोऽथ यजुर्वेदः, सामवेदो ह्यथर्वणः।।2।।
अंगैश्च सहिताः सर्वे, कलशन्तु सामश्रिताः।
अत्र गायत्री सावित्री, शान्ति पुष्टिकरी सदा।।3।।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि, त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिता।
शिवः स्वयं त्वमेवासि, विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।।4।।
आदित्या वसवो रुद्रा, विश्वेदेवा सपैतृकाः।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि, यतः कामफल प्रदाः।।5।।
त्वत्प्रसादादियं यज्ञं, कर्त्तुमीहे जलोद्भव।
सान्निध्यं कुरु मे देव ! प्रसन्नो भव सर्वदा।।6।।

देव स्वागत में दीप पूजनम्

अग्निर्ज्योतिज्योर्तिरग्निः स्वाहा। सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा। सूर्यो वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्य्यो ज्योतिः स्वाहा।।

देव और शिवगण आवाहनम

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरूरेव महेश्वरः।
गुरुरेव परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः।।
अखण्डामण्डलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः।।
श्री गुरवे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

वेदमाता, देवमाता, विश्वमाता सद्ज्ञान की अधिष्ठात्री गायत्री

आयातु वरदे देवि ! त्र्यक्षरे ब्रह्म वादिनि।
गायत्रिच्छन्दसां मातः, ब्रह्म योने नमोऽस्तुते।।
श्री गायत्र्यै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।
ततो नमस्कारं करोमि।

स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्ताम् पावमानी द्विजानाम् आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्। मह्यं दत्वा ब्रजत ब्रह्मलोकम्। नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये, सहस्त्रपादाक्षि शिरोरुबाहवे।

सहस्त्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्त्रकोटी युग धारिणे नमः।।

कल्याणकारी प्रवर्तक अनुशासन के सूत्रधार शिव

वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं, वन्दे जगत्कारणम्।
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं, वन्दे पशूनाम्पतिम्।।
वन्दे सूर्यं शशांकवह्निनयनं, वन्दे मुकुन्दप्रियम्।
वन्दे भक्त जनाश्रयं च वरदं, वन्दे शिवं शकरं।।
श्री शिवाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।
त्र्यम्बकं यजामहे, सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिवबन्धनान्, मृत्योर्मुक्षीयमाऽमृतात्।।
रुद्राः स सृज्यपृथिवीं, बृहज्ज्योतिः समीधिरे।
तेषां भानुरजस्र ऽ, इच्छुक्रो देवेषु रोचते।।
याते रुद्र शिवातनूः, शिवा विश्वाहा भेषजी।
शिवा रुतस्य भेषजी, तया नो मृड जीवसे।।
श्री शिवाय नमः।

कल्याणकारी जग जननी भवानी

हिमाद्रि तनयां देवीं, वरदां शंकर प्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं, गौरीमावाहयाम्यहम्।।
शिवायै नमः आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।
सर्वमंगलमांगल्यै, शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि, नारायणि नमोऽस्तुते।।

विवेक के प्रतीक प्रथम पूज्य गणेश

लम्बोदरं ! नमस्तुभ्यं, सततं मोदक प्रियं।
निर्विघ्नं कुरु मे देव, सर्वकार्येषु सर्वदा।।
अभीप्सितार्थ सि(यर्थं, पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविध्नहरस्तस्मै, गणाधिपतये नमः।।
गणेशाय नमः आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

स्वामी कार्तिकेय आवाहन

यदक्रन्दः प्रथमं जायमान, ऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू, उपस्तुत्यं महिजातं ते अर्वन्।।
श्री कार्तिकेय देवाय नमः।

शिवगण आवाहन

भद्रो नो अग्निराहुतो भद्राऽरातिः।,
सुभग भद्रो अध्वरः। भद्राऽउत प्रशस्तयः।।
शिवगणै देवाय नमः।

पापवृत्ति हारक गंगा

विष्णुपादाब्जसम्भूते, गंगे त्रिपथ गामिनि।
धर्म द्रवेति विख्याते, पापं मे हर जाह्नवि।।
गंगा देव्यै नमः।

शान्ति शीतल प्रतीक चन्द्रदेव

इमं देवाऽअसपत्न सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएषवोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना राजा। चन्द्रमसे नमः।

सृष्टिकर्ता के स्रोत ब्रह्मा

त्वं वै चतुर्मुखो ब्रह्मा सत्यलोक पितामहः।
आगच्छ मण्डले चास्मिन्, मम सर्वार्थ सि(ये।।
ब्रह्मणे नमः।

पालनकर्ता विष्णु

शान्ताकारं भुजगशयनं, पद्मनाभं सुरेशं।
विश्वाधारं गगनसदृशं, मेघवर्णं शुभांगम्।।
लक्ष्मीकांतं कमलनयनं, योगिभिर्ध्यानगम्यम्।
वन्दे विष्णुं भव भयं हरं, सर्व लोकैकनाथम्।।

ज्ञान कला की देवी सरस्वती

शुक्लां ब्रह्म विचार सारपरमाम् आद्यां जगद्व्यापिनीं।
वीणापुस्तक धारिणीमभयदां, जाड्यान्धकारापहाम्।।
हस्ते स्फाटिक मालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम्।
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बु(्र प्रदां शारदाम्।।

वैभव की अधिष्ठात्री लक्ष्मी

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं, सुवर्णा हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं, जातवेदोमऽआवह।।

दुष्टवृत्ति संहारक काली देवी

कालिकां तु कलातीतां कल्याण ह्रदयाम् शिवाम्।
कल्याण जननीं नित्यं, कल्याणीं पूजयाम्यहम्।।

सत्साहस की अधिष्ठात्री मां दुर्गा

शरणागत दीनार्त परित्राणपरायणे।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते।।

अदृश्य रुप से चेतना शक्ति वास्तुदेव

नागपृष्ठ समारूढं, शूलहस्तं महाबलम्।
पाताल नायकं देवं, वास्तुदेवं नमाम्यहम्।।

समर्थता के प्रतीक नवग्रह

ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्त कारी भानुः शशी भूमि सुतोबुधश्च।
गुरुश्व शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वेग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु।।

नर नारायण प्रतीक श्रीरामचन्द्र जी

लोकाभिरामं रणरंगधीरं, राजीव नेत्रं रघुवंश नाथम्।
कारुण्य रूपं करुणाकरं तं, श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये।।

ब्रह्मचर्य के प्रतीक हनुमान जी

मनोजवं मारुततुल्यवेगं, जितेन्द्रियं बु(िमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानर यूथ मुख्यं श्रीराम दूतं शिरसा नमामि।।

सर्वमंगलकारी देवों को

मंगलम् भगवान विष्णुः, मंगलम् गरुणध्वजः।
मंगलं पुण्डरीकाक्षो, मंगलायतनो हरिः।।

स्थान देव

क्षेत्रपालान्नमस्यामि सर्वारिष्टानिवारकान्।
अस्य अयागस्य सि(यर्थं पूजयाराधितान्मया।।

देव पूजन वन्दन बाद सर्वदेव नमस्कार

सि(ि बु(ि सहिताय श्री मन्महागणाधिपतये नमः।
श्री लक्ष्मी नारायणाभ्यां नमः। उमामहेश्वराय नमः।।
वाणी हिरण्यगर्भाभ्यां नमः। शची पुरन्धराभ्यां नमः।।
माता पितृ चरणकमलेभ्यो नमः। कुलदेवताभ्यो नमः।।
इष्ट देवताभ्यो नमः। ग्राम देवताभ्यो नमः।।
स्थान देवताभ्यो नमः। वास्तु देवताभ्यो नमः।।
सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः।।
सर्वेभ्यस्तीर्थेभ्यो नमः। गायत्री देव्यै नमः।।
एतद्कर्म प्रधान शिवम् शिवा व्रताभ्यां नमः।
पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।

षोडसोपचार पूजनम्

सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। आवाहयामि स्थापयामि।
शिवाय नमः। आसनं समर्पयामि।
शम्भवे नमः। पाद्यं समर्पयामि।
महेश्वराय नमः। अर्घ्यं समर्पयामि।
शंकराय नमः। आचनम् समर्पयामि।
शम्भवाय नमः। स्नानम् समर्पयामि।
ज्येष्ठाय नमः। वस्त्रं समर्पयामि।
श्रेष्ठाय नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि।
कालाय नमः। गन्धं विलेपयामि।
कल विकरणाय नमः। अक्षतान् समर्पयामि।
बलाय नमः। धूपं माघ्रापयामि।
बलप्रमथनाय नमः। दीपं दर्शयामि।
नीलकण्ठाय नमः। नैवेद्यं निवेदयामि।
कपर्दिने नमः। ताम्बूल पूगीफलानि समर्पयामि।
भवाय नमः।)तुकालोऽ्तफलानि समर्पयामि।
त्रिलोकेशाय नमः। अभिषेकं समर्पयामि।
शिव प्रियाय नमः। त्रिदलं त्रिगुणाकारं, त्रिनेत्रं च त्रिधायुधम्।
त्रिजन्म पापसंहारं, बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।
दर्शनं बिल्वपत्रस्य, स्पर्शनम् पापनाशकम्।
अघोर पाप संहारं, बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।
बिल्वपत्र धतूरादि पुष्पाणि समर्पयामि।।

ततो नमस्कारम् करोमि

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय, भस्मांगरागाय महेश्वराय।
नित्याय शु(ाय दिगम्बराय, तस्मै न काराय नमः शिवाय।।
मंदाकिनी सलिल चन्दन चर्चिताय, नन्दीश्वर प्रमथनाथ महेश्वराय।
मन्दार पुष्प बहुपुष्प पूजिताय, तस्मै म काराय नमः शिवाय।।
शिवाय गौरी वदनाब्जवृन्द, सूर्याय दक्षाध्वर नाशकाय।
श्री नीलकंठाय वृषध्वजाय, तस्मै शि काराय नमः शिवाय।।
वशिष्ठ कुम्भोद्भवगौतमार्य, मुनीन्द्र देवार्चित शेखराय।
चन्द्रार्कवैश्वानर लोचनाय, तस्मै व काराय नमः शिवाय।।
यज्ञ स्वरूपाय जटाधराय, पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय, तस्मै य काराय नमः शिवाय।।

अशिव त्याग संकल्प लें अक्षत पुष्प भगवान शिव पर चढ़ावें।

अमंगलानां शमनं, शमनं दुष्कृतस्य च।
दुःस्वप्ननाशनं धन्यं, प्रपद्येऽहं शिवं शुभम्।।

.... नामाऽहं शिवरात्रिपर्वाणि भगवतः शिव प्रीतये तत्सन्निधौ अशिव .... चिन्तन ...... आचरण .... व्यवहारत्यागानां निष्ठापूर्वकं संकल्पमहं करिष्ये। तत्प्रतीकरूपेण .... दोषं त्यक्तुं संकल्पयिष्ये।

तदन्तर कल्याणकारी घोषणा स्वस्तिवाचनम्– पुष्पाक्षत हाथ में रखें।

गणानां त्वा गणपति हवामहे, प्रियाणां त्वा प्रियपतिं हवामहे,
निधीनां त्वा निधिपति हवामहे, वसोमम।
आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।।
स्वस्ति न ऽ इन्द्रो वृ(श्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमि, स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।
पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु, पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।
विष्णो रराटमसि विष्णोः, श्नप्त्रे स्थो विष्णोः।
स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि, वैष्णवमसि विष्णवे त्वा।।

अग्निर्देवता वातो देवता, सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता, वसवो देवता रुद्रा देवता, ऽऽदित्यादेवता मरुतो देवता, विश्वे देवा देवता, वृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता।।

द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिः, पृथिवी शान्तिरापः, शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः, शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व शान्तिः, शान्तिरेव शान्तिः, सा मा शान्तिरेधि।।

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न ऽ आ सुव।।

शान्तिः शान्तिः शन्तिः।। सर्वारिष्टसुशान्तिर्भवतु।।

देवतत्व रक्षक रक्षा विधान– अक्षत चारों दिशाओं में फेंके।

पूर्वे रक्षतु बाराहः आग्नेय्यां गरुणध्वजः।
दक्षिणे पद्मनाभस्तु, नै)त्यां मधुसूदनः।।1।।
पश्चिमे चैव गोविन्दो, वायव्यां तु जनार्दनः।
उत्तरे श्रीपतिः रक्षेद् ऐशान्यां हि महेश्वरः।।2।।
ऊर्ध्व रक्षतु धाता वो ह्यधोऽनन्तश्च रक्षतु।
अनुक्तमपि यत् स्थानं रक्षत्वीशो ममाद्रिधृक।।3।।
अपसर्पन्तु ते भूताः ये भूता भूमि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्त्तारः ते गच्छन्तु शिवाज्ञया।।4।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन यज्ञकर्म समारभे।।5।।

यज्ञ के लिए अग्नि स्थापन पूजन

भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा। तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि, पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे। अग्निं दूतं पुरोदधे, हव्यवाहमुपब्रुवे। देवाँऽआसादयादिह।।

अग्नये नमः। आवाहयामि स्थापयामि ध्यायामि। जलं, गन्धाक्षतम्, पुष्पाणि, धूपं, दीपं, नैवेद्यं समर्पयामि।

अग्नि शक्ति गायत्री एवं अग्निदेव सविता स्तवनम्

यन्मंडलं दीप्तिकरं विशालं, रत्नप्रभं तीव्रमनादिरूपम्।
दारिद्र्य दुःख क्षय कारणं च, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।।1।।
यन्मण्डलं देवगणैः सुपूजितम् विप्रैः स्तुतं मानवमुक्तिकोविदम्।
तं देव देवं प्रणमामि भर्गं पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।।2।।
यन्मण्डलं ज्ञानघनं त्वगम्यं त्रैलोक्य पूज्यं त्रिगुणात्मरूपम्।
समस्त तेजोमय दिव्यरूपं पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।।3।।
यन्मण्डलं गूढमति प्रबोधं धर्मस्य वृ(कुरुते जनानाम्।
यत्सर्वपापक्षय कारणं च पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।।4।।
यन्मण्डलं व्याधि विनाशदक्षं यदृग् यजुः सामसु सम्प्रगीतम्।
प्रकाशितं येन च भूर्भुवः स्वः पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।।5।।
यन्मण्डलं वेद विदो वदन्ति गायन्ति यच्चारण सि(संघा।
यद्योगिनोयोगजुषां च संघा पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।।6।।
यन्मण्डलं सर्व जनेषु पूजितं ज्योतिश्च कुर्यादिह मर्त्यलोके।
यत्काल कालादिमनादिरूपम् पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।।7।।
यन्मण्डलं विष्णु चतुर्मुखास्यं यदक्षरं पाप हरं जनानाम्।
यत्काल कल्पक्षयकारणं च पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।।8।।
यन्मण्डलं विश्व सहजां प्रसि(उत्पत्ति रक्षा प्रलयप्रगल्भम्।
यस्मिन् जगत्संहरतेऽखिलं च पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।।9।।
यन्मण्डलं सर्वगतस्य विष्णोः आत्मा परंधाम विशु(तत्वम्।
सूक्ष्मान्तरैर्योगपथानुगम्यं पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।।10।।
यन्मण्डलं ब्रह्मविदो वदन्ति गायन्ति यच्चारण सि(संघाः।
यन्मण्डलं वेद विदः स्मरन्ति पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।।11।।
यन्मण्डलं वेदविदोपगीतं यद्योगिनां योग पथानुगम्यम्।
तत्सर्व वेदं प्रणमामि दिव्यं पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।।12।।

हवा देकर अग्नि प्रदीपनम्

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि, त्वमिष्टा पूर्ते स सृजेथामयं च।
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन्, विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।।

चार समिधायें घी में डुबोकर आहुति दें।

समिधादानम्

1. अयन्त इध्य आत्मा, जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व। चे(वर्धय चास्मान् प्रजया, पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन, अन्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदं अग्नये जातवेदसे इदं न मम्।

2. समिधाऽग्निं दुवस्यत, घृतैर्बोधयतातिथिम्।
आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा। इदं अग्नये इदं न मम्।।

3. सुसमि(ाय शोचिषे, घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा। इदं अग्नये जातवेदसे इदं न मम्।।

4. तं त्वा समिद्भिरंगिरो, घृतेन वर्धयामसि। वृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा। इदं अग्नये अंगिरसे इदं न मम्।।

यज्ञ अग्नि और गायत्री जल भाव से जल प्रसेचनम्

अदितेऽनुमन्यस्व। इति पूर्वे। अनुमतेऽनुमन्यस्व । इति पश्चिमे।

सरस्वत्यनुमन्यस्व। इति उत्तरे। देव सवितः प्रसुव यज्ञं, प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः, केतं नः पुनातु, वाचस्पतिर्वाचं नःस्वदतु। इति चतुर्दिक्षु।

सात बार आज्याहुतिः

प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदं नमम्।।
इन्द्राय स्वाहा। इदं इन्द्राय इदं नमम्।।
अग्नये स्वाहा। इदं अग्नये इदं नमम्।।
सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय इदं नमम्।।
भूः स्वाहा। इदं अग्नये इदं नमम्।।
भुवः स्वाहा। इदं वायवे इदं नमम्।।
स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय इदं नमम्।।

संकट निवारक शिव मंत्राहुतिः

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीयमाऽमृतात्।।
इदं महामृत्युंजयाय इदं नं मम्।।

गायत्री मंत्राहुतिः

भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।
इदं गायत्र्यै इदं न मम्।।

भवानी मंत्राहुतिः

विश्वेसरि महादेव्यै शिवायै सर्वकारिण्यै।
त्वं च गौर्येः भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्।।
स्वाहा। इदं शिवायै इदं न मम्।।

गणेश मंत्राहुतिः

एक दंष्ट्राय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो बु(िः प्रचोदयात्।
स्वाहा। इदं गणेशाय इदं न मम्।।

स्विष्टकृत होमः

यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वान्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत् स्विष्टकृद् विद्यात्सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे। अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते, सर्व प्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां, सम(िर्यित्रे सर्वान्नः कामान्त्सम(र्य स्वाहा। इदं अग्नये स्विष्टकृते इदं न मम्।।

पूर्णाहुतिः

पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।
पूर्णादर्वि परापत, सुपूर्णा पुनरापत।
वस्नेव विक्रीणा वहा, इषमूर्ज शतक्रतो स्वाहा।।
सर्वं वै पूर्ण स्वाहा।। तीन बार कहें।

स्थिति अनुसार आहुतियों में कमी व वृद्धि की जा सकती हैं।

स्नेह का सौजन्य वसोर्धारा

वसोः पवित्रमसि शतधारं, वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्।
देवस्त्वा सविता नुनातु वसोः, पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा।।

देव आरती

यं ब्रह्म वेदान्तविदो वदन्ति, परं प्रधानं पुरुषं तथान्ये।
विश्वोद्गतेः कारणमश्विरं वा, तस्मै नमो विघ्न विनाशनाय।।
यं ब्रह्मा वरुणेन्द्ररुद्रमरुतः, स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैः,
वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैः, गायन्ति यं सामगाः।
ध्यानावस्थित तद्गतेन मनसा, पश्यन्ति यं योगिनो,
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणाः, देवाय तस्मै नमः।।

आरती लेकर प्रणीता पात्र में टपकाया घृत हाथ में लगाकर कुण्ड में तपाये। प्रसाद आशीर्वाद रुप में अंगों में लगायें। तपाये गये हाथ को मुख में, कान में, आंख में लगायें, नाक से सूघें। महाप्रसाद स्वरुप ग्रहण करें।

घृतावघ्राणम्

तनूपा अग्नेऽसि, तन्वं मे पाहि।
आयुर्दा अग्नेऽसि, आयुर्मे देहि।
वर्चोदा अग्नेऽसि, वर्चो मे देहि।
अग्ने यन्मे तन्वाऽ, ऊनन्तन्म आपृण।।
मेधां मे देवः, सविता आदधातु।
मेधां मे देवी, सरस्वती आदधातु।
मेधां मे अश्विनौ, देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ।

भस्मधारणम्

त्र्यायुषं जमदग्ने, इति ललाटे।
कश्यपस्य त्र्यायुषम्, इति ग्रीवायाम्।
यद्देवेषु त्र्यायुषम्, इति दक्षिण बाहुमूले।
तन्नो अस्तु, त्र्यायुषम्, इति हृदि।

क्षमा प्रार्थना

आवाहनं न जानामि, नैव जानामि पूजनम्।
विसर्जनं न जानामि, क्षमस्व परमेश्वर।।
मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यतपूजितं मया देव ! परिपूर्णं तदस्तु मे।।
यदक्षर पदभ्रष्टं, मात्राहीनं च यद् भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव ! प्रसीद परमेश्वर।।
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या, तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति, सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।
प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः, सम्पूर्णं स्यादितिश्रुतिः।।

साष्टांग नमस्कार

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्स्रमूतये, सहस्त्रपादाक्षि शिरोरुबाहवे।
सहस्त्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्त्रकोटी युग धारिणे नमः।।
हर विश्वाऽखिलाधारं निराधारं निराश्रय।
त्रिलोकेशाय नमः शम्भो गृहाण वरदो भव।।

शुभकामना

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां, न्याय्येन मार्गेण महीं महीशाः।
गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं, लोकाः समस्ताः सुखिनोभवन्तु।।
सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद्दुःखमाप्नुयात्।।
श्र(ां मेधां यशः प्रज्ञां, विद्यां पुष्टिं श्रियं बलम्।
तेज आयुष्यमारोग्यं, देहि मे हव्य वाहन।।

पुष्पांजलि

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः, तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त, यत्रपूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।
नमः ओंकाररूपाय वेदरूपाय ते नमः।
अलिंगलिंगरूपाय विश्वरूपाय ते नमः।।
मंत्र पुष्पांजलिं समर्पयामि।।

शान्ति अभिसिंचनम् कलश जल छिड़के।

द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिः, पृथिवी शान्तिरापः, शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः, शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः, सर्वं शान्तिः, शान्ति रेव शान्तिः, सा मा शान्तिरेधि।।
शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः। सर्वारिष्ट सुशान्तिर्भवतु।।

बचा हुआ जल सूर्याघ्र्यदान करें।

सूर्यदेव ! सहस्त्रांशों, तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या, गृहाणार्ध्यं दिवाकर।।
वृषश्चण्डं वृषश्चैव सोम सूत्रं पुनर्वृषम्।
चण्डश्च सोमसूत्रश्च पुनश्चण्डं पुनर्वृषम्।।
यानि कानि च पापानि जन्मान्तर ड्डतानि च।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिणं पदे पदे।।
शिवाय नमः। उमामहेश्वराय नमः।।

विसर्जनम्

गच्छ त्वं भगवन्नग्ने, स्वस्थाने कुण्डमध्यतः।
हुतमादाय देवेभ्यः, शीघ्रं देहि प्रसीद मे।।
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ, स्वस्थाने परमेश्वरः।
यत्र ब्रह्मादयो देवाः, तत्र गच्छ हुताशनः।।
उग्रो महेश्वरश्चैव शूल पाणिः पिनाक धृक्।
शिवः पशुपतिश्चैव महादेव विसर्जनम्।।
ईशानः सर्व विद्यानामोंकारो भुवनेश्वर।
कैलाशं गच्छ देवेश पुनरागमनाय च।।
यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्।
इष्ट कामसमृ(यर्थं पुनरागमनाय च।।
गायन्ति यस्य चरितानि महा्ुतानि, पद्मो्वो्वमुखाः सततं मुनीन्द्राः।
ध्यायन्ति यं यमिनमिन्दुकलावतंसं, सन्तः समाधिनिरतास्तमहं नमामि।।

आपके अत्यन्त अद्भुत चरितों का गान कोई ऐसे वैसे नहीं, नारदादि बड़े–बड़े महामुनि भी नहीं कर पाते है। साधु शिरोमणि योगीश्वर भी समाधि लगाकर आपही का ध्यान किया करते है। ऐसे चन्द्रशेखर सदाशिव परिवार को पुनरपि प्रणाम करता हूं।

आदि देव महादेव चन्द्रशेखर शिव की – जय !
जगतजननी गौरा पार्वती माता की – जय !
लोकमंगलकारी गणेश भगवान की – जय !
मानवी काया के संरक्षक षडानन की – जय !
शिवकथा का गान करने वाले शास्त्रों की – जय !
नन्दी आदि शिव भक्तों व गणों की – जय !
वर्तमान समस्याओं का समाधान
करने वाले हर–हर महादेव की – जय !

शिव शक्ति कथा ;शिवायनद्ध
के सप्त अध्यायों का संक्षिप्त विवरण

प्रथम अध्याय– इस खण्ड में वन्दना, शिवलिंग महिमा, शिव पूजन विधि, शिवरात्रि व्रत महिमा, ज्योति लिंग आदि का विवरण है।

द्वितीय अध्याय– इस द्वितीय खण्ड में सूत शौनक सम्वाद, स्थानिक प्रभाव, सती का योगाग्नि में प्रवेश, शिव पार्वती विवाह एवं दाम्पत्य जीवन का प्रसंग वर्णित है।

तृतीय अध्याय– सृष्टाय खण्ड में शिव शिवा महिमा, काशी प्रवास एवं गृहस्थ आश्रम की महिमा का प्रसंग है।

चतुर्थ अध्याय– कुमाराय खण्ड में तारक वध, स्कन्ध उत्पत्ति, गणेश जन्म विवाह आदि का परिचय मिलता है।

पंचम अध्याय– देवाय खण्ड शिव महिमा एवं लोक हितार्थ अनेक अवतारों का परिचय प्रदान करता है।

षष्टम अध्याय– रुद्राय खण्ड में शिवजी द्वारा विध्वंस किये गये अनेक असुरों का युद्ध परिचय है।

सप्तम अध्याय– शान्ताय खण्ड में शिव शक्ति द्वारा प्राप्त जीवनोपयोगी उपदेशों के साथ शिव महत्व का वर्णन किया गया है।

सभी खण्डों को प्रायः शिव शक्ति, वंश विचार, विद्यात्व, देवत्व, सत्य शक्ति बल एवं शान्त शक्ति का प्रतीक बनाकर लिखा गया है। शिव शक्ति का जीवनोपदेश मानव जीवन के लिए सर्वोपरि मंगलदायी एवं सुखानुकूल है।

आरती

आरति सत्यम शिवम शिवा की। सहित गजानन देव दिवा की।।
आदि अनन्त अनामय अविचल। अज अनरूप अमल भव वत्सल।।
सद चित आनन्द रस करुनामय। प्रेम सुधा निधि प्रेम प्रभामय।।
धर सुरधरि शुभ सौम्य कला की। सहित गजानन देव दिवा की।।
अविनाशी शिव अन्तर्यामी। सत्य सनातन वसुधा स्वामी।।
रोग शोक अवगुण अघ हारी। रुद्र रूप प्रभु प्रलयकारी।।
गरल गले छवि मुण्ड माला की। सहित गजानन देव दिवा की।।
निर्गुण सगुण निरंजन रूपा। अति कमनीय काल भव कूपा।।
भोगी रागी मति वैरागी। भगत बनावत परम सुभागी।।
प्रिय बाघम्बर भस्म चिता की। सहित गजानन देव दिवा की।।
हर यम फांसी श्रुति गुण रासी। वाम उमा वासी कैलाशी।।
नाविक नौका भव तन तारी। कल्प वृक्ष जीवन रस धारी।।
सुर मुनि वन्दन आश कृपा की। सहित गजानन देव दिवा की।।
हम अति दीन मलीन पातकी। अविकारी तुम अगुण घात की।।
करु पुनीत निर्मल मन मोरा। बुद्धि विमल भांती निज छोरा।।
देहु शीश बल शक्ति जटा की। सहित गजानन देव दिवा की।।
आरति सत्यम शिवम शिवा की। सहित ज्योति अभियान प्रज्ञा की।।

अस्य शिव शक्ति कथा चरितस्य ब्रह्मा विष्णुः सम्वादः अमर कथा स्वरूपं शिव देवता शिवा शक्ति रूप ब्रह्म बीज प्रड्डति रूप नमः शिवाय तत्व मुक्ति मार्ग दाता सत शिवम शिवा प्रीत्यर्थं सकल मनोरथ सि(यर्थं पाठे विनियोगः।

पाठ पारायण विधि

शिवम शिवा कथा शिव शक्ति की महिमा का गुणगान है। सप्त खण्ड में होने वाले सात दिनों में कथा स्वरुप सुना जा सकता है। आदि देव–देवों के देव महादेव देव संस्कृति (विश्व संस्कृति) के विधाता हैं। ऐसे शिव परिवार से ही विश्व परिवार का विधान बनाना शिवत्व का पालन करना है। शिवम शिवा कथा श्रवण के लिए एक दिन पूर्व क्षौर कर्म से निवृत्त हो पावनता के साथ ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें। प्रातःकाल शौचादि नित्य क्रिया से निपटकर साधुता, उदारता, दयालुता, शान्ति, सन्तोष भावों में तन–मन को लगाकर वक्ता श्रोता को रहना चाहिए। कथा मण्डप देव मन्दिर, वन–बाग, सरिता तट तीर्थ या किसी पवित्र स्थल पर ही बनायें। यदि ऐसा सम्भव नहीं तो कथा हेतु भूमि पूजन प्रक्रिया अपनावें। कथा मण्डप केले खम्भे से युक्त चंदोवा से अलंकृत कर ध्वज पताका लगाकर दिव्य रुप दर्शायें। देव मंच को आकर्षक बनाकर उस पर भगवान शंकर–पार्वती–गणेशादि के चित्र लगाकर धूप दीप से सम्पन्न करें। कथावाचक का आसन एवं कथा श्रोता का आसन भी चौकी आदि पर अवस्थित करें। विघ्नहर गणेश पूजन के बाद शिव पार्वती पूजनोपरान्त पुस्तक पूजा भी करना अनिवार्य होता है। धूप दीप अक्षत पुष्प पूजन विधिवत कर लें।

तत्पश्चात भक्ति श्रद्धा भाव युक्त होकर प्रसन्न चित्त से पवित्र आसन पर सपरिवार कथा श्रवण के लिए शान्त एकाग्र मन से बैठे। विकृत तन–मन से कथा सुनने वाले एवं सुनाने वाले दोनों को फलदायी नहीं होता है। कथा समाप्ति तक पवित्र भाव अवश्य बनाये रखना चाहिए। कथा सकाम भाव सतनिष्ठा से सुनने पर अभीष्ट कामनाओं की सिद्धि होती तथा निष्काम भाव से सुनने पर मोक्ष पद पर प्राप्त होता है। दरिद्री, रोगी, पापी, भाग्यहीन, संतानहीन अथवा किसी हीनता से ग्रसित मानव को सौभाग्य प्राप्त होता है। कथा समाप्ति पर यज्ञादि क्रिया सम्पन्न करके गायत्री मंत्र या पंचाक्षर मंत्र का जप सदैव करने का अभ्यासी बनना चाहिए। कथा वक्ता को कुछ दान देकर कथा कर्म श्रवण शान्ति का लाभ लेना न भूलें। सभी दोषों की शान्ति के लिए शिव सहस्र नामावली का पाठ करते रहें। शिव शक्ति कथा सभी कथाओं का भाल है। कथा कर्मकाण्ड अधोलिखित है। सर्वप्रथम शिव परिवार की जय बोलें।

पवित्रीकरणम्– हुई है तो मानसिक करें।

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।
पुनातु पुण्डरीकाक्षः, पुनातु पुण्डरीकाक्षः पुनातु।।

गुरु वन्दना

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुरेव महेश्वरः।
गुरुरेव परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।
अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।

ईश वन्दना

त्वमादि देवः पुरुषः पुराणः, त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम, त्वया ततं विश्वमनन्तरूपम्।।
नमस्ते सते ते जगत्कारणाय, नमस्ते चिते सर्वलोकाश्रयाय।
नमोऽद्वैततत्वाय मुक्ति प्रदाय, नमो ब्रह्मणे व्यापिने शाश्वताय।।
एको हि रुद्रो न द्वितीताय तस्थु, र्य इमांल्लोकानीशत ईशनीभिः।
प्रत्यंग जनांस्तिष्ठति संचुकोचान्तकाले संसृज्य विश्वा भुवनानि गोपाः।।
यो देवानां प्रभवश्चो因वश्च, विश्वाधिपो रुद्रो महर्षिः।
हिरण्यगर्भं जनयामासपूर्वं, स नो बु(या शुभया संयुनक्तु।।

गणेश स्तुति

अभीप्सितार्थसि(यर्थं, पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्व विघ्नहरस्तस्मै, गणाधिपतये नमः।।

सरस्वती वन्दना

सरस्वत्यै नमो नित्यं, भद्र काल्यै नमो नमः।
वेद वेदान्त वेदांगः, विद्यास्थानेभ्य एव च।।

गायत्री वन्दना

आयातु वरदे देवि ! त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि।
गायत्रिच्छन्दसां मातः ब्रह्मयोने नमोऽस्तुते।।

गौरी वन्दना

सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बिके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।

व्यास वन्दना

व्यासाय विष्णुरूपाय, व्यास रूपाय विष्णवे।
नमो वै ब्रह्मनिधये, वशिष्ठाय नमो नमः।।

पुस्तक पूजन

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्।।

साष्टांग नमस्कार

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये, सहस्त्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्रकोटी युगधारिणे नमः।।

कथावाचक द्वारा तिलक कलावा स्वस्तिवाचन

स्वस्ति न ऽ इन्द्रो वृ(श्रवाः, स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्ताक्ष्योऽअरिष्टनेमिः सवस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।

संकल्प

विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्शिवशक्ति कथां पुराणस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य, अद्य श्री ब्रह्मणो द्वितीय परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे, वैवस्वतमन्वन्तरे, भूर्लोके जम्बूदीपे, भारतवर्षे भरत खण्डे आर्यावर्त्तैकदेशान्तर्गते .... क्षेत्रे .... मासानां मासोत्तमेमासे .... मासे .... पक्षे .... तिथौ .... वासरे .... गोत्रोत्पन्नः .... नामाऽहं सत्यप्रवृत्ति सम्वर्धनाय, दुष्प्रवृत्ति उन्मूलनाय लोककल्याणाय आत्मकल्याणाय वातावरण परिष्काराय, उज्ज्वलभविष्य कामनापूर्तये च प्रबल पुरुषार्थं करिष्ये, अस्मै प्रयोजनाय च शिव शक्ति कथायै कलशादि आवाहित देवताः पूजन पूर्वकम् श्रवण कर्म सम्पादनार्थं संकल्पं अहं करिष्ये।

न्यास

जोरि हाथ मैं शीश झुकाऊं। लाइ हृदय पुनि न बिलगाऊं।।
हृदयाय नमः।
दीजै भगति शकति सद बानी। दीन दयानिधि औढर दानी।।
न शिर से स्वाहा।
मैं निर्बल मन मूढ़ गंवारा। जानि दीन प्रभु करहु सहारा।।
मः शिखायै वषट्।
पुरवहु सकल मनोरथ मोरे। भले विनय पूजन सब थोरे।।
शि कवचाय हुम्
जेहि विधि जौन भाव उर जागे। तामे व्यापु चरन अनुरागे।।
वा नेत्रत्रयाय वौषट्
जोरि युगल करि विनय आरती। कीजइ जागृत शकति भारती।।

करन्यास

शब्द बिन्दु शशि दुइज समाना। नादाकृति सम दीपक जाना।।
अगुष्ठाभ्यां नमः।
शिवा कान्तिमय सुबरन भांती। भूषण भूषित रूप सुहाती।।
न तर्जनीभ्यां नमः
कमलासन घुंघरारे केशा। सेवहिं चतुर्भुजे सुर शेषा।।
मः मध्यमाभ्यां नमः

सुर मुनि देव विधाता ईश्वर। शुभकर्त्ता त्रिभुवन सर्वेश्वर।।
शि अनामिकाभ्यां नमः
जननी शिवा पिता शिव रूपा। कथहीं वेद शास्त्र सुर भूपा।।
वा कनिष्ठिकाभ्यां नमः
त्रिभुवन सकल तुम्हारी माया। नाथ कृपा करि तारहु काया।।
नमः शिवाय। नमः शिवायै।

ऋष्यादि न्यास

विष्णु ब्रह्मा नारद सूत शौनकादि)षिभ्यो नमः शिरसि।
शिव शिवा कथायाम् नमः अन्तरात्मः।
भावायां चिन्तन चरित्र लेखनिपत्र पंक्ति दोहा चौपाई नमः मुखे।
ब्रह्म बीजाय नमः कटिः। शिवायै प्रडुत्यै नमः सर्वांगे।

ध्यान

विधुं भालदेशे विभातं दधानं,
भुज `श सेव्यं पुरारिं महेशं।
शिवा संगृहीता(देहं प्रसन्नं,
भजेऽहं मनोऽभीष्टदं विश्वनाथम्।।
भवानीपतिं श्रीजगन्नाथनाथं,
गणेशं गृहीतं बलीवर्दमानम्।
सदा विघ्नविच्छेदहेतुं डुपालुं,
भजेऽहं मनोऽभीष्टदं विश्वनाथम्।।
मृडं योगमुद्राडुतं ध्याननिष्ठं,
धृतं नागयज्ञोपवीतं त्रिपुण्ड्रम्।
ददानं पदाम्भोजनामाय कामं,
भजेऽहं मनोऽभीष्टदं विश्वनाथम्।।
यो धत्ते भुवनानि सप्त गुणवान स्रष्टा रजः संश्रयः,
संहर्त्ता तमसान्वितो गुणवतीं मायामतीत्य स्थितः।
सत्यानन्दमनन्तबोधममलं ब्रह्मदिसंज्ञास्पदं,
नित्यं सत्त्व समन्वयादधिगतं पूर्णं शिवं धीमहि।।

शिव साधकों को सुझाव संकेत

विद्वान एवं श्रेष्ठ ब्राह्मणों को त्रिकाल सन्ध्या, स्नान, अग्नि होत्र, विधिवत शिवलिंग पूजन, दान, दया, ईश्वर प्रेम, आस्तिकता, सत्य भाषण, सन्तोष, किसी जीव की हिंसा न करना, लज्जा, श्रद्धा, योग अध्ययन,वर्णाश्रम का समुचित पालन, नारी धर्म की सुरक्षा करना, निरन्तर अध्यापन, व्याख्यान, ब्रह्मचर्य, उपदेश श्रवण, तपस्या, व्रत, अनुष्ठान, क्षमा शौच, शिखा धारण, यज्ञोपवीत धारण, गायत्री जप, रुद्राक्ष माला धारण, वर्जित मादक द्रव्यों का सेवन न करना में सामान्य धर्म का स्वरुप है। पर्वादि पर प्रायः चतुर्दशी को शिव पूजा का विशेष महत्व दिया गया है। इसमें शिवजी को नहला–धुला कर ब्रह्म कूर्च का पान करना बड़ा महत्वशाली है। ब्रह्मकूर्च का वर्णन शिवपुराण तथा अन्य ग्रंथों में इस प्रकार है।

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम्।
निर्दिष्टं पंचगव्यं च पवित्रं पापशोधनम्।।1।।
गोमूत्रं ङ्कुष्णवर्णायाः श्वेतायाश्चैव गोमयम्।
पयश्च ताम्रवर्णाया रक्ताया गृह्यते दधि।।2।।
कपिलाया घृतं ग्राह्यं सर्वं कापिलमेव वा।
मूत्रमेकपलं दधाद ुष्ठा(तु गोमयम्।।3।।
क्षीरं सप्तपलं दद्याद्दधि त्रिपलमुच्यते।
घृतमेकपलं दद्यात् पलमेकं कुशोदकम्।।4।।
गायत्र्याऽऽदाय गोमूत्रं गन्धद्वारेति गोमयम्।
आप्यायस्वेति च क्षीरं दधिक्राव्णस्तथा दधि।।5।।
तेजोऽसि शुक्रमित्याज्यं देवस्य त्वा कुशोदकम्।
पंचगव्यमृचापूतं स्थापयेदग्निसंनिधौ।।6।।
आपो हि ष्ठेति चालोक्य मा नस्तोकेति मंत्रयेत्।
सप्तावरास्तु ये दर्भा अच्छिन्नाग्राः शुकत्विषः।।7।।
एतैरु(त्य होतव्यं पंचगव्यं यथाविधि।
इरीवती इदं विष्णुर्मानस्तोकेति शंवती।।8।।
एताभिश्चैव होतव्यं हुत शेषं पिबेद् दिजः।
आलोक्य प्रणवेनैव निर्मथ्य प्रणवेन तु।।9।।
उद्धृत्य प्रणवेनैव पिबेच्च प्रणवेन तु।
यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति देहिनाम्।।10।।
ब्रह्मकूर्च दहेत्सर्वं यथैवाग्निरिवेन्धनम्।
पवित्रं त्रिषु लोकेषु देवताभिरधिष्ठितम्।।11।।

जगतवाणी और अर्थरूप

कोई भी ऐसा अर्थ नहीं, जो बिना शब्द का हो और कोई भी ऐसा शब्द नहीं जो बिना अर्थ का हो। समयानुसार सभी शब्द सम्पूर्ण अर्थों के बोधक होते है। प्रकृति का यह परिणाम शब्द भावना और अर्थ भावना भेद से दो प्रकार का है उसे परमात्मा शिव तथा पार्वती की प्राकृत मूर्ति कहते हैं। जो उनकी शब्दमयी विभूति है उसे विद्वान तीन प्रकार से बताते हैं।– स्थूला, सूक्ष्मा और परा। स्थूला वह है जो कानों को प्रत्यक्ष सुनाई देती है। जो केवल चिन्तन में आती है। वह सूक्ष्मा कही गई है और जो चिन्तन की भी सीमा से परे है उसे परा कहा गया है। वह शक्ति स्वरूपा है वही शिव तत्व के आश्रित रहने वाली पराशक्ति कही गई है। ज्ञान शक्ति के संयोग से वही इच्छा की उपोद्‌बलिका (उसे दृढ़ करने वाली) होती है। वह सम्पूर्ण शक्तियों की समिष्टरूपा है। वही शक्ति तत्व के नाम से विख्यात हो समस्त कार्य समूह की मूल प्रकृति मानी गई है उसी को कुण्डलिनी कहा गया है। वही विशुद्धाध्वपरा माया है। वह स्वरूपतः विभाग रहित होती हुई भी शरीर में 6 अध्वाओं के रूप में विस्तार को प्राप्त होती हैं उन 6 अध्वाओं में से तीन तो शब्द रूप हैं और तीन अर्थ रूप बताये गये हैं। सभी पुराणें को आत्मशुद्धि के अनुरूप सम्पूर्ण तत्वो के विभाग से लय और भोग के अधिकार प्राप्त होते हैं। वे सम्पूर्ण तत्व कलाओं द्वारा यथा योग्य प्राप्त है। परा प्रकृति के जो आदि में पांच प्रकार के परिणाम होते हैं वे ही निवृत्ति आदि कलायें हैं। मन्त्राध्वा, पदाध्वा और वर्णाध्वा ये तीन अध्वा शब्द से सम्बन्ध रखते हैं। तथा भुवनाध्वा, तत्त्वाध्वा और कलाध्वा ये तीन अर्थ से सम्बन्ध रखने वाले है। इन सब में भी परस्पर व्याप्त व्यापक भाव बताया जाता है। सम्पूर्ण मंत्र पदो से व्याप्त है क्योंकि वे वाक्य रूप है। सम्पूर्ण पद भी वर्णो से व्याप्त है क्योंकि विद्वान पुरुष वर्णो के समूह को ही पद कहते है। वे वर्ण भी भुवनों से व्याप्त है क्योंकि उन्हीं में उनकी उपलब्धि होती है। भुवन भी तत्वों के समूह द्वारा भीतर से व्याप्त हैं क्योंकि उनकी उत्पत्ति ही तत्वों से हुई है। उन कारण भूत तत्वों से ही उनका आंरभ हुआ है। अनेक भुवन उनके अन्दर से ही प्रकट हुए है। शक्ति से लेकर पृथ्वी तत्व पर्यन्त सम्पूर्ण तत्वों का प्रादुर्भाव शिव तत्व है। समस्त अन्तर बाह्य के तत्वों में एक मात्र शिव तत्व व्याप्त है यही शिव का परम धाम है। इसे पवित्र व शुद्ध रखने से ही शिव कृपा पाने का अवसर मिल पाता है।

शिव कथाओं का आध्यात्मिक रहस्य

असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माऽमृतं गमय।
आविरावीर्म रुद्र यत्ते दक्षिण मुखे तेन मां पाहि नित्यम्।।

ब्रह्मा, विष्णु और शिव इस त्रयी में से ब्रह्म विश्व स्रष्टा, विष्णु विश्वपोषक, और शिव विश्व संहारक हैं। शिव जी के संबंध में अनेक रूपक मिलते है पर किसी एक पुराण में यह श्लोक पुष्टि करता है कि–

चरितानि विचित्राणि गुह्यानि गहनानि च।
ब्रह्मादीनांच सर्वेषां दुर्विज्ञेयोऽस्ति शंकरः।।

अर्थात् ब्रह्मा आदि के चरित्र भी गुह्य तथा गहन है परन्तु शंकर के चरित्र तो अत्यन्त दुर्विज्ञेय है। शंकर के प्रत्येक नाम में कुछ न कुछ विशेषता है। शिव शब्द के बजाय शंकर शब्द का अर्थ भी ऐहिक और पारमार्थिक दोनो प्रकार के सुख का कर्त्त दाता है। शिव का अर्थ भी कल्याण रूप माना गया है। कुछ नामों के विशिष्ट गुण कर्म इस प्रकार से वर्णित् हैं–

दक्ष की कथा– दक्षहा (दक्ष का नाश करने वाले) की कथा में भी शिव के सम्बन्ध में गूढ़ रूपक है। दक्ष शब्द का अर्थ है निपुण। किसी विद्या अथवा कला में प्रवीण मनुष्य को दक्ष कहते है। दक्ष की जेष्ठ कन्या सती का विवाह मंगल रूप भगवान शिव से हुआ है। लोक मंगल के निमित्त सभी मांगलिक कार्यो में शिव सती का सम्मान होना निश्चित रहा। आगे चलकर जब मांगलिक कार्य यज्ञादि संकीर्ण विचार धारा से किये जाने लगे तो स्वयं सती ने उस प्रथा का विध्वसं किया और स्वयं दूसरा जन्म लेकर जप तप करके पिछले प्रारब्ध को शमन करके पुनः शिव से विवाह करके गृहस्थाश्रम का परिपालन करके मानव जीवन को श्रेष्ठता का मार्ग दरसाया। स्वार्थ परायणतादि आज भी यज्ञादि क्रियायों में है **तो उस यज्ञ की शक्ति नष्ट हो जाती लाभ नही मिलता है।**

मस्तक पर गंगा तथा चन्द्रमा का धारण– महादेव महायोगी कहलाते है। महायोगी को काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय और मत्सर इन षड विकारों को जलाकर उसका भस्म शरीर पर धारण करना पड़ता है। जहां इन षड विकारों को जीत कर लोक कल्याण करना पड़ता है वहां ऐसे विषैले तत्वों के दाह को शमन करने के लिए मन के पुत्र चन्द्रमा को ग्रहण करना पड़ता है। गंगा के बारे में यह भी कहा गया है कि यदि शिव जी जटायें धारण न करते तो पृथ्वी वह जाने का भय था। शशि गंगा का कार्य शिव के मानसिक वेदना का हरण करना है। इसी प्रकार खेचरी मुद्राओं के धारण करने से सर्प भूषण भी शोभायमान है।

शिवजी का शमशान वास– शिवजी का समस्त परिचय आध्यात्मपरक है। पवित्र होकर अपवित्र स्थान शमशान क्यों प्रिय है। शमशान का अर्थ है संसार का विशिष्ट स्थान। जहां पर नश्वर पदार्थों को भस्म कर दिया जाता है वहां की महायोगाग्नि में वह गुण होता है जो सांसारिक नीच वृत्तियों को भस्म कर देती है और वह तत्व प्राप्त होता हे जो अक्षय होता है। पुर्नजन्म की साधना वहीं से प्रारम्भ होती हैं ऐसे संहारकर्त्ता शिव को शमशान वास इसी लिए प्रिय होता है।

मदन दहन– लोक में ज्ञानी पुरुष की आत्मा को शिव और परलोके में परमात्मा को शिव माना गया है। काम विकार स्वप्नावस्था में भी ज्ञानी के लिंग शरीर को वेदना प्राप्त करके मनः क्षोभ उत्पन्न करता है ज्ञान ही शिव का रूप है ज्ञानी ज्ञान के बल पर भूमध्यस्थान में ध्यान लगाकर दैहिक योग शक्ति से काम विकार का नाश काता है। शिव का तीसरा नेत्र ही काम दहन माना गया है जो ज्ञान नेत्र से प्रसिद्ध है।

भस्मासुर की वध कथा– जो लोग दुराचारी, विश्वासघाती, परपीडक है और जिससे उत्पन्न हैं उसके भी विपरीत चलना पसन्द करते हैं तथा इसी प्रकार वे भी है जो मादक द्रव्य खाकर स्वयं ही अपने आप को भस्म कर लेते हैं वे भी भस्मासुर होते हैं। मानव शरीर को दुष्ट कृत्यों में लगाने वाले पुरुष अज्ञान रूप माया से आवृत होते हैं इसी प्रकार भस्मासुर भी माया मोह से आवृत होकर मृत्सु को प्राप्त हुआ।

त्रिपुरासुर की कथा– त्रिपुरा शब्द तीन पुर का सूचक है और शिव तीनों पुर के असुरता के नाशक हैं। शिव ही जीवन बोधक तत्व है। स्थूल, सूक्ष्म, कारण तीन शरीर रूपी पुर है जो आकाश में ही स्थित देखे जाते है। श्रवण, मनन, निदिध्यासन यह त्रिशूल है। सूर्य चन्द्र चक्षु और मन है यम नियमादि देवता गण है मद मत्सर अभिमान आदि असुर गण है जब ये असुर गण काम क्रोध लोभादि पर अपना अधिकार कर लेते है तो तीनों शरीर से दुराचार उत्पन्न होकर सभी को पीड़ा पहुंचाता है। इस प्रकार सदाचार हीन दुराचारी शरीर को शिव जी एक साथ संहार कर देते हैं। संहार के देवता होने के कारण शिव त्रिपुरारी कहा जाता है। इस लौकिक तीनों पुर के संरक्षक शिव जी है लेकिन लौकिक मानव शरीर जिसमें असुरता का प्रवाह हो जाय तो वह शिव का शत्रु भी है। यह शरीर पृथ्वी पर तो रहती है लेकिन समस्त क्रिया प्रणाली जो शारीरिक है उसका संचालन आकाश में ही होता है। जिससे बाह्य देवगण और दैहिक देवगण पीड़ित होते हैं तो शिव उनके संहारक बनते हैं।

शिव परिवार

दिव्य रूप शिव शक्ति तन, गजमुख छःमुखरूप।
सोह पूत संग भूत गण, ऐसो मेल अनूप।।
मोर मूस वृष शेर सर्प, सहित विषैला अंग।
तबहुं न सपनेउ व्यापु कलि, सकुल सोह सतसंग।।
शुचि प्रकृति उत्तम मनेउ, बसहिं जहां भव लोग।
फल कुसंग तहं न मिलइ, वरु मिलहीं शुभ योग।।

स्वयं शिव कल्याणकारी देवता सर्वनिर्मात्री गिरिजा कुमारी हैं और अपने ताण्डव नृत्य से शान्त होकर अनुपम सुन्दरता को प्राप्त होते हैं। ऐसा शिव परिवार ''शिवं शान्तं सुन्दरं'' की मान्यता से विभूषित है। सभी प्रकार का अमेल वहां समेल का कार्य करता है। सभी देवों में केवल ऐसा शिव परिवार ही पाया जाता है और यह परिवार मानव कल्याणकारी कार्यों में आदि से आज तक संलग्न पाया जाता है। ऐसा अन्य किसी देव का न परिवार है न कार्य है। इस सृष्टि प्रपंच को लेकर शिव जी ने अपने को ब्रह्मा विष्णु महेश के रूप में दरसाया है। भगवान सदाशिव की जगन्निर्माण कत्री इच्छा शक्ति का दार्शनिक नाम महामाया और योग माया आदि है और पौराणिक नाम श्री दुर्गा औ श्री पार्वती है। भगवान शिव और भगवती शिवा सम्पूर्ण चराचर विश्व के आदि पिता माता है। सम्पूर्ण सृष्टि उनका सनातन परिवार है। जो विश्व के लिए उपमा है। शिव धर्म रूप है और पार्वती शक्ति रूप है शिव सत्य है तो शिवा शक्ति रूप है। शिव से शक्ति या शक्ति से शिव पर विवेचना करना, भेद प्रगट करना भूल है।

भगवान शिव का स्वरूप विराट पुरुष का चित्र है। शिव सूर्य रूप होने के कारण अनलात्मक, मस्तक पर चन्द्र निशान सोमात्मक हैं। अग्नि सोमात्मक सृष्टि तत्व है। शिव जटा भी प्रत्यक्ष अग्नि ज्वाला है। गंगा प्राण धारा है यह भी सृष्टि तत्व से परिपूर्ण है। शरीर पर लिपटे नाग कर्म बन्ध है। इसलिए सत्कर्म शिव आभूषण हैं। कालचक्र शिव का यज्ञोपवीत है। जगत शिक्षा हेतु भगवान शिव सगुण व्यवहार करते हैं। इसलिए शिव का चरितामृत प्रत्येंक राज्य शासक जाति शासक और कुटुम्ब नेता के लिए आदर्श और अनुकरणीय है। लौकिक विष व्यथा पान करने के लिए शिव ने राज नेताओं को संकेत किया है। षडानन में प्रकृति का अंश प्रधान है तो गणपति में शिव अशं प्रधान है। अन्तःकरण प्रकृति का शुद्धतम रूप है प्रकृति अन्तःकरण चिदाभास और ब्रह्म की प्रति कृति भगवती पार्वती भगवान श्री गणेश भगवान षडानन और भगवान

शिव हैं जिनकी अन्तर्वहिर्लीला की प्रवृद्धलता यह सम्पूर्ण जड़ चेतन जगत है और यह एक अतीव सत्य शिव परिवार है। जिनकी गोद बाल गणेश से भरपूर है ऐसी सुस्मिता भगवती शिवा से विभूषित अर्धांग वाले श्री सदा शिव अपने प्रेम संकेतो से कैलास पर षडानन को शास्त्रस्त्र शिक्षा देते हुए अपने परम प्रिय विश्व परिवार की सदा रक्षा करें।

भगवान भोले नाथ का जैसा अदभुत परिवार है तो ऐसा शायद किसी का होगा। यदि शिव पंचमुख के हैं तो पुत्र 6 मुख और गजमुखी है। संग में साक्षात अन्नपूर्ण भवानी है तो स्वयं भस्मांगधारी श्मशान बिहारी हैं। बस पूंछिए ना नंग धड़ग रहने वाले शिव के पास जब बूढ़ा बैल है तो जगत जननी शक्ति स्वरूपा माता पार्वती शेर की सवारी करती हैं। बड़े मुश्किल से उमा जननी गृहस्थी का दायित्व निभा पाती हैं। जब तक शान्ति रही तब तक रही नही तो भोले बाबा समाधि ले लेते हैं। ऐसे में पार्वती को शिव भार लेकर भी सृष्टि की भी व्यवस्था करना पड़ता है और गृह अनमेलता को समेलता में ढकेलना पड़ता है।

1– पति पुत्र का कार्य व्यवहार वेश भाव कार्य विचार सब अनमेल है। जिसकी सवारी बूढ़ा बैल, खाने के लिए जहर, रहने के लिए सूनी दिशाएं, खेलने के लिए शमशान, आभूषण के लिए सांप, लोक व्यवहार में भोलापन ऐसे देव परिवार को संभालना आसान कार्य नही। जहां बर्फीले पहाड़ पर मिलने का कोई सामान नही। किसी न किसी कमी की शिकायत सदा लगी ही रहती है ऐसे में पारिवारिक व्यवस्था चला पाना साधारण नारी के वश की बात नहीं है। अर्थ संकट से ग्रसित परिवार की व्यवस्था यदि अनुकरणीय है तो प्रशंसा जग जननी माता उमा की है। शिव शरण में जीवन बिताने वाले कहते है कि उन नित्य नव भाव, नवरूप, नवरस, परमपुराण, अनाद्यनन्त, भगवती भगवान श्री नारायणाद्यनन्त नाम श्री उमा महेश्वर के चरणों में प्रति पद प्रतिक्षण प्रणाम है।

2– अगर गणेश का वाहन चूहा है ताो कार्तिकेय का वाहन मोर है यह भी दोनों पुत्रों में अनुपम वाहन की भिन्नता विषमता है। किसी का वाहन किसी से भी सुरक्षित नही है फिर भी सृष्टि नीति लोक प्रिय दिखाई पड़ती है।

शिव लिंग और काशी

शास्त्र पुराण का कथन है कि सारी इन्द्रियों का भार मन पर है, मन से अहंकार पर है, अहंकार से महतत्व पर है, महतत्व से प्रकृति पर है, प्रकृति से पुरुष पर है, पुरुष से भगवान प्राण श्रेष्ठ है, प्राण का ही यह सारा जगत है, प्राण से व्योम पर तर है, ज्योति स्वरूप शिव व्योम से भी परे है शिव (ईश्वर) से कुछ भी पर नही है इसलिए शिव परात्पर है। वह परात्पर शिव पंच मुख धारी है। जब साधक की चित्तवृत्ति शुद्धि शान्त और निःस्वार्थ होकर अपने अपने आभ्यान्तर ह्रदय में शिव को स्थित करता है तो वहां प्रज्ञा का बीज होता है। उसी अवस्था को काशी प्राप्ति कहते हैं। इसी को काशी का आनन्द वन भी कहते हैं। गौरी मुख का तात्पर्य है कि काशी प्राप्ति की अवस्था में साधक दैवी ज्योति और बोध शक्ति के सन्मुख पहुंच जाता है वहां शिव जी तारक मंत्र प्रदान करते हैं। तारक मंत्र का अर्थ कि शिवजी साधक के ह्रदय में पार्वती के साथ निवास करते हैं। ह्रदय रूप काशी में अकारण शरीर) स्थित होकर प्रणव कर्णिका घाट पर आनन्द लेते हैं। शिव लिंग रूप में पिता और प्रकृति योनि रूप में माता है। लिंग परमानन्द का कारण है जिससे क्रमशः ज्योति और प्रणव की उत्पत्ति हुई है। अन्तः करण के काशी को शिव ने मुक्ति का स्थान माना है। अनादि चैतन्य परम पुरुष परमात्मा की शिव संज्ञा सृष्टि उन्मुख होने पर अनादि लिंग है और उस परम आधेय को आधार देने वाली अनादि प्रकृति का नाम योनि है। सृष्टि के समय ही अर्धांग से प्रकृति को निकाल कर उसी से सृष्टि की उत्पत्ति करता है। शिव का लिंग योनिभाव और अर्धनारीश्वर भाव एक ही वस्तु है। सृष्टि के बीज को देने वाले परम लिंग रूप श्री शिव जब अपनी प्रकृति रूपा नारी (योनि) से आधार आधेय की भांति संयुक्त होते है तभी सृष्टि की उत्पत्ति होती है अनादि पुरुष प्रकृति का सम्बन्ध परम सृष्टि यज्ञ है परम यज्ञ है। पितृ ऋण से उद्धार पाना है। इसे यथार्थ धर्मार्थ व्यवहार न मानकर कामोपयोग के निमित्त व्यवहार करना, अश्लीलता का भाव रखना पाप जनक है।

काशी शिव पार्वती का गृहस्थाश्रम वाला पावन घर है जो सभी के शरीर में स्थित है अगर किसी ने अपने अन्तःकरण को शिव शिवा के अनुरूप बनाया है तो उसे मुक्ति सहज मिल जाती है शिवलिंग और काशी का इस प्रकार घना सम्बन्ध है। इस आध्यात्मिक काशी में शिव जी प्रवेश लेकर उसका अहंकार दग्ध कर देते है उसे निर्विकार शुद्ध शान्त बना देते हैं। उसके मस्तक पर गंगा की पावनता की वर्षा करते है वह स्वयं तीनों तापों को अपने साधना रूपी त्रिशूल से शमन कर लेता है। शिव शिवा ही अन्तस्थ काशी क्षेत्र प्रवास कर पाते है अन्य देव को ऐसी क्षमता नहीं प्राप्त है। इसलिए काशी के शिवलिंग की

महानता अपरम्पार है। स्थूलरूप से शिव शिवा काशी धरती पर भी जीवन आश्रम का निर्वहन करके लोक लोगों को जीवन जीने की कला का ज्ञान विज्ञान प्रदान किया है। आज के विज्ञान का सिद्धान्त है कि इलेक्ट्रान जो पुरुष के समान है उनका प्रोट्रान जो प्रकृति के समान आधेय है के साथ संघर्ष होने से जो स्पन्दन उत्पन्न होता है। उसी के द्वारा अणुओं की उत्पत्ति होती है और उन्हीं अणुओं से आकार बनते है। शिव शिवा सृष्टि के इलेक्ट्रान और प्रोट्रान है। ऐसे जीव के पांच मुख है। प्रथम ईशान का अर्थ है स्वामी, अघोर का अर्थ है कि निन्दित कर्म करने वाले भी श्रीशिव की कृपा से निन्दित कर्म को शुद्ध बना देते है। तत्पुरुष का अर्थ है कि अपने आत्मा में स्थित लाभ करना। वाम देव का अर्थ है कि अन्तर के विकारों को शमन करने की शक्ति सामर्थ्य देना। सद्योजात का अर्थ है कि बालक के समान परम स्वच्छ शुद्ध और निर्विकार बना देना। त्र्यम्बक का अर्थ है कि ब्रह्माण्ड के त्रिदेव ब्रह्मा विष्णु महेश तीनों के अम्ब अर्थात कारण। जीवात्मा की तीव्र भक्ति (सेवा) और मिलन के प्रगाढ़ और अनन्य अनुराग तथा विशुद्ध निर्हैतुक प्रेम से शिव प्राप्ति होती है और वह अनुराग मिलन होने पर श्रीशिव के चरण कमल के स्पर्श की परम शान्ति में पूर्णता को प्राप्त होता है। शिव कल्याण कारी शरीर है इसलिए शरीर को कल्याणकारी बना पाना शिव भक्ति का प्रतीक हैं। भक्ति में काशी शिव लिंग की उपासना हो जाती है।

शिव शक्ति ज्ञान महिमा

ब्रह्म ही शिव है। रुद्र ग्यारह हैं शिव तत्व के दो रूप है। शिव और शक्ति। शिव अव्यक्त, अदृश्य, सर्वगतएवं अचल आत्मा है। रुद्र दैहिक अगं है। शक्ति समस्त ब्रह्माण्ड को धारण करने वाली सर्ग स्थिति संहार का रूप है। भगवान शंकर का प्रणव मनोकामना सिद्ध प्रद मंत्र हैं। इसे शिव जी ने स्वयं उत्पन्न किया है इसी स्वर का प्रवेश सभी जीवों में जीवरूप से देखा पाया जाता है। शिव शक्ति ही क्रियान्वित होकर शिव को विविध रूप में प्रगट करती है। जो अपनी ही शक्ति से खेलते है। एक ही देव विविध रूप धारण कर लेते हैं यही सृष्टि का विकास है। इसमें शिव शक्ति दोनों की लीला चलती है शक्ति क्रियान्वित होकर शक्ति मान के साथ प्रत्यक्ष प्रकट होकर विलास करती है। यही परात्पर परमेश्वर शिव, महाशिव, महाविष्णु महाशक्ति, गोकुल विहारी श्रीकृष्ण, साकेताधिपति श्रीराम आदि नाम रूपों से प्रसिद्ध है। शिव और शक्ति एक दूसरे से वैसे अभिन्न है जैसे सूर्य और उस का प्रकाश, दूध और उसकी सफेदी। शिव महिमा प्रकट करने में सब से अधिक प्रणव का महत्व है क्योकि शिव का वचन है कि ओंकार मुख से उत्पन्न होने के कारण मेरे स्वरूप का बोधक, वाचक और आत्मा है। मेरे उत्तर के मुख से अकार पश्चिम के मुख से उकार दक्षिण के मुख से प्रकार पूर्व के मुख से विन्दु और मध्य के मुख से नाद उत्पन्न हुआ है। इन पांचो मुखों से निर्गत हुए इन सबसे ऊँ एक अक्षर बना है। सम्पूर्ण नाम रूपात्मक, जगत, स्त्री पुरुषादि भूत समुदाय एवं चारों वेद सभी मंत्र से व्याप्त है और यह शिवशक्ति का बोधक है। प्रकृति से उत्पन्न हुए संसार सागर के लिए यह प्रणव नौका रूप है इसी से सर्व कर्म क्षय होकर दिव्य ज्ञान मिलता, शुद्ध नवीन जीवन प्राप्त होता है, इस कारण यह प्रणव कहा गया है। प्रणव ही तारक मंत्र है। शरीर में प्रणव का स्थान मूलाधार, मणिपूर, हृदय, विशुद्ध चक्र, आज्ञाचक्र, शक्ति और शान्ति ये कला क्रम से प्रणव के स्थान है। प्रणव सकल मंत्रों का मूल होने से सर्व सिद्धि प्रद है। शिव के स्थान पर शिव लिंग की महानता देव भूमि पर है। लिंग का अर्थ प्रतीक है शिव लिंग पुरुष का प्रतीक है और शक्ति प्रकृति का प्रतीक है। पुरुष और प्रकृति का संयोग ही सृष्टि का स्वरूप है इसी प्रकार आत्मा और शरीर का रूप होना शिव को काशी पहुंचाना है। शिव शक्ति ही सभी के अन्तःकरण में स्थित है हम वैसा आचरण करना चाहिए जो शिव को प्रिय है। शिव नामामृत का नित्य पान करते रहें –

शिवनामतरीं प्राप्य संसाराब्धिं तरन्ति ते।
संसारमूलपापनि तानि नश्यन्त्यसंशयम्।।
संार मूलभूतानां पातकानां महामुने।
शिवनाम कुठारेण विनाशो जायते ध्रुवम।।
शिवनामामृतं पेयं पापदावानलार्दितैः।
पापदावाग्नितप्तानां शान्तिस्तेन बिना न हि।।
शिवेति नामपीयूषवर्षाधारापरिप्लुप्ताः।
संसारदवमध्येऽपि न शोचन्ति कदाचन्।।
शिवनाम्नि महद्भक्तिर्जाता येषां महात्मनाम्।
तद्विधानां तु सहसा मुक्तिर्भवति सर्वथा।।

जो शिव नाम रूपी नौका पर आरूढ़ हो संसार रूपी समुद्र को पार करते हैं उनके जन्म मरणरूप संसार के मूल भूत वे सारे पाप निश्चय ही नष्ट हो जाते हैं। महामुने! संसार के मूलभूत पातक रूपी पादपों का शिव नाम रूपी कुठार से निश्वय ही नाश हो जाता है। जो पाप रूपी दावानल से पीड़ित है उन्हें शिव नाम रूपी अमृत का पान करना चाहिए। पापों के दावानल से दग्ध होने वाले लोगों को उस शिव नामामृत के बिना शाति नही मिल सकती। जो शिव नाम रूपी सुधा की वृष्टि जनित धारा में गोते लगा रहे हैं वे संसार रूपी दावानल के बीच में खड़े होने पर भी कदापि शोक के भागी नहीं होते। जिन महात्माओं के मन में शिव नाम के प्रति बड़ी भारी भक्ति है ऐसे लोगों सहसा और सर्वथा मुक्ति होती है।

शिव के शु(, बु(, मुक्त, सर्वमय, सर्वातीत का स्वरूप

शिव चेतन अचेतन से परे है। प्रणव शिव का वाचक नाम है। शिव रूद्र आदि उत्कृट नाम हैं। प्रणव वाच्य शंभु के चिन्तन और जप से सिद्धि प्राप्त होती है। वही परासिद्धि है। इसी से शिव को प्रणव रूप कहते है। अकार से ऋग्वेद उकार से यजुर्वेद, मकार से सामवेद और नाद से अथर्ववेद श्रुति है। अकार महाबीज है वह रजोगुण सृष्टि कर्त्ता ब्रह्मा है। उकार प्रकृति रूपा योनि है यह सत्वगुण युक्त पालन कर्त्ता श्री हरि है। मकार जीवात्मा एवं सृष्टि कर्त्ता बीज है यह तमोगुण संहारकर्त्ता रुद्र हैं। नाद परम पुरुष परमेश्वर है वह निर्गुण एवं निष्क्रिय शिव है। इस प्रकार शिव तीन मात्रा युक्त तीन रूप से जगत का

प्रतिपादन करके अर्धमात्रा नाद के द्वारा शिव स्वरूप का बोध कराता है। शिव को तो न आणवबन्धन प्राप्त है न कर्म का और न माया का ही। प्राकृत, बौद्ध; अहंकार, मन, चित्त, इन्द्रिय, तन्मात्रा और पंचभूत सम्बन्धी भी कोई बन्धन उन्हें नहीं छू सका है। अमित तेजस्वी शंभु को न काल न कला, न विद्या, न नियति, न राग और न द्वेष रूप ही बन्धन प्राप्त है। उनमें न तो कर्म है न उन कर्मों का परिपाक है, और न उनके फलस्वरूप सुख और दुःख हैं। न उनका वासनाओं से सम्बन्ध है, न कर्मों के संस्कारों से। भूत भविष्य और वर्तमान भोगों तथा उनके संस्कारों से भी उनका सम्पर्क नहीं है। न उनका कोई कारण है न कर्त्ता। न आदि है न अन्त और न ही मध्य न कर्त्तव्य, अकर्त्तव्य ह। उनका न कोई बन्धु न अबन्धु न नियन्ता न प्रेरक, न पति न गुरु न भ्राता ही है उनके समान कोई नहीं है। न जन्म होता न मरण। न वाछिंत न अवाछिंत, न विधि न बन्धन मुक्ति, न निषेध, न दोष। परन्तु कल्याणकारी गुण उनमें सदा रहते हैं और वह स्वयं सदा रहते है। शिव अपनी शक्तियों द्वारा सम्पूर्ण जगत सम्पूर्ण काल में व्याप्त होने से स्थाणु कहे जाते है सम्पूर्ण चराचर जगत शिव में अधिष्ठित है इसलिए शिव सर्वरूप पाये जाते हैं फिर उन्हें मोह नही सता पाता है। रुद्र सर्व रूप है वे सत्स्वरूप, परम, महान, पुरुष, हिरण्यबाहु, हिरण्यपति ईश्वर, अम्बिकापति ईशान, पिनाकपाणि तथा वृष वाहन है। एक मात्र रुद्र ही परब्रह्म परमात्मा है। वे ही कृष्णपिंगल वर्ण वाले पुरुष है वे ही हृदय कमल के मध्य भाग में केश के अग्र भाग की भांति सूक्ष्मरूप से चिन्तन करने योग्य है। उनके केश सुनहरे रंग के हैं। नेत्र कमल के समान सुन्दर हैं अगं क्रान्ति अरुण और ताम्रवर्ण के है। वे सुवर्ण नीलकण्ठ मय नीलकण्ठ देव सदा विचरते रहते है। वे पुरुष विशेष परमेश्वर भगवान शिव काल के भी काल है। चेतन ओर अचेतन से परे है। इस प्रपंच से भी परातपर है। शिव में ऐसे ज्ञान और ऐश्वर्य देखे गये है जिनसे बढ़कर ज्ञान और ऐश्वर्य नहीं हैं। मनीषी पुरुषों ने भगवान शिव को लोक में सबसे अधिक ऐश्वर्यशाली पद पर प्रतिष्ठित बताया है प्रत्येक कल्प में उत्पन्न होकर एक सीमित काल तक रहने वाले ब्रह्माओं को आदि काल तक विस्तारपूर्वक शास्त्र का उपदेश देने वाले भगवान शिव ही हैं। एक सीमित काल तक रहने वाले गुरुओं के भी वे गुरु है। वे सर्वेश्वर सदा सभी के गुरु हैं। काल की सीमा उन्हें छू नहीं सकती। उनकी शुद्ध स्वाभाविक शक्ति सबसे बढ़कर है। उन्हें अनुपम ज्ञान और नित्य अक्षय शरीर प्राप्त है। उनके ऐश्वर्य की कहीं तुलना नहीं है उनका सुख अक्षय और बल अनन्त है, उन्हें असीम तेज, प्रभाव, पराक्रम, क्षमा, करुणा प्राप्त है। वे नित्य परिपूर्ण हैं। वे नित्य सृष्टि आदि से अपने लिए कोई प्रयोजन नहीं है। दूसरों पर अनुग्रह ही उनके समस्त कर्मो का फल है। कल्याणकारी होने से ही शिव है।

शिव तत्व ही जड़ चेतन

यह सृष्टि शिव का रूप जड़ चेतन का स्वरूप निराकार और साकार का प्रत्यक्ष प्रमाण है। जड़ चेतन का मूल प्रलय काल है। प्रलय जड़ रूप और प्रलय की संचालित गति चेतन रूप है। जड़ तमस चेतन प्रकाश है। अज्ञान जड़ चेतन है। पुरुष जड़ नारी चेतन है। सोना, जगना, जन्म, मृत्यु, लोक, परलोक, स्वर्ग, नरक, उत्तमता, नीचता, निराकार, साकार आदि कृत्य स्वरूप जड़ चेतन के रूप है। जीव चेतन शरीर जड़ है। शिव तत्व चेतन शक्ति का श्रेष्ठ तत्व है। जड़ तत्व का श्रेष्ठ संरक्षक भी है।

किसी आकार में पायी जाने वाली वस्तु जड़ है और किसी आकार में पाया गया जीव चेतन है। जड़ चेतन दो स्वतंत्र तो हैं पर दोनों एक दूसरे के वशीभूत है और भिन्न नहीं किये जा सकते हैं। जड़ का रूप अचेतन और चेतन का रूप चलायमान होना है। पर गाड़ी मोटर कोई वाहन चेतन नहीं यहां तक कि बात चीत करता हुआ कैसेट मोबाइल भी चेतन में नहीं, जड़ वर्ग में मान्य है। जो स्वयं गतिमान हो चेतन वह है। जड़ पदार्थ प्रकृतिमय निराकार होता है। जब उसका विस्तार होना होता है तो उसकी प्रकृति उसे नया रूप देकर चेतन से उसका सम्बन्ध जोड़ देती है तो वह साकार बन कर कर्मवत चेतना एवं ज्ञान अनुरूप क्रियाशील दिखाई देता है और अपने अनुसार दूसरा आकार भी गढ़ने में सक्षम दिखाई देता है। यही जड़ चेतन की सृष्टि का स्वरूप है। जड़ निराकार माना जाता है निराकार के उपासक जड़ की सेवा करते हैं और साकार अर्थात् चेतन का उपहास भी करते हैं। अकार शब्द जड़ सूचक है साकार शब्द चेतन सूचक है। निराकार शून्य सूचक नही और साकार जड़ सूचक नहीं। जब साकार जड़ सूचक नहीं तो निराकार चेतन सूचक नहीं। साकार रूप जीव सूचक है तो निराकार अरूप जीव का प्रमाण है। निराकार शून्य सूचक नही आदि का सूचक नहीं, स्वयं वस्तु का सूचक है जड़ का सूचक है साकार की जड़ ही निराकार है लेकिन चेतन नही जड़ है।

जड़ स्वतः चेतन नही, चेतन का रूप जड़ से बनता है लेकिन रचना के लिए कुछ लौकिक क्रिया प्रणाली अपनाने पड़ते हैं। भक्ति समर्पण चेतन की शरीर है। अनुभव ज्ञान चेतन के प्रमाण है भाव सम्वेदना चेतना के जीव या प्राण है। कर्म और पुरुषार्थ चेतन शक्ति के प्रेरक है श्रद्धा विश्वास चेतन के ईंधन हैं। जड़ चेतन ही सृष्टि के रूप नहीं प्रलय भी जड़ चेतन को साकार बनाने के मूल स्रोत हैं। उसी जड़ चेतन को निर्गुण सगुण निराकार साकार भी माना जाना जाता है। शून्य शब्द भी निराकार है लेकिन न जड़ है न चेतन।

केवल साकार है, यह शून्य अगर चेतना का स्वरूप हो तो जीव है और यदि निर्जीव है जड़ है अचेतन है कर्महीन है केवल गोलरूप है तो न निराकार है न साकार है। यदपि चेतन सबमें हैं पर जो जड़ अनुसार नही, चेतन अनुसार कर्म कर सकता है वही प्राणवान चेतन है अगर निरर्थक है तो अचेतन ही माना जा सकता है। यदपि निर्गुण सगुण, निराकार साकार जड़ चेतन पर अपना मत प्रकट करना विवेचना करना कोई विवेकशीलता नही एक प्रकार की भूल है लेकिन जन्म जड़ से है इसलिए इस पर कुछ विचार करना ही चाहिए। अपनी परिचय प्राप्त करना चेतन का दायित्व भी है। उसी स्तर पर प्राप्त अनुभव बताना भी शिव चेतना है। शरीर का मूल जड़ है लेकिन जीवन का मूल स्रोत चेतन है। इसलिए चेतन सम्बन्धी विचार चार व्यवहार स्वाध्याय करने ही पड़ते हैं जड़ का वाहन चेतन है प्रलय का रूप जड़ है और क्रिया चेतन है जड़ परिवर्तनशील होता तो चेतन ज्योतिमान चलायमान होता है। गति दोनों में है। साकार की गति भावी पीढ़ी का निर्माता है तो जड़ की गति किसी रूप का निर्माता है। जैसे एक शरीर को सुप्त व जाग्रत दोनों अवस्था में सुख दुख का अनुभव जन्य ज्ञान प्राप्त होता और वह दूसरों से व्यक्त किया जा सकता है पर जड़ में ऐसा नहीं। चेतन में ऐसी विशिष्ट शक्ति है किवह किसी पाश में बंधता नहीं है ऐसी दिव्य दृष्टि होती कि भविष्य भी देखता है यह सामर्थ्य जड़ में नहीं। चेतन स्थूल सूक्ष्म सभी रूपों को धारण कर लेता है पर जड़ में ऐसा गुण नहीं है। शरीर जड़ है तो मन चेतन है। यदि मन जड़ है तो आतम चेतन है तो दैहिक इन्द्रियां क्रियाशील होने के कारण चेतन तंत्र का कार्य करती है। जप तप अध्यात्म है तो कर्म विज्ञान है अध्यात्म धर्म तंत्र है तो विज्ञान राजतंत्र है। भावना चेतना से बनती हैं लेकिन उसे क्रियाशील करने में जड़ शरीर ही कारगर है। श्रद्धा विश्वास से आस्था रखने वालों को अध्यात्म फलित होता है तो कर्म योगी और पुरुषार्थी के लिए विज्ञान फल प्रद है। प्रत्यक्ष सृष्टि का स्वरूप जड़ चेतन है तो अदृश्य जगत का स्वरूप ही निराकार साकार है। जड़ का परिमार्जन अध्यात्म से तो चेतन का परिशोधन विज्ञान से है। जप तप व्रत उपवास जड़ चेतन दोनों के परिशोधक है। जड़ रूपी शरीर एक यंत्र है तो जीव रूपी चेतन ब्रह्म शक्ति है। यंत्र होने के कारण शरीर को आध्यात्मिक विधानों से पावन किया जाता है। जड़ किसी रूप या शरीर का प्रतीक है चेतन जीव और जीवन का प्रतीक है। साकार निराकार में भिन्नता है लेकिन जड़ चेतन में भिन्नता नहीं है। जड़ चेतन एक दूसरे के रूप है। एक दूसरे के पूरक और सृष्टि रूप है।